

RNI नं. : 7387/63

मुद्रण तिथि : 15-16 अप्रैल 2025

डाक प्रेषण तिथि : 15-17 अप्रैल 2025

ISSN : 2456-611X

वर्ष : 63

अंक : 01

मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 76

डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26

Office Posted at R.M.S., Bikaner



राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणापासक

धार्मिक पाक्षिक

नमो अरिहंताणं • नमो सिद्धाणं • नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं • नमो लोए सव्वसाहूणं



एसो पंचनमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।



”

तुम कितना चलोगे,
इसका निर्णायक
तुम्हारा
अगला कदम
होगा।



”

सिद्धांतों के लिए
लड़ना छोड़ें,
जीना सीखें।



”

परश्रित जीवन
में व्यक्ति को
कहीं न कहीं
दुःख
झेलना ही पड़ता है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

॥ अगमवाणी ॥

जो परिभवड मणूसो आयरियं, जत्थ सिक्खए विज्जं।
तस्स गहिया वि विज्जा दुक्खेण वि, अप्फला होड।।

- चन्द्रकवेद्यक (4)

जो मनुष्य, जिससे विद्या प्राप्त करता है, उस आचार्य का तिरस्कार करता है तो उसके द्वारा कठिनाई पूर्वक ग्रहण की गई वह विद्या निरर्थक हो जाती है।
If one insults the guru from whom one has learnt his learning, his hard-learned learning, does not fructify.

सख्खत्थ लभेज्ज नरो विस्संभं सत्तयं च कित्तिं च।
जो गुरुजणोवडट्ठं विज्जं विणएण गेण्हेज्ज।।

- चन्द्रकवेद्यक (6)

जो मनुष्य गुरुजनों द्वारा उपदिष्ट विद्या को विनयपूर्वक ग्रहण करता है, वह शिष्य सर्वत्र विश्वास, प्रामाणिकता और कीर्ति को प्राप्त करता है।
The disciple, who humbly learns the learning given by his guru, enjoys trust and faith everywhere and gains great glory.

विज्जा वि होड विलिया गहिया पुरिसेणऽभागधेज्जेण।
सुकुलकुलवालिया विव असरिसपुरिसं पडं पत्ता।।

- चन्द्रकवेद्यक (10)

अयोग्य पुरुष द्वारा ग्रहित विद्या ऐसे लज्जित होती है, मानो उत्तम कुल की बालिका ने असमान (हीन) पुरुष को पति के रूप में प्राप्त किया हो।
The learning gained by the undeserving is shamed as if a girl of noble birth is married to a lowly person of ignoble character.

विणओ मोक्खद्वारं विणयं हू कयाड छड्डेज्जा।
अप्पसुओ वि हु पुरिसो विणएण खवेड कम्माडं।।

- चन्द्रकवेद्यक (54)

विनय मोक्ष का द्वार है। इसलिए कभी भी विनय को नहीं छोड़ें। निश्चय ही शास्त्रों को थोड़ा जानने वाला पुरुष भी विनय से कर्मों का क्षय करता है।

Humility is the door to liberation. Therefore, do not forsake it. Even a less learned person destroys his karmic encumbrance through humble conduct.

साभार- प्राकृत मुक्तावली





राम चमकते भानु समान

अनुक्रमिका

07 विवेक

- आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.

12 शील की साधना

- आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

15 विवेक जागरण

- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

धर्मदेशना

33 धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

- संकलित

39 महावीर : चेतना का विराट स्वर

- डॉ. इंद्रा जैन

40 गोचरी विवेक

- पदमचंद गांधी

44 गुरु की दिव्यवाणी

- डॉ. नवल सिंह जैन

46 चमड़े का व्यापार

- अभिषेक भंडारी, पारुल भंडारी

48 निर्दोष आहार-पानी

- डॉ. आभाकिरण गांधी

50 गोचरी-विवेक के तथ्य

- अर्चना काँठेड़

51 The Human Touch

- Urja Mehta

संस्कार सौरभ

20 आध्यात्मिक आरोग्यम्

- संकलित

29 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

- कंचन कांकरिया

31 श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

- सरिता बैंगानी

ज्ञान सार

11 आसक्ति

- राखी अलिझाड़

19 जीवन संवार रहे

- मेघना तातेड़

52 युग-युग जीओ

- कमला बाई सांड

53 त्रिशला नंदन वीर की

- डॉ. दिलीप धींग

भक्ति रस



56 गुरुचरण विहार समाचार

- महेश नाहटा

विविध

चिंतन पराग

विश्व का तू सार है

— परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.

श्रावक! तू पूरे विश्व में विरल है, तू विशेष है। दुनिया में तुम्हारे सानी के तुम्हीं हो। जैसे दूध में शक्कर डालने से दूध मीठा व स्वादिष्ट बन जाता है, आटे में नमक डालने से रोटी स्वादिष्ट हो जाती है, वैसे ही पूरा विश्व तुमसे स्वादिष्ट है। विश्व में कोई स्वाद है तो तू ही है। यह कथन मात्र प्रशंसात्मक नहीं है, यथार्थ है। आगम उसका प्रमाण है। जंबूद्वीप में लवण समुद्र का पानी क्यों नहीं भरता? यद्यपि देवगण उसमें उठती उताल तरंगों को दबाते रहते हैं, फिर भी उनसे वे तरंगें रुक नहीं पातीं। जंबूद्वीप में रहने वाले त्यागी-तपस्वी, आत्मार्थी-शीलवान आदि के शीलादि के प्रताप से वह पानी जंबूद्वीप में नहीं आ पाता है। यदि धर्म यहाँ से उठ जाए तो विप्लव मच जाए। श्रावक जो धर्मराधना करता है, उसका उसे तो लाभ मिलता ही है, किंतु उसकी ज्योतिर्मय किरणों के स्पंदन से सारा वातावरण प्रभावित होता है। इसलिए श्रावक! तू ही विश्व का स्वाद है।

श्रावक का जीवन कैसा होना चाहिए? उसे आत्मा व शरीर की भिन्नता का बोध होना चाहिए। उसे आत्मा के स्वभाव और विभाव का परिचय होना चाहिए। वह विभाव रूप राग-द्वेष को अपने से दूर करने में प्रयत्नशील रहे। राग-द्वेष, मोह-माया के लेप न लगें, उसके लिए अपने पर लेमिनेशन जैसी एक परत बनाए रखें। रामलीला में बना राम जानता है कि वह, रामनहीं है, वह केवल औपचारिक है। वैसे ही श्रावक समझे कि वह शुद्ध आत्म-स्वरूपी है। वर्तमान में केवल कर्तव्य का निर्वहन कर रहा हूँ। वह दिन धन्य होगा, जिस दिन मैं अपने स्वरूप को उजागर कर पाऊँगा, मैं तप-संयम में पुरुषार्थ प्रकट कर पाऊँगा। पिंजरे में पंछी जैसे आनंद नहीं पाता, उससे निकल खुले आकाश में उड़ान भरने को छटपटाता रहता है, वैसे ही श्रावक भी संसार के सुखों में मोद नहीं मनाता। वह अवसर की टोह में रहता है कि कब वह अवसर आए और वह संसार के ममत्व का छेदन करके मुक्तिपथ पर अग्रसर हो जाए।

कार्तिक शुक्ल 2, शुक्रवार, 13-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर

O Shravak (Jain laity, or householder)! Thou art unique in the universe, thou art special. There is none to match you in the world but you. Just as sugar sweetens milk, and salt adds to the taste of dough, thou art the flavour of the universe. If there is any flavour in the universe, it is you. This assertion is not just eulogistic, it is the reality. 'Aagam' (Jain scriptures) evidence it. Why does the saline ocean not flood 'Jambudvipa' (According to Jain Cosmology, Jambudvipa is at the centre of Madhyaloka, or the middle part of the universe, where the humans reside)? While the gods subdue the high tides rising therein, they are unable to calm the surges. It is the benedictory influence of renunciates and ascetics, of those in quest of the soul, of those bearing high moral character et al that the ocean water does not gain upon 'Jambudvipa'. Should 'dharma' (translated variously as 'eternal truth', 'cosmic law' etc.) vanish from here, there will be deluge. Practice of 'dharma' by the 'shravak' gets him merit for sure, but the pulsations of his resplendent rays influence the whole environment. Hence, O Shravak, thou art the flavour of the universe.

How may the 'shravak' live his life? He must be conscious of the distinction between body and soul. He must know the 'svabhav' (or, the nature of the soul), and its 'vibhav' (modes or attributes contrary to its true nature). He should strive to get rid of the attachment-aversion binary, which is just a form of 'vibhav'. To obviate the liniment of 'attachment-aversion', 'infatuation-delusion', he should coat himself with a lamination-like layer. One playing Ram in Ram-leela (dramatic performance of Ram's character) knows he is not Ram; he is just formally cast in a role. Likewise, the 'shravak' may suppose he is immaculate 'soul-form'. He may tell himself, "I am discharging a duty at present. Blessed will be the day, when my true nature will come to the fore, when I will exhibit valour in the practice of austerities and spiritual discipline." Just as a caged bird knows no joy, and pines to soar in the open sky, the 'shravak' too knows no joy in mundane pleasures. He is ever in the quest of an opportunity to pierce the veil of mundane attachments and advance down the path of liberation.

Friday, 13-11-2015

Courtesy- Brahmakshar



YOU ARE THE ESSENCE OF THE UNIVERSE

- Param Pujya Acharya Pravar
1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.



विवेक

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

मकान की मजबूती के लिए नींव की मजबूती आवश्यक है। जिस मकान की नींव मजबूत नहीं होती, वह टिकाऊ नहीं होता। पहले नींव डाली जाती है, फिर उसके ऊपर मकान बनाया जाता है। धर्मरूपी महल को टिकाऊ बनाने के लिए भी नींव की जरूरत है। वह नींव है अधिकारी का निर्णय। वास्तविक अधिकारी के बिना धर्म वास्तविक लाभ नहीं पहुँचाता। मकान कितना ही सुन्दर क्यों न हो, नींव के बिना उसके किसी भी क्षण ढह जाने की सम्भावना रहती है।

धर्म का अधिकारी कौन है? यों तो जीवमात्र धर्म के अधिकारी हैं, पर किस प्रकृति वाले को कैसे धर्म की शिक्षा होनी चाहिए, इस बात का चतुर उपदेशक को अवश्य निर्णय कर लेना चाहिए।

लोक-व्यवहार से योग्यता की परीक्षा की जाती है। जिस मनुष्य की जैसी योग्यता है वैसा ही काम उसे सौंपा जाता है। इससे न तो काम बिगड़ता है और न उस मनुष्य की असफलता होती है। जो जिस काम के योग्य नहीं है उसे वह कार्य सौंपा जाए तो काम सिद्ध नहीं होगा और वह मनुष्य दोनों ही से चला जाता है। अयोग्य काम में उसे सफलता नहीं मिलती और योग्य काम उसे सौंपा नहीं गया। इस तरह वह न इधर का रहता है न उधर का रहता है। यही कारण है कि लोक-व्यवहार में प्रायः वही काम उसे सौंपा जाता है जिसके योग्य वह होता है। जब

व्यवहार में इस बात का ध्यान रखा जाता है तब धर्म में क्यों नहीं रखा जाना चाहिए? आज हरेक सम्प्रदाय वाला अपना-अपना दल बढ़ाने की चेष्टा करता है, पर इस बात का विचार नहीं किया जाता कि कौन किस धर्म के पालने में समर्थ है और कौन नहीं?

धर्म के अधिकारी का शास्त्र में नाम है- **मार्गानुसारी**। जैसे यात्रा पर जाने से पहले सब प्रकार की तैयारी की जाती है, इसी प्रकार मोक्ष-पथ पर चलने के लिए मार्गानुसारी पहले बनना चाहिए।

मार्गानुसारी के कर्तव्य का शास्त्र में विस्तृत वर्णन है, किन्तु यहाँ मैं ही आप लोगों को कुछ बातें समझा देना चाहता हूँ। सर्वप्रथम मार्गानुसारी में विवेक की आवश्यकता है। पृथक्करण की मानसिक शक्ति को विवेक कहते हैं। स्वर्णकार सोने में मिले हुए अन्य पदार्थों व सोने को अलग-अलग कर देता है, उसी प्रकार धर्माधिकारी को हरेक वस्तु का पृथक्करण करना चाहिए। पृथक्करण से



पता लग जाएगा कि कौन-सी वस्तु ग्राह्य है और कौन-सी अग्राह्य है? मान लीजिए आपने नित्यानित्य के विषय में पृथक्करण करना चाहा तो आपको विदित हो जाएगा कि संसार में जो अगणित पदार्थ-राशि विद्यमान है, उसमें नाशवान कौन-सी है और अविनश्वर कौन-सी है? अविनश्वर के साथ संबंध रखना, उस पर विश्वास रखना सुखदाई है और नाशवान से नाता जोड़ना दुःखदाई है। कहा है - **जब लगी आत्म-तत्व चिन्तयो नहीं, त्यां लगी साधना सर्व झूठी।**

जब तक जड़-चेतन का विवेक नहीं होता, तब तक कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। जड़-चेतन का विवेक हो जाना **'सम्यग्दृष्टि'** है। भगवती सूत्र में कहा है- **“जिस मनुष्य को जड़-चेतन का ज्ञान नहीं हुआ, वह फिर भी कहता है कि मैं त्यागी हूँ तो समझना चाहिए कि उसका ख्याल गलत है।”** विवेक के बिना सब क्रियाएं निष्फल-सी हैं। भौरों के द्वारा लकड़ी पर 'क' अक्षर खुद भी गया तो उसे उससे क्या लाभ है? अगर कुछ लाभ है तो 'क' अक्षर जानने वाले को। भौरों के लिए तो वह व्यर्थ ही है।

विवेक के बिना की गई क्रिया कदाचित् अच्छी बन जाए तो भी उसे अज्ञानी ही समझना चाहिए। मार्गानुसारी में विवेक के साथ वैराग्य की मात्रा भी होनी चाहिए। इहलोक के पदार्थों, जैसे- स्त्री, पुत्र, धन, मकान तथा स्वर्ग के सुखों की लालसा से चित्त को हटा लेना वैराग्य कहलाता है।

कुछ भाइयों का ख्याल है कि वैराग्य साधु को ही हो सकता है। हम गृहस्थ लोग वैरागी कैसे हो सकते हैं? वास्तव में ऐसी बात नहीं है।

प्रत्येक प्राणी वैरागी बन सकता है। वैरागी का अर्थ वस्तुओं का परित्याग कर देना ही नहीं है। मान लीजिए किसी साधु ने सांसारिक वस्तुएँ त्याग दीं, पर उसके अन्तःकरण में उन वस्तुओं के प्रति अब भी लालसा बनी हुई है, तो क्या उसे वैरागी कहना चाहिए? नहीं, उसके विपरीत चाहे स्त्री पास रहे, धन रहे, पुत्र रहे, फिर भी अगर इनमें तल्लीनता नहीं है तो वैराग्य है। कमल जल में रहता है

फिर भी जल से अलिप्त रहता है। ऐसा ज्ञान जड़-चेतन अर्थात् नश्वर-अनश्वर का विवेक होने पर उदित होता है।

जिसने शरीर को नाशवान और आत्मा को अविनाशी समझ लिया, क्या शरीर के नाश होने पर उसे दुःख हो सकता है? आत्मतत्त्व का परिज्ञान होने पर शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं तो भी दुःख का स्पर्श नहीं होता।

शरीर नाशवान है, इसलिए विवेकी उसकी रक्षा करता है। जो वस्तु नाशवान समझी जाती है उसकी रक्षा की जाती है। अविनाशी वस्तु की रक्षा की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वह स्वयं रक्षित है। आग लगने पर घास के झोंपड़े की रक्षा करने की फिक्र होती है, न कि पत्थर के मकान की।

कामदेव बड़ा श्रावक था। उसके पास अठारह करोड़ दिनारों (स्वर्ण मोहरे) और साठ हजार गायें थीं। इसी से उसके वैभव का अनुमान किया जा सकता है। पर क्या वह देवता की तलवार से भयभीत हुआ था? शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देने पर भी उसे चिंता हुई थी?

मित्रो! आपके वैभव से उसका वैभव अधिक ही था, फिर भी उसे मृत्यु का भय नहीं था। फिर आप मौत के नाम से क्यों डरते हैं? इस अन्तर का कारण यही है कि वह शरीर को नाशवान मानता था और भोग-विलास से विरक्त था, पर आप इससे उलटा समझे हैं।

याद रखिए, शुद्ध विवेक के बिना आप कल्याण मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकते। विवेक, कल्याण प्राप्ति की पहली शर्त है।

आपने पत्नी का पाणिग्रहण धर्म पालन के लिए किया है। इसी प्रकार पत्नी ने भी आपका। जो नर या नारी इस उद्देश्य को भूलकर खान-पान और भोग-विलास में ही अपने कर्तव्य की 'इतिश्री' समझते हैं, वे धर्म के पति-पत्नी नहीं वरन् पाप के पति-पत्नी हैं।

आज ऐसे धर्म के जोड़े बहुत कम नजर आते हैं। आजकल तो यह दशा है कि जो ज्यादा गहने पहनाता है, वह अच्छा पति माना जाता है। विपत्ति आने पर जो पति

अपनी पत्नी से गहने मांग लेता है, उसे उसकी पत्नी राक्षस-सा समझने लगती है। इसका अर्थ यही निकला कि पति, पति नहीं किन्तु जेवर पति है।

मैं जब गृहस्थ अवस्था में था, तब की बात है। मेरे गाँव में बूढ़े ने विवाह करना चाहा। एक विधवा बाई की एक लड़की थी। बूढ़े ने वृद्धा के सामने विवाह का प्रस्ताव उपस्थित किया, मगर उसने और उसकी लड़की दोनों ने उसे अस्वीकार कर दिया। कुछ दिनों बाद उस बूढ़े की रिश्तेदार कोई स्त्री उस बाई के पास आई और उसे बहुत से जेवर दिखलाते हुए कहा – तुम्हारी लड़की का विवाह उनके साथ हो जाएगा तो इतना जेवर पहनने को मिलेगा। लालच में आकर विधवा ने अपनी लड़की का विवाह उस वृद्ध के साथ कर दिया।

मेवाड़ की भी एक ऐसी घटना है। एक धनी वृद्ध के साथ एक कन्या का विवाह होना निश्चित हुआ। समाज सुधारकों ने लड़की की माता को ऐसा न करने के लिए समझाया। लड़की की माता ने कहा – पति मर जाएगा तो क्या हुआ, मेरी लड़की गहने तो खूब पहनेगी।

मित्रो! आप ही बतलाइए कि उक्त दोनों विवाह किसके साथ हुए?

“धन के साथ या पति के साथ?”

“धन के साथ।”

“धन ही इन कन्याओं का पति बना।”

भाइयो! आपको मेरा कहना शायद अप्रिय लगेगा, पर समाज की दयनीय और भयानक दशा देखकर मेरे हृदय में आग धधक रही है। इसलिए कह देता हूँ कि समाज का सत्यानाश करने वाली रीतियों को आप तुरन्त त्याग दीजिए। आप अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए विधवा बहनों को सोना पहनाना अपना कर्तव्य समझते हैं, पर यह बहुत बुरी चाल है। यह चाल विधवा धर्म के विरुद्ध है। मानव की प्रतिष्ठा, चाहे स्त्री हो या पुरुष; उसके सदगुणों पर अवलम्बित रहनी चाहिए। वही वास्तविक प्रतिष्ठा है। धन से प्रतिष्ठा का दिखावा करना मानवीय

सदगुणों के दिवालियेपन की घोषणा करने के समान है।

आप कहते हैं कि बिना आभूषणों के विधवा अच्छी नहीं लगती, इसलिए आभूषण पहनाते हैं। मैं समझता हूँ ऐसा सोचने में विलासमय वृत्ति से काम लिया जाता है। विधवा बहन के मुखमण्डल पर जब बाह्य तेज विराजमान होगा तो उसके सामने आभूषणों की आभा फीकी पड़ जाएगी। चेहरे की सौम्यता उसके प्रति आदर का भाव उत्पन्न किये बिना नहीं रहेगी। उसके तप, त्याग और संयम से उसके प्रति असीम श्रद्धा का भाव प्रकट होगा। इनमें क्या प्रतिष्ठा नहीं है? सच समझो तो यही उत्तम गुण उसकी सच्ची प्रतिष्ठा के कारण होंगे। ऐसी अवस्था में कृत्रिम प्रतिष्ठा के लिए उसे वैधव्य धर्म के विरुद्ध आवश्यकता नहीं रहेगी। इसलिए अच्छी न लगने का मोह और भय छोड़ो और निर्भय होकर कैसे धर्म की रक्षा हो, वैसा प्रयत्न करो।

विधवा बहनों से भी मेरा यही कहना है कि अब परमेश्वर से नाता जोड़ो और धर्म को अपना साथी बनाकर संयम से जीवन व्यतीत करो। संसार के राग-रंगों और आभूषणों को अपने धर्म-पालन में विनष्टकारी समझकर उनका त्याग कर दो। इसी में आपकी प्रतिष्ठा है और महिमा है। आप संसार की आदर्श त्यागशील देवियाँ हैं। आपको गृहस्थी के ऐसे प्रपंचों से दूर रहना चाहिए, जिनसे आपके धर्म-पालन में बाधा पहुँचती है।

आज भारत का दुर्भाग्य है कि छोटी-छोटी बातों के लिए भी उपदेश देना पड़ता है। साधुओं को पति-पत्नी के झगड़े में पड़ने की क्या आवश्यकता है? सामान्य धर्म का नाश होते देखकर भी विशेष धर्म के पालन का उपदेश देना थोथा धर्माडम्बर है। सामान्य धर्म का भलीभाँति पालन होने पर ही विशेष धर्म का पालन हो सकता है। सामान्य धर्म के अभाव में विशेष धर्म का पालन होना संभव नहीं है।

पृथ्वीसिंह जी साहब! आज जनता में भयंकर रोग घुसे हुए हैं। आप बीकानेर नरेश के संबन्धी है, अतएव आपसे यह कह देना उचित है कि आप लोगों पर इन रोगों की चिकित्सा का बड़ा भारी उत्तरदायित्व है। अगर

लोग धर्म के कानून को न मानें तो आप लोगों को चाहिए कि राजकीय कानून बनाकर इन रोगों का मुँह काला करें। बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह इन रोगों में प्रधान हैं। इन रोगों की बदौलत अन्य बहुत से रोग उत्पन्न होते हैं। इनसे आपकी प्रजा का घोर पतन हो रहा है। आपके राज्य की शोभा वीर प्रजा से है, न कि निर्बल प्रजा से।

महाराज हरिश्चन्द्र द्वारा धर्म मर्यादा के पालन को कौन नहीं जानता? जिस समय राजा हरिश्चन्द्र महारानी तारा और कुमार रोहिताश्व राज्य त्याग कर जाते हैं, उस समय समस्त रानियाँ आँसू बहाती हैं। स्त्रियाँ रानी से कहती हैं—महारानी जी! आप कहाँ पधारती हैं? आप हमारे घर में रह जाइए। यह आप ही का घर है।

महारानी उत्तर देती है—“बहनो! आपके आँसू नहीं, वरन् मेरे धर्म का सत्कार है। ये आँसू मेरे पतिव्रत धर्म का अभिषेक हैं। अगर मैं राजसी ठाट के साथ राजमहल में ही रहती तो मेरे साथ आपकी इतनी सहानुभूति नहीं होती। बहिनी! यदि आप मेरे प्रति सच्ची सहानुभूति रखती हैं तो आप भी अपने घर में सच्चे धर्म की स्थापना कीजिए।

मित्रो! आपने महारानी तारा के वचन सुने? वह धर्म की रक्षा के लिए कितने हर्ष के साथ राजपाट त्याग कर रही हैं? इसे कहते हैं वैराग्य। लाखों-करोड़ों के आभूषण पहनने वाली महारानी तारा ने ठीकरों की तरह उन्हें उतारकर फेंक दिया और मन में तनिक भी मलिनता न आने दी। आप सामायिक करते समय पगड़ी तो उतारते हैं, पर कभी दो घड़ी के लिए अभिमान भी उतारते हैं? अगर नहीं, तो आप वैराग्य का अर्थ कैसे समझ सकते हैं?

हरिश्चन्द्र की प्रजा विश्वामित्र को कोस रही थी। हरिश्चन्द्र चाहते तो अपने एक ही इशारे से कुछ का कुछ कर सकते थे। मगर नहीं। उन्होंने प्रजा को आश्वासन दिया कि घबराओ नहीं। धर्म का फल कटु कभी नहीं हो सकता।

मित्रो। आप लोग अपनी 'पोजीशन' बनाए रखने के लिए झूठ, कपट, दगा, फाटका आदि करते हो, मगर हरिश्चन्द्र की तरफ देखो। उसके पीछे तमाम प्रजा की

शक्ति है, फिर भी धर्म का आदर्श खड़ा करने के लिए उसे राजपाट त्यागने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं हुई। लोग दमड़ी-दमड़ी के लिए झूठ बोलने के लिए तैयार रहते हैं। उनमें ऐसी आस्तिकता कहाँ?

राजा हरिश्चन्द्र की दृढ़ मानसिकता के कारण ही हजारों वर्ष बीत जाने पर भी वे आज भी हम लोगों के मन-मन्दिर में जीवित हैं। उनकी पवित्र कथा हमें धर्म की ओर इंगित कर रही है, प्रेरित कर रही है।

पृथ्वीसिंह जी साहब! यदि आपके नगर में महाराज हरिश्चन्द्र आए तो आप उन्हें क्या भेंट चढ़ाएंगे?

पृथ्वीसिंह जी—“सभी कुछ महाराज!”

आप सभी कुछ चढ़ाने के लिए क्यों तैयार हैं? उनके सत्य को देखकर?

क्या इस सत्य धर्म की प्रजा में प्रतिष्ठा नहीं होनी चाहिए? सत्य के लिए वीरता की आवश्यकता है और वीरता वीर्य-रक्षा से आती है। आज प्रजा का वीर्य नष्ट हो रहा है। इसे रोककर क्या आप प्रजा की रक्षा का श्रेय प्राप्त न करेंगे?

प्यारे मित्रो! यदि आप इन रोग-राक्षसों को पहचान गए हों तो इन-बालविवाह और वृद्धविवाह को तिलांजलि दीजिए और अपने दूसरे भाइयों को समझाइए। अगर वे न समझें तो सत्याग्रह कीजिए। उनसे साफ शब्दों में कह दीजिए कि अब हम ऐसे अत्याचार हर्गिज नहीं होने देंगे।

धर्म के खातिर राजा हरिश्चन्द्र ने केवल राज-पाट ही नहीं छोड़ा, अपितु विश्वामित्र को दक्षिणा चुकाने के लिए आप अपनी पत्नी सहित बिक गये। धर्म की रक्षा त्याग से होती है, तलवार से नहीं।

रामचन्द्र जी ने भी त्याग के द्वारा ही अपने धर्म की रक्षा की थी। वे चाहते तो स्वयं राज्य के स्वामी बन सकते थे। सभी लोग उनके पक्ष में थे, स्वयं भरत भी यही चाहते थे। पर रामचन्द्र जी राज्य के भूखे नहीं थे। वे संसार को जलाने वाली पाप की अग्नि बुझाना चाहते थे। उन्हें मालूम हुआ कि मेरे ही घर में ऐसा द्वैत फैल गया है। एक

ही राजा के पुत्रों में भी ऐसी भिन्नता समझी जाने लगी, तब यह आग संसार में कितनी फैल रही होगी? उसे शांत करने के लिए राम ने राज्य का परित्याग किया। राम के इस त्याग से संसार सुधर गया। अकेली कैकेयी क्या, समग्र भारत रूपी कैकेयी का सुधार हो गया। तलवार की शक्ति राक्षसों के लिए काम में आती है। दैवीय प्रकृति वाली प्रजा में प्रेम ही अपूर्व प्रभाव डाल देता है।

मित्रो! यूरोप और अमेरिका आदि किसी भी देश का इतिहास छान डालिए, पर हरिश्चन्द्र जैसे त्याग का दृष्टांत आपको विश्व के इतिहास में कहीं नहीं मिलेगा। ओह! जिस समय रानी बाजार में बिकने के लिए खड़ी होती है, उस समय राजा तो मुँह से कुछ नहीं बोलते, पर रानी कहती है, 'लो, मैं बिक रही हूँ। जिसकी इच्छा हो मुझे दासी बनाने के लिए खरीद लो।'

धन्य है महारानी तारा का त्याग! ऐसी पतिव्रता धर्मपरायणा रमणी आर्यावर्त को छोड़कर और कहाँ उत्पन्न हो सकती है?

जिस समय रोहिताश्व का देहान्त हो जाता है, उस समय महाराज हरिश्चन्द्र मरघट में अपने स्वामी चांडाल की आज्ञा के अनुसार कर (टैक्स) लेने के लिए बैठे थे। तारा रोहिताश्व की देह को लेकर वहाँ आती है। राजा टैक्स का पैसा मांगता है।

रानी कहती है—“मुझसे पैसे मांगते हैं आप?”

राजा—“हाँ।”

रानी—“क्या आप मुझे भूल गये हैं?”

राजा—“नहीं तारा! इस जीवन में तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ।”

रानी—तो आप मुझे इस कर से बरी नहीं कर सकते?

राजा—तारा, यही करना होता तो राज्य क्यों त्यागता? जब राज्य के लिए असत्य का आचरण न किया तो क्या एक टके के लिए सत्य गँवाना उचित होगा?

रानी—टका तो मेरे पास है नहीं। यह साड़ी है, कहिए तो आधी फाड़ दूँ!

राजा—अच्छ, यही सही। एक टके की तो हो जाएगी। ज्योंही रानी अपनी साड़ी फाड़ने को होती है त्योंही आकाश से पुष्प वर्षा होने लगती हैं। इन्द्र आदि देवता उनकी सेवा में उपस्थित होते हैं। श्मशान भूमि स्वर्ग बन जाती है।

यह है सत्यनिष्ठा! हरिश्चन्द्र में इतनी त्याग-वृत्ति कहाँ से आई? इसका उत्तर वही है, जो पहले कहा जा चुका है अर्थात् लालसा का त्याग और नश्वर-अनश्वर का विवेक।

मित्रो! भोग भोगते हुए भी अगर आपका अन्तरंग उसमें लिप्त न होगा तो यही शक्ति आपके भीतर भी आविर्भूत हो सकती है। फिर निस्सार पदार्थों को त्यागने में आपको कष्ट न होगा। आप परमानन्द प्राप्त करेंगे।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-2 (दिव्य जीवन संदेश)

भक्ति रस

आसक्ति

- राखी अलिझाड़, मुक्ताईनगर

किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति, हो अत्यधिक लगाव।
आकुल-व्याकुल, अधीर बना दे, जो मन के भाव॥
जीवन में चिता, दुःख बढ़ा दे, वह है आसक्ति।
आसक्ति को त्यागकर ही, पा सकोगे मुक्ति॥1॥
मृत्योपरांत भी कृष्ण को, उठाकर भटके बलराम।
छह मास तक लाश ढोई, यह आसक्ति का परिणाम॥
इनसान को पागल बना दे, है यह वह शक्ति।
आसक्ति को त्यागकर ही, पा सकोगे मुक्ति॥2॥
अत्यधिक आसक्ति है, दुःख का कारण।
तत्वबोध से करो, इसका निवारण॥
उत्कृष्ट मन में रखो, धर्म, श्रद्धा और भक्ति।
आसक्ति को त्यागकर ही, पा सकोगे मुक्ति॥3॥
यहाँ का धरा, रह जाएगी यहीं।
सम्यक् धर्म से मार्ग, अपनाओ सही॥
सर्वश्रेष्ठ है, विषय भोगों से विरक्ति।
आसक्ति को त्यागकर ही,
पा सकोगे मुक्ति॥4॥

शील की साधना महत्वपूर्ण

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

ज्ञानीजनों ने अपने अनन्त ज्ञान में इस संसार की भवितव्यता को देखकर ही तदनुरूप आत्मविकास के सत्सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। उनका कथन है कि संसार में रहते हुए भी विकारों से जितने दूर रह पाओगे, उतना ही अपने जीवन में शुद्धता एवं श्रेष्ठता का समावेश होता जाएगा। विकारों से दूर रहने तथा विकारों को दूर करने के लिए एक चतुष्टय का उल्लेख किया गया है, जो है दान, शील, तप तथा भावना का चतुष्टय। धन की लोलुपता दान से कम होगी, विषय-कषायों का आवेग तप से शांत बनेगा तथा स्वभाव में सरलता एवं सदाशयता भावना से ढलेगी। किन्तु शील का सुप्रभाव जीवन के चहुँमुखी निर्माण में रत प्रत्येक वृत्ति एवं प्रवृत्ति पर पड़ता है। शील एक प्रकार से समूचे चारित्र का शृंगार होता है।

सदाचरण एवं सच्चरित्र शील रक्षा भी करता है तो उनकी उत्कृष्टता को प्रेरित भी करता है। शील चरित्रशील व्यक्तित्व का प्राण होता है। वस्तुतः शील न तो कोई विशिष्ट साधना है और न ही कोई विशिष्ट उपलब्धि। जीवन की सभी वृत्ति-प्रवृत्तियों तथा गतिविधियों में जो

जीवन व्यवहार में शील का जब श्रेष्ठ रीति से समावेश हो जाता है, तब व्यक्ति का सामान्य आचरण भी उस स्तर तक उन्नत बन जाता है।



शुभता की रक्षक वृत्ति है, वही शील वृत्ति है। शील की साधना अहर्निश की साधना है। मन, वचन एवं काया के प्रत्येक योग व्यापार की साधना हैं। शील की साधना प्रतिपल चलती है और प्रतिपल के आचार-विचार में उसकी झलक देखने को मिल सकती है। शील की उपलब्धि भी कोई पृथक् उपलब्धि नहीं होती है। वह जब स्वभाव में ढल जाता है तो मन, वाणी एवं कर्म के प्रत्येक अंश में समा जाता है। इस दृष्टि से शील की साधना दैनंदिन की या कि सम्पूर्ण जीवन व्यवहार की साधना है, जो श्रेष्ठतम मर्यादाओं में प्रतिफलित होती है।

जीवन व्यवहार में शील का जब श्रेष्ठ रीति से समावेश हो जाता है, तब व्यक्ति का सामान्य आचरण भी उस स्तर तक उन्नत बन जाता है, जहाँ से गर्भपात जैसे महापाप तो क्या, सामान्य पापपूर्ण कार्यों का भी उद्भव नहीं होता है। मन, वचन एवं काया, तीनों के योग जब अत्यंत कलुषित बनते हैं तभी वे गर्भपात जैसे महापापकारी दुष्कृत्य के रूप में फूटते हैं। शील के सद्भाव में योग व्यापार के इतने कलुषित बन जाने का प्रश्न ही नहीं उठता है। कारण नहीं तो कार्य होगा ही क्यों ?

सुसंस्कारों की परम्परा मिटे नहीं ❀❀❀❀❀❀❀❀

यह सही है कि चारों तरफ के प्रदूषित वायुमंडल के कारण अच्छे-अच्छे प्रतिष्ठित घरों तक की सुसंस्कारों की परम्पराओं का अस्तित्व लड़खड़ाने लगा है किन्तु अभी भी निराशा की अवस्था नहीं आई है। यदि ठोस प्रयत्न किये जाएं तो उन परम्पराओं को अभी भी सुरक्षित बना सकते हैं और उनकी सुरक्षा से शील भी सुरक्षित हो सकता है। संस्कार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के पास स्वाभाविक रूप से पहुँच जाते हैं और इस तरह उनके आदान-प्रदान की परम्परा बन जाती है। संस्कार 'सु' हो या 'कु' वे पारंपरिक रूप से प्रभावित होते जाते हैं।

किन्तु जब आज के जमाने जैसे हालात सामने आते हैं कि वायुमंडल की विषाक्तता से सुसंस्कारों की परम्परा प्रभावित होने लगती है तो नई पीढ़ी को सुसंस्कारित बनाने के उद्देश्य से वर्तमान पीढ़ी को विशेष सावधानी बरतनी होती है। उनको स्वयं के आचरण पर एक आलोचनात्मक दृष्टि डालनी होती है कि वे अपने शील को कहाँ-कहाँ गँवा बैठे हैं या गँवा रहे हैं। शील के जाने का अर्थ ही यह होगा कि सुसंस्कारों की पृष्ठभूमि छिन्न-भिन्न हो रही है। इस दृष्टिकोण से उन्हें अपने आचरण में ही इस प्रकार संशोधन लाना होगा कि उनकी चारित्रिक दुर्बलता बच्चे-बच्चियों के सामने प्रकट न हो और धीरे-धीरे प्रयत्नपूर्वक वह निकल ही जाए। स्थापित परम्पराओं की क्षति के साथ सुसंस्कारों की भी क्षति होती है, क्योंकि भली प्रकार निभाई जाए तो ये परम्पराएं सुसंस्कारों की ढाल का काम करती हैं। अतः जागरण का लक्ष्य यह बनाइये कि सुसंस्कारों की परम्पराएं मिटे नहीं और शील की चमक घटे नहीं।

सादा जीवन, उच्च विचार ❀❀❀❀❀❀❀❀

उसके फूटते हुए दुष्परिणामों को देखकर विलासितापूर्ण रहन-सहन की भोगवादी जीवनशैली को त्याग देने का समय आ गया है। इस बाहरी चमक-दमक के झूठे आकर्षण ने भीतर के जीवन को इतना बरबाद कर दिया है कि उसको वापिस सँवारने में काफी कठोर पुरुषार्थ की आवश्यकता होगी।

नए नए आए पैसे की चकाचौंध में शायद कई भारतवासी इन दुष्परिणामों को गंभीरता से न ले रहे हों, किन्तु उन्हें आँखें खोलकर देखना चाहिए कि धन सम्पन्नता की जहाँ अति है वैसे देश अमरीका में भी लोग अपनी भोगवादी जीवनशैली से घबरा उठे हैं। यही कारण है कि आध्यात्मिकता का नाम लेकर जैसा भी भारतीय सन्त वहाँ पहुँच जाता है, वे उसके पीछे लड्डू हो जाते हैं।

जब विकृत भोगवादी शैली से घबराए हुए लोगों को आप देखते हैं तो क्या आप लोगों के मन में त्यागवादी जीवनशैली का गौरव जागृत नहीं होता, जो आपकी धरोहर है और जिसका अनुपालन करके आपके पूर्वजों ने उच्चतम शील और चारित्र्य का विकास किया।

यदि आपकी आँखें खुलती हैं और आप उनकी त्यागवादी जीवनशैली का फिर से विकास करना चाहते हैं तो 'सादा जीवन, उच्च विचार' की उक्ति को चरितार्थ कीजिए। रहन-सहन ताजगी से भरा हुआ होगा तो विचारों की नीचता की तरफ दौड़ने का अवसर ही नहीं रहेगा। विचार उच्च रहे तो शील समुन्नत रहेगा ही।

'सादा जीवन, उच्च विचार' की दिशा में पहला कदम वर्तमान पीढ़ी यानी प्रौढ़ों को ही बढ़ाना होगा, तभी नई पीढ़ी उनका अनुकरण करेगी।

संयम के प्रति आस्था ❀❀❀❀❀❀❀❀

त्यागवादी जीवनशैली को अपनाने के बाद ही संयम के प्रति आस्था विकसित होगी तथा व्यक्त भी होगी। त्याग और संयम परस्पर सम्बन्धित ही नहीं, अन्योन्याश्रित भी होते हैं। त्याग की भावना होगी तभी संयम का विचार फलीभूत होगा। संयम का विचार होगा तभी त्याग की भावना पनपेगी। इस कारण संयम के प्रति आस्था के सुदृढ़ बनने से शील-संस्कार समुन्नत होते हैं, जो जीवन को विकारों की दिशा में पतित बनने से रोकते हैं।

नई पीढ़ी में यदि संयम के प्रति आस्था का निर्माण किया जाए तो शील के निर्वाह से सम्बन्धित एक नई शक्ति का उनके अन्तःकरण में उदय हो सकेगा। वह शक्ति होगी आत्म-नियंत्रण तथा आत्म-विश्वास की। इस शक्ति का अनोखा असर यह पड़ेगा कि संयम के

प्रति आस्थावान युवाशक्ति बुराइयों के नाजुक हालातों में भी पतन से अपने आपको बचा लेगी। इतना ही नहीं, वह युवाशक्ति अन्य दुर्बलों को भी पतन की राह पर बढ़ने से बचा सकेगी और बुराइयों की जड़ों पर कुठाराघात करने का साहस भी जुटा सकेगी। संयम के प्रति गहरी आस्था रखने से शील की शुद्धता तथा शुभता सदा सक्रिय और दैदीप्यमान रहेगी।

बहनों पर विशेष जवाबदारी ❀❀❀❀❀

शील का क्षेत्र ऐसा है, जिसमें बहनों की विशेष जवाबदारी रहती है। शील उनकी जवाबदारी भी है तो उनकी आवश्यकता भी। किंतु विडंबना यह है कि आज की इस धिनौनी फैशनपरस्ती में बहिनें ही ज्यादा बह रही हैं और शायद अपने शील की भी ज्यादा ही हानि कर रही हैं। अतः इसके सम्बन्ध में उन्हें अधिक सावचेत हो जाना चाहिए।

संसार में प्रकृति का ऐसा ढंग है कि पुरुष अधिक स्वेच्छाचारी हो जाता है जितनी कि स्त्री स्वेच्छाचारी नहीं होती। फिर पुरुष की स्वेच्छाचारिता का कुफल स्त्री को ही भुगतना पड़ता है। गर्भपात का ही मामला ले लीजिए। गहराई से देखें तो गर्भस्थ बालक के बाद उसकी माता भी तो किसी न किसी की स्वेच्छाचारिता के अपराध की शिकार ही तो होती है और गर्भपात का उसे भी कितना शारीरिक एवं मानसिक कष्ट भोगना पड़ता है। अतः शील की रक्षा का बहुत कुछ भार बहनों को उठाना ही चाहिए।

नारी जीवन की सुरक्षा ❀❀❀❀❀

शील के क्षेत्र में नारियाँ अपनी जवाबदारी भली प्रकार निभाएँ और गर्भपात जैसी महापापपूर्ण घटनाएँ घटित ही न हों, इसके लिए समाज को भी अपनी जवाबदारी निभानी होगी।

आपको प्राचीनकाल की एक सूक्ति की याद दिलाऊँ— 'यत्र नार्थस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' अर्थात् जिस समाज में नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता रमण करते हैं। कथन है कि जहाँ नारियों को समादर मिलता है, वह समाज स्वर्ग के समान होता है। किन्तु बाद में समय पलटता रहा

है और धीरे-धीरे नारियों का सम्मान समाप्त होता गया। यहाँ तक कि किन्हीं समाजद्रोहियों ने स्त्री को पैर की जूती तक बता दिया। नारी के सम्मान ने जब से चोट खाई है उनमें समान स्थान पाने की चेतना जागी है किन्तु स्त्री समानता के आन्दोलनों से भी सही दिशा नहीं मिल रही है। जिस पुरुष और नारी को साथ जुड़े हुए दो पहियों की तरह गृहस्थी के रथ को समान दायित्व के साथ चलाना है, भला उनके बीच संघर्ष की स्थिति समस्या का समाधान कैसे कर सकती है? इस स्तर पर संस्कृतिमूलक नए सामंजस्यकारी समाधान खोजे जाने चाहिए।

पुरुष वर्ग को भी एक नए सिरे से इस सामाजिक समस्या पर गहरा चिन्तन करना चाहिए कि नारी को उसका खोया हुआ सम्मान फिर से मिल जाए ताकि नारी का खोया हुआ शील भी उसे वापस मिल जाए और इस तरह पूर्ण रूप से नैतिक एवं धार्मिक जीवन जीने वाली गृहस्थी फिर लौट आए। फिर लौट आए वह सदाचार, वह सुसंस्कार तथा वे मर्यादाएँ और परम्पराएँ जो उन्नतिशील संस्कृति की रचना करती थीं तथा आध्यात्मिक विभूतियों को उभारती थीं।

समाज में स्त्रियों को सम्मान देने का अर्थ है कि परिवार में शान्तिमय व्यवहार, पुत्रियों व पुत्रवधुओं को समान स्नेहदान, गरीब महिलाओं का श्रमाधारित आर्थिक सहयोग, विधवाओं, परित्यक्ताओं अथवा अन्यथा पीड़ित महिलाओं की यथायोग्य सहायता। ऐसे ही यथास्थान, यथायोग्य कई प्रकार के कार्य हो सकते हैं, जिनसे सम्पूर्ण जीवन व्यवहार सच्चरित्रमय बन जाए और सामाजिक वायुमंडल में सौम्यता एवं सहृदयता व्याप्त हो जाए, जिससे महापाप क्या सामान्य विकारों तक का अस्तित्व न रहे। नारी की सुरक्षा, उसके समादर और विकास का दायित्व पुरुष वर्ग निभाए तो कोई विशेष बात नहीं है क्योंकि नारी ही तो नर की खान होती है और नारी के ही गर्भ से वीर भगवान तक ने भी जन्म लिया है। फिर माँ, बहन, बेटा और पत्नी की सामाजिक उन्नति में हाथ बँटाने को कौन अपना सौभाग्य नहीं मानेगा? कारण, उसके विकास में आत्मा का विकास सफल हो जाता है।

साभार- नानेशवाणी-12 (संस्कार क्रांति) ❀❀❀

विवेक

जागरण की आवश्यकता

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

प्रभु महावीर ने भव्यात्माओं को संबोधित करते हुए कहा था- **‘पाणस्स सव्वस्स पगासणाए’**। उनका यह कथन कितना अर्थपूर्ण है, यह समझ पाना कठिन नहीं है। ज्ञान के प्रकाश के बिना जीवन अंधकार से परिपूर्ण अवस्था में रहता है और यह भी ज्ञात नहीं होता कि क्या कर्तव्य है, क्या अकर्तव्य है। ऐसी स्थिति में मनुष्य समझ ही नहीं सकता कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। इस विवेक का जागृत होना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि जब तक विवेक जागृत नहीं होता तब तक व्यक्ति अपने जीवन की दिशा व दशा बदल नहीं पाता। दिशा बदलने के पूर्व दशा को बदलना होता है और दशा बदलने के लिए आवश्यक है कि हमें हेय, ज्ञेय, उपादेय का बोध हो ताकि हम छूटनी कर सकें और समझ सकें कि क्या हेय है, क्या ज्ञेय है और क्या उपादेय है।

हम आश्रव की बात भी करते हैं, जो पाँच प्रकार के कहे गये हैं तथा जिनमें योग को भी आश्रव कहा गया है। योग का जो परिणमन होता है वह है आश्रव। इस संदर्भ में यह भी समझना होगा कि क्या योग का परिणमन मात्र ही आश्रव है? क्योंकि हम कहते हैं कि अशुभ योग आश्रव, शुभ योग संवर। योगों की प्रवृत्ति चाहे किसी भी व्यक्ति में हो, चाहे तीर्थकरों में ही हो, पर जहाँ योग है

अर्थात् प्रवृत्ति है वहाँ आश्रव होता है, आदान होता है, प्रवृत्ति मात्र से कर्मों का ग्रहण होता है।

तीर्थकर भी विहार करते हैं, बोलते हैं, उनमें भी ईर्यापथिकी क्रिया होती है, उससे कर्मों का आदान भी होता है। कहा भी गया है-

‘जा जा क्रिया, सा सा फलवती।’

जब योग प्रवृत्ति कर्मों का आदान करने वाली है तो व्यक्ति सोचेगा- तीर्थकरों के भी बंध होता है, फिर हमारी तो बात ही क्या है? हमारे तो बंध होगा ही। तो चले सो चलने दो। बंध तो होगा ही, ऐसी बात नहीं है। यदि विवेक का जागरण हो गया तो अंतर स्पष्ट हो जाएगा। **शुभ योग संवर है, यह पाप बंध कराने वाला नहीं होगा, कर्जा नहीं बढ़ाएगा।**

एक व्यक्ति एक हजार रुपये का कर्जा लेता है और दूसरा व्यक्ति एक हजार की आय घर में संग्रहित करता है। लेकिन जब दोनों को भुगतान करना होगा तब सोचिए पहले कौन भुगतान करेगा? निश्चय ही जिसके पास बैंक बैलेन्स है, धन है, उसे छोड़ने में कितनी देर लगेगी? **‘इदं न मम’** उसका स्वामित्व, ममत्व हट जाएगा। जिस पर कर्जा है, उसे अलग करने हेतु भुगतान करना पड़ेगा। वैसे ही जिन आश्रवों से पाप का बाहुल्य है उन्हें भी भुगतान करना होगा। शुभ योग जैसे सराग संयम

की अवस्था है। जो साधु जीवन लेकर चल रहा है, पर सरागता विद्यमान है, वहाँ योग प्रवृत्ति भी है, राग भी है। छठे गुणस्थान में संज्वलन क्रोध का भी उदय है तो मान का, माया का व लोभ का भी उदय रहा हुआ है। यहाँ काषायिक भाव मौजूद हैं। इसलिए जो संयम क्रिया हो रही है उसमें राग-भाव होने से शुभ योग से देव गति का आयुष्य बंध होता है। नहीं तो संयम बंधन कराने वाला नहीं है, मुक्ति दिलाने वाला है। संवर अशुभ कर्मों को रोकने वाला तथा पापकर्म में रुकावट पैदा करने वाला है। जो बंध हो रहा था वहाँ दीवार खड़ी कर देते हैं तो फिर वे पापकर्म प्रविष्ट नहीं हो पाते। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय आदि ये पापकर्म हैं, इनका भी छठे गुणस्थान में बंध होता है। फिर कैसे कहें कि वहाँ पापकर्म का बंध नहीं होता? यहाँ जो बात है, वह मुख्यता के आधार पर है। जहाँ एक कर्म का बंध हेतु है, वहाँ नौवें गुणस्थान तक आयुर्कर्म के सिवाय शेष सात कर्मों का बंध होता है। ज्ञानावरणीय आदि भी बंधते हैं, पर मूल कारण जिस कर्म का हेतु विद्यमान होता है, वहाँ उसकी प्रधानता होती है। दूसरे कर्मों को भी हिस्सा मिलता है, पर वहाँ प्रधानता नहीं है एवं काषायिक भाव तीव्र नहीं होने से स्थिति बंध प्रगाढ़ नहीं होता। इसलिए शुभ योग को संवर की परिभाषा दी गई है। क्योंकि जो बंध हुआ है उसकी अवधि गहन नहीं होती तथा पुनः शुभ अध्यवसायों से उन्हें साफ भी किया जा सकता है।

33 बोल के 32वें बोल में कहा गया है- शुभ योग का संग्रह करें ताकि हममें अशुभ का प्रवेश नहीं हो। यदि हो भी जाए तो उसका सफाया कर सकें और हमारे भीतर ज्ञान का प्रकाश पैदा हो जाए। वैज्ञानिकों ने इसे 'रीजनिंग माइण्ड' की संज्ञा दी है। यह ऐसी मशीनरी है, जिसमें छँटनी होती है। देखा जाता है कि कौन योग्य है, किसकी-किसकी प्रधानता है आदि। 'न्याय' की भाषा में इसे 'एयाति' कहते हैं। यह विवेक एयाति, ज्ञान-ज्योति जिसमें प्रकट हो जाए, वह सही निर्णय ले सकता है।

एक दृष्टांत लें। शीत ऋतु के दिन थे, कड़ाके की

ठंड पड़ रही थी। सेठ देवीचन्द की हवेली वैसी ही बिल्डिंग थी, जैसी बड़े लोग बनाते हैं। वह हवेली हवादार भी थी। जबरदस्त कोहरा पड़ रहा था, शीतलहर चल रही थी। उस लहर की चपेट में सेठ देवीलाल को ज्वर हो गया। उनकी पत्नी ने देखा कि बाहर तो ठंड पड़ रही है, पर शरीर भयंकर रूप से तप रहा है। शायद 105 डिग्री बुखार आ गया हो। घर में लड़का था ज्ञानचंद, जो सोया हुआ था। माता ने कहा- बेटा उठो, पिताजी को ज्वर है। पास में ही वैद्यजी के घर से दवा ला दो। ज्ञानचंद को उठना सुहा नहीं रहा था। सर्दी के कारण रजाई में दुबका पड़ा था। सोच रहा था क्या जल्दी उठना सर्दी में? गर्मी में भी आठ बज जाते हैं तो फिर सर्दी का तो कहना ही क्या? जगने का मन ही नहीं हो रहा था। पर जब माँ ने कहा तो फिर रजाई से निकला। उसे लगा कि उसका सारा शरीर प्रकम्पित हो रहा था। दरवाजा खोला तो हवा का ठण्डा झोंका आया। उससे उसका हौंसला पस्त हो गया- कैसे जाऊँ? कड़ाके की सर्दी है, नहीं जा पाऊँगा। पर माँ ने कहा है कि पिताजी बीमार है, कैसे कहूँ? वह असमंजस में पड़ा था। इतने में ही दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। उसने झट दरवाजा खोला तो देखा एक युवक द्वार पर खड़ा था। शरीर पर फटे-पुराने कपड़े थे। कंधे पर मात्र एक तौलिया था। न गरम कम्बल, न पूरे कपड़े। ज्ञानचंद की आँखों में कुछ चमक आ गई। पूछा- क्या बात है? आगंतुक युवक ने कहा- मैं दो दिनों से भूखा हूँ, भोजन नहीं किया है। भोजन की आशा से आया हूँ। ज्ञानचन्द ने देखा- मौका अच्छा है। मैं तो ठंड में जा नहीं सकता और इसे भूख लगी है, क्यों न इससे दवा मंगवाकर फिर भोजन दे दूँ। इसे भूख की गरज है और मेरा काम निकल जाएगा। उसने कहा- भाई! तुम्हें भरपेट भोजन देंगे, पर जो मैं कहता हूँ वह काम कर दो। पास में ही वैद्यजी का घर है, वहाँ से दवाई ला दो। उस फटेहाल युवक ने कहा- मैं भूखा हूँ, मेरी जान निकल रही है। पहले भोजन करा दो। ज्ञानचन्द ने कहा- पिताजी बीमार हैं, ज्वर से शरीर तप रहा है। उन्हें दवाई देनी है, पहले दवाई ला दो, फिर भोजन देंगे। क्या ऐसा होता है?

यह तो लाचार की लाचारी से लाभ उठाने की बात हुई। हम जानते हैं कि मौके का फायदा उठाने की कोशिश की जाती है, पर क्या यह उचित है ?

कवि आनन्दधन जी कह रहे हैं-

चरण कमल कमला बसे रे, निर्मल स्थिर पद देख।

व्यक्ति लक्ष्मी की आकांक्षा करते हैं। पूज्य गुरुदेव कई बार फरमाया करते हैं कि लोगों की आदत है, लक्ष्मीजी की तस्वीर ले आएं या काँच में मढ़ी हुई तस्वीर ले आएं और अगरबत्ती आदि जलाकर उसके सामने आरती उतारेंगे- **‘ओम जय लक्ष्मी मैया’**। आरती गाएंगे और सोच लेंगे अब हमारे घर सम्पत्ति आ जाएगी। यदि ऐसे लक्ष्मी आती होती तो भारत को गरीब देश की संज्ञा क्यों दी जाती ? न जाने कितने लोग इस महालक्ष्मी की मनौतियाँ करते हैं, पर वह रूठी ही रहती है, आती ही नहीं। वह आती है, पर कहाँ- **‘देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सयामणो’**। जहाँ धर्म रहता है, वहाँ तीर्थकरों की सेवा में **‘लक्ष्मीपति’** देव भी तत्पर रहते हैं, फिर वह तो पीछे-पीछे स्वयं चली आती है।

प्रभु महावीर की सेवा में स्वयं इन्द्र पहुँचे, निवेदन किया- भगवन्! आपको परीषह-उपसर्ग आते हैं। कोई कोड़े मारकर तो कोई कीलें ठोककर उपसर्ग पहुँचाता है। ये अनाड़ी समझते नहीं हैं। आप आदेश करें, हम सेवा में प्रस्तुत हैं। प्रभु ने कहा- शक्रेन्द्र! तुम्हारा धर्म के प्रति, शासन के प्रति अनुराग है, इसलिए तुम यह बात कह रहे हो। तुम्हारी भावना शुभ है, इसका तुम्हें लाभ मिलेगा। पर तीर्थकर स्वावलम्बी होते हैं। स्वयं कर्म काटने के लिए परीषहों का आह्वान करते हैं। जितना भी परीषह, उपसर्ग देना है, खूब दे दो ताकि जल्दी कर्म कट जाएं। इसलिए वे सहारा लेकर नहीं चलते। जहाँ धर्म का निवास है, वहाँ देव भी तत्पर हैं। फिर लक्ष्मी की तो बात ही क्या ? तब हम समझ लें कि यदि उस लक्ष्मी की आराधना करना है तो विवेकपूर्वक की जाए। यह आराधना भी भाव लक्ष्मी की करनी चाहिए। आप स्वयं

अपने हिसाब से सोचें कि भाव लक्ष्मी को कैसे प्राप्त करना है। मैं तो कहता हूँ प्रत्येक व्यक्ति इस हेतु प्रयास करे तो अच्छी बात है। सामर्थ्य है तो प्रयासरत रहना चाहिए। आमोद-प्रमोद से तो धन लक्ष्मी की दीपावली बहुत मनाई जाती है, पर प्रभु के पदचिह्नों पर चलकर भाव लक्ष्मी, आध्यात्मिक दीपमालिका का भी अनुभव करें कि उससे कैसे आनन्द की अनुभूति होती है। कवि कह रहे हैं- लक्ष्मी को पाने के लिए लोग उसके पीछे दौड़ते हैं, पर प्रभु वह लक्ष्मी तो आपके चरणों में लौटती है और आपको छोड़कर जाना ही नहीं चाहती।

प्रभु के अन्तराय कर्म का समूल नाश होने से पाँच शक्तियाँ प्रकट होती हैं- दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य की शक्तियाँ। ये शक्तियाँ जागृत होने पर दुनिया का कोई भी पदार्थ अप्राप्य नहीं रहता, पर प्रभु को उसकी आवश्यकता नहीं होती। जब तक व्यक्ति उसके पीछे दौड़ता है, लक्ष्मी की अपेक्षा रखता है, तब तक वह भी भागती जाती है। पर जैसे ही व्यक्ति मुड़ता है कवि कह रहे हैं- **‘चरण कमल कमला बसे रे’**। वह रुक जाती है। वह तो वहीं रहती है जहाँ निर्मलता देखती है। यदि मन में मलीनता है, कलुषित विचार हैं, अशुभ योग हैं तो वह वहाँ नहीं आएगी, टिकेगी नहीं। उसे चाहिए निर्मलता, स्थिरता।

आराधना कैसे करें, यह भी समझ लेने की बात है। आप कैसे करते हैं नहीं मालूम, पर जहाँ प्रभु के समवसरण में प्रभु स्वयं विराजमान हैं। अंतिम समवसरण में नवमल्ली, नवलच्छवी नरेश बेले की तपस्या करके आध्यात्मिक लक्ष्मी की पूजा कर रहे हैं। वह लक्ष्मी कठोर तपस्या से प्राप्त होती है। तीर्थकरों ने उसे प्राप्त किया। **‘गाणस्स सव्वस्स पगासणाए’** वह प्रकाश बाहर से नहीं आता, वह भीतर है। उसे सिर्फ प्रकट करना होता है। वे नरेश 48 घंटे के प्रतिपूर्ण पौषध से प्रभु के सान्निध्य में आध्यात्मिक लक्ष्मी की आराधना करते हैं। प्रभु की अंतिम देशना का रसपान करते हुए बैठे हैं। देखते ही देखते प्रभु निर्वाण को प्राप्त कर लेते हैं। वैसी

आराधना होती है भावलक्ष्मी की। आज व्यक्ति संपन्नता का प्रदर्शन करता है, खूब पटाखे छोड़ता है। अरबों रुपयों के पटाखे छोड़े जाते हैं, पर क्या फायदा? इससे तो लक्ष्मी प्रसन्न नहीं होती।

ज्ञानचंद ने युवक की लाचारी का लाभ उठाया। यद्यपि वह कह रहा था कि मेरे पैर नहीं उठ रहे हैं, पर वे नहीं पसीजे। भूखे को सर्दी भी ज्यादा लगती है। पेट में भोजन हो तो उसका आधार होता है, पर क्या करें? मन मसोस कर वह गया, दवा लेकर आया और ज्ञानचंद ने भी इंसानियत बरती और उसे भोजन करवाया। ज्ञानचंद व उसकी माता देख रहे थे कि यह गाँव का लड़का है। इसे ठंड भी नहीं लगती। मात्र एक तौलिया डाले हुए है। बलिष्ठ शरीर वाला है। यदि इसे नौकर रखें तो सर्दी में बाहर निकलना भी नहीं पड़ेगा। भोजन के पश्चात् पूछा— क्या तुम्हें नौकरी करनी है? उसने उत्तर दिया— हाँ! मैं तो नौकरी की तलाश में ही निकला था। एक दिन तो अपने साथ के साधनों से गुजारा किया था। साधन समाप्त हो गए, नौकरी नहीं मिली। वैसे मैं कोई भिखमंगा नहीं हूँ, पर पेट की ज्वाला बढ़ गई और मैं यहाँ भोजन की आशा से चला आया। यदि नौकरी मिल गई तो जरूर करूँगा। उसे रख लिया गया। शाम को उससे कहा गया— जाओ कुएँ पर गाय—भैंस को दुहकर आ जाओ। वह तत्परता से गया और दूध लेकर आ गया। रात्रि के समय सभी लोग कमरे बंद कर सोने लगे। ज्ञानचंद की माँ ने युवक से कहा— यहाँ बरामदे में सो जाओ। उसने कहा— बाहर मुझे ठंड लगेगी, एक कम्बल दे दो तो मैं बाहर रात बिता लूँगा, नहीं तो किसी कमरे में स्थान दे दो ताकि कम्बल नहीं भी हो तो भी रात बिता लूँ। उस सेठ की क्या बात करें, कई घरों में ऐसा प्रसंग उत्पन्न होता है। पर आज युग बदला है। आज तो कहते हैं— नौकर नहीं मिलता। कैसे मिलेगा? आपने उसकी लाचारी का खूब लाभ उठाया है तो अब वह आपकी लाचारी का लाभ उठाता है। शास्त्रों में वर्णन आता है कि पहले राजा व सेठ नौकर को

कौटुम्बिक पुरुष कहते थे अर्थात् अपने ही परिवार का सदस्य मानते थे। इसलिए जो आदेश वे देते थे नौकर भी दौड़कर उसे पूरा करते थे। व्यवहार क्षेत्र में यह जरूरी है। अस्तु, ज्ञानचंद ने कहा— जब सुबह तुम मेरे पास आये थे, उस समय तुम्हें ठंड नहीं लग रही थी, केवल एक तौलिया तुम्हारे पास था? उसने कहा— ठंड तो उस समय भी लग रही थी, पर जाना पड़ा क्योंकि मुझे पेट की ज्वाला को शांत करना था। पेट की आग बुझाने के पश्चात् दिन में तो धूप निकल गई थी, समय निकल गया। ज्ञानचंद ने कहा— शाम को भी तुम गाय—भैंस दुहने गये तब क्या ठंड नहीं लग रही थी। उसने उत्तर दिया— ठंड तो मुझे उस समय भी लग रही थी, पर उस समय कृतज्ञता का भाव था कि इन्होंने मुझे भोजन कराया है, अन्न से मेरे पेट की आग को बुझाया है तो मेरा भी नैतिक कर्तव्य है कि मैं इनका कार्य करूँ और मैं दूध निकालने चला गया। उस समय मैंने ठंड को नजरअंदाज कर दिया। इस समय न भूख लगी है न किसी प्रकार के प्रत्युपकार के भाव हैं। ऐसे समय में बाहर सोने पर ठंड लगेगी। ज्ञानचंद ने देखा— भले यह आफत का मारा है, पर इसकी बुद्धि निर्मल है। यदि इसे थोड़ा—सा सहयोग मिल जाए तो यह उत्थान भी कर सकता है। ज्ञानचंद के मन में करुणा जगी। वह कहने लगा— गोपाल! घबराओ मत, यह लो कमरे की चाबी और उसमें सो जाओ। ज्योंही उसने कदम बढ़ाया, ज्ञानचंद की माँ ने एक गरम कम्बल देते हुए कहा— लो गोपाल! यह कम्बल ओढ़ लेना। यह विवेक का जागरण था।

हम भी ज्ञानरूपी लक्ष्मी से भीतर के विवेक को जागृत करें फिर वह विवेक जीवन को उत्थान की ओर बढ़ाएगा। गोपाल को थोड़ा—सा सहयोग, स्नेह, वात्सल्य, प्यार मिला, वह सदा—सदा के लिए उस घर का सदस्य बन गया। जहाँ जान—पहचान नहीं थी, पर इंसानियत का तकाजा था; वह अपनत्व से जुड़ गया। प्रेम व कर्तव्य इस प्रकार आगे बढ़ाते हैं। लक्ष्मी को पाना है तो पहले कर्तव्य पर दृष्टिपात करें। दृढ़ता से आरुढ़ हों, विकट

परिस्थितियों में भी विचलित नहीं हों तो पथभ्रष्ट नहीं होंगे और सफलता प्राप्त हो सकेगी। हो सकता है, उस समय आपकी परीक्षा भी हो जाए। थोड़ी कठिनाई भी हो सकती है, लेकिन तभी व्यक्ति की पहचान होती है।

कहा गया है - 'दुःख है ज्ञान की खान, मनवा दुःख है ज्ञान की खान'। जिसने जीवन में दुःख नहीं देखा है, उसे सुख का स्वाद भी नहीं आ सकता। जिसने भूख का दर्द नहीं सहा, उसे सुख का स्वाद भी नहीं मिलेगा।

शांत-क्रांति के अग्रदूत स्वर्गीय गणेशाचार्य के जीवन का प्रसंग है। पाँच साधु विहार कर रहे थे। वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ शाकाहारी घर नहीं थे। अतः इस कारण गोचरी नहीं हुई। दूसरे व तीसरे दिन भी योग नहीं बैठा। शायद चौथे दिन संत दो गाँवों में गोचरी हेतु पधारे और ढाई रोटा ज्वार का, जो भी शायद एक दिन पुराना और साथ में मिली खट्टी छाछ। संत लेकर आए और चूरकर उसका मावा बनाया। वह मावा से कम थोड़े ही होगा। आचार्यश्री के शब्दों में वह भोजन पाँच संतों में वितरित किया गया। उसमें जो स्वाद था वह खोपरापाक, बादाम की कतली या गुलाब जामुन से कम होगा क्या? जिसने अनुभूति की है वही यह जान सकता है। व्यक्ति निरन्तर सब कुछ पेट में डालता ही रहे तो हानि ही होती है। मशीन भी ज्यादा भार पड़ने पर गड़बड़ी करने लग जाती है। आज तो पता नहीं, पर पहले बहनें घट्टी में थोड़ा-थोड़ा उरती थीं तो घट्टी आराम से चल जाती थी। मशीन निरन्तर प्रयोग में लेते रहें और तेल आदि न डालें तो काम कैसे चलेगा? हमारे ये पर्व मशीनरी में तेल आदि डालने के लिए ही हैं।

इस संदर्भ में दीपमालिका की बात भी कह दूँ। आध्यात्मिक भाव लक्ष्मी को पाने के लिए प्रभु के चरणों को पकड़ लें। प्रभु के चरणों में तो वह लक्ष्मी लोट ही रही है। साथ ही विवेक को जागृत करें, जिससे सुंदर समन्वय बने। इस प्रकार निर्मलता आएगी और तब सुख-सम्पत्ति स्वयंमेव चली आएगी। पहले अज्ञान व मोह का विसर्जन

आवश्यक है तभी वहाँ निर्मलता व स्थिरता आएगी। डाँवाडोल स्थिति में विवेक का जागरण नहीं होगा। लक्ष्मी भी परीक्षा लेती है कि यह कच्चा है या पक्का? दृढ़ता को धारण करें। कर्तव्य-अकर्तव्य को समझकर आगे बढ़ें तो ज्ञान का वह आलोक भीतर प्रस्फुटित होगा, जो जीवन को प्रकाश से परिपूर्ण कर लेता है।

साभार- श्री राम उवाच-4 (दो कदम सूर्योदय की ओर)

भक्ति रस

जीवन संवार रहे

- मेघना तातेड़, जयपुर

पाँच दशकों का यह अद्भुत सफर,
आध्यात्मिक पथ पर चला उनका कदम।
दीक्षा की आस्था में बसा एक संसार,
आचार्य प्रवर, परमात्मा के अवतार।
साधना से साध्य तक के हर एक पथ पर,
चलकर उस पथिक ने दिखाया सत्य का यथार्थ।
कभी दुःखों को, कभी संतोष को पाया,
हर परिस्थिति में, समभाव रखा।
सद्गुरु के आशीर्वादों से पावन हुआ मन,
साधना की राह में बसा शांति का गगन।
आध्यात्मिक ऊर्जा से सजे हर कदम,
आचार्यश्री के मार्ग पर चलता हर जन।
उनकी दीक्षा, जैसे आकाश का विस्तार,
आध्यात्मिक ज्ञान से भरा हुआ संसार।
आशीर्वादों की जो पाई है यह धारा,
चरणों में बसा है शांति का सितारा।
आचार्य प्रवर के 50 वर्षों का यह सम्मान,
साधुमार्गी संघ की यह अद्वितीय पहचान।
कृतज्ञता से हम सिर झुका रहे हैं,
उनके उपदेशों से जीवन संवार रहे हैं।

आध्यात्मिक आरोग्यम्

आत्मानुशासन

— संकलित

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा जन-जन के चिंतन हेतु अमूल्य आयाम 'आध्यात्मिक आरोग्यम्' ब्यावर की पुण्यधरा पर सन् 2021 को ज्ञान पंचमी के दिन प्रदान किया गया था। यह आयाम धारावाहिक के रूप में आप सभी के समक्ष आत्मकल्याण के लक्ष्य से प्रस्तुत कर रहे हैं। इसे जीवन में उतारकर अपने जीवन की आध्यात्मिक आरोग्यम् की ओर उन्मुख करें।

अनुशासन में जो रहे,
करता नित्य विकास।
अनुशासित श्रीसंघ हो,
कहते गुरु महाराज॥

15-16 मार्च 2025 अंक से आगे...

त्वचा में इतनी अद्भुत क्षमताएँ भरी पड़ी हैं कि यदि उन्हें विकसित कर लिया जाए तो वह अन्य इंद्रियों का काम भी कर सकती है। त्वचा के द्वारा देखा जा सकता है, सूँघा जा सकता है, सुना जा सकता है, स्वाद लिया जा सकता है और स्पर्श तो उसका प्रमुख कार्य है ही।

1. मास्को में 22 वर्षीया कुमारी रोजा कुलेशोवा ने अपने दाहिने हाथ की तीसरी व चौथी अंगुली में दृष्टि शक्ति की विद्यमानता का परिचय दिया है। उसने अपनी आँखों पर पट्टी बंधवाकर वैज्ञानिकों के सामने अपनी इन दो अंगुलियों द्वारा समाचार-पत्र का एक पूरा लेख पढ़कर सुनाया और फोटो को पहचाना।

2. एक 9 वर्षीय लड़की में यह शक्ति और भी बढ़ी-चढ़ी है। यह लड़की खार्कोब की श्रीमती ओलगा ब्लिजनोवा की पुत्री है। उसने आँखों पर पट्टी बँधी होने पर हाथ से छूकर शतरंज की काली-सफेद गोटियों को अलग-अलग कर दिया, रंगीन कागजों की कतरन की रंग के अनुसार अलग-अलग ढेरी बना दी, रंगीन किताबों को पढ़ लिया। उसने बाँह, कंधा, पीठ, पैर आदि शरीर के अन्य अवयवों से छूकर भी वैसे ही परिणाम प्रस्तुत किए। इतना ही नहीं, वह दस सेंटीमीटर दूर रखी वस्तुओं के रंग आदि उसी प्रकार बता देती है, जैसे हम लोग खुली आँखों से बताते हैं।

इन परीक्षणों से मनोविज्ञान शाखा के वरिष्ठ शोधकर्ता प्रो. कोन्स्टाटिन प्लातोनोव इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मानवीय चेतना-विद्युत की व्यापकता को देखते हुए इस प्रकार की अनुभूतियाँ अप्रत्याशित नहीं हैं। नेत्रों में जो शक्ति काम करती है, वही अन्यत्र ज्ञानतंतुओं में काम करती है, उसे विकसित करने पर मस्तिष्क को वैसी ही जानकारी मिल सकती है, जैसी नेत्रों से मिलती है।

जैन शास्त्रों में संभिन्न स्रोत लब्धि बताई है, जो इन सबसे ज्यादा जागृत और चमत्कारी है।

जैन दर्शन के अनुसार इन सारी शक्तियों के ढके रहने का कारण कर्मों का आवरण है। आत्मानुशासन से उस आवरण में कमी लाकर हम ऊपर लिखे गए चमत्कारों को अपने अंदर भी अनुभव कर सकते हैं।

ऊर्जा का भंडार कोई बालक कभी अपने समय को व्यर्थ में जाया करता है और कभी वही किसी विषय में आगे बढ़ता है तो विशेषज्ञ बन जाता है। प्रायः बच्चों में खटर-पटर करने की आदत होती है। वे खिलौनों को तोड़ देते हैं। उसके पार्ट्स को अलग-अलग कर देते हैं। कम ही बच्चे ऐसे होते हैं, जो यह सब नहीं करते। अधिकतर बच्चे ऐसा करते ही हैं, परंतु उनमें से कितने मैकेनिकल इंजीनियर, सिविल इंजीनियर और साइंटिस्ट बन पाते हैं! आखिर मैकेनिकल और सिविल इंजीनियर या साइंटिस्ट खटर-पटर ही तो करते हैं। वे भी चीजों को इधर-उधर करते हैं। पर उसे खटर-पटर नहीं कहते। उसे शोध (रिसर्च) कहते हैं। उनका कार्य अनुशासित होता है और उसमें एक दिशा होती है।

केदारनाथ की घटना से अभी तक हमारा मुल्क उबर नहीं पाया था कि जोशीमठ की दरारें वैश्विक समस्या का सबब बनकर उभरी हैं। इससे हमें यह समझने को मिलता है कि जब तक हम अनुशासन में रहते हैं तभी तक अपना और दूसरों का हित कर पाते हैं। जैसे ही अनुशासन के तटबंधों को तोड़ते हैं वैसे ही भयानक रूप देखने को मिलता है। मनुष्य को शक्तिपुंज और ऊर्जापुंज कहा गया है। जब तक व्यक्ति उस शक्ति को नहीं समझ पाता, तब तक वह दुखी रहता है। शक्ति को समझने के बाद भी उसका अनुशासित तरीके से उपयोग न कर पाने के कारण वह यथोचित परिणाम नहीं दे पाता। कोई व्यक्ति एक घंटे में यदि 20 पेज पढ़ता है तो एक हफ्ते में 140 और एक महीने में 560 पेज पढ़ेगा। इसी अनुपात से एक साल में 6720 पेज और दस साल तक लगातार पढ़ने पर 67200 पेज पढ़ लेगा। 50 साल तक यह कार्य करने

का परिणाम 336000 पेज पढ़ने के रूप में पाएगा। कोई एक दिन में एक श्लोक भी याद करे तो एक साल में 365 श्लोक याद हो जाएंगे। 2 साल में गीता पूरी हो जाएगी और 4 साल में उत्तराध्ययन। 40 साल में 32 शास्त्र पूरे हो जाएंगे। कोई रोज की 20 माला फेरे तो 2 महीने में सवा लाख का नवकार जाप हो जाएगा। इस तरह सवा करोड़, सवा अरब की संख्या भी पूरी हो सकती है।

कोई व्यक्ति 10 पृष्ठ रोज लिखे तो साल में 3650 पृष्ठ और दस साल में 36500 पृष्ठ लिख लेगा। कोई एक गीत रोज बनाए तो 10 साल में उसकी रचनाधर्मिता क्या से क्या कर सकती है। आचार्य श्री रामेश इसके बहुत बड़े उदाहरण हैं। उन्होंने एक-एक पन्ना लिखकर अब तक अनेक भजन, दोहे, चौपाई, कविता के द्वारा साहित्य को समृद्ध किया है। उनके चिंतन के पृष्ठ अनेक के जीवन बदलने वाले बने हैं। गुरुदेव निरंतर लिखते हुए देखे जाते हैं।

15 दिन में एक उपवास करने पर साल के 24 उपवास होते हैं। एक आयंबिल करने पर साल के 24 आयंबिल होते हैं। एक एकासन करने पर साल के 24 एकासन होते हैं। इस तरह एक-एक उपवास करते-करते मासखमण और मासखमण करते-करते अपने जीवन में 64 साल की उम्र में 98 मासखमण करने वाले महान संत श्री अशोक मुनि जी म.सा. जिनशासन के एक अनुपम रत्न हुए हैं। आत्मानुशासन का नायाब उदाहरण हैं वीरेंद्र मुनि जी म.सा.। उन्होंने अपने जीवनकाल का अधिकतम हिस्सा संतों की सेवा में लगा दिया। तन-मन अर्पित कर दिया। वे श्री इंद्रचंद्र जी म.सा. (इंद्र भगवान) के साथ छाया की तरह लगे हुए थे। उन्होंने संस्कृत का गहरा अध्ययन किया। काव्य रचना में वे सिद्धहस्त हैं। कितना आत्मानुशासन होगा उनका कि उन्होंने अपनी सारी इच्छाओं को गौण करके सिर्फ और सिर्फ सेवा को ही अपने जीवन का ध्येय बना लिया। उच्चकोटि के विद्वान होने के बावजूद आपश्री सरल सहज व्यक्तित्व के धनी हैं।

आत्मानुशासन द्वारा अनगिनत क्षेत्रों में सफलता

अर्जित की जा सकती है, परंतु इसका अभाव होने से अधिकांश लोग कुछ नहीं कर पाते। सफलता शक्ति से नहीं बल्कि निरंतरता से मिलती है। निरंतरता आती है आत्मानुशासन से। प्रायः हममें आत्मानुशासन का अभाव होता है। हम वे लोग हैं जो नए वर्ष की शुरुआत में कुछ नियम बनाते हैं पर दूसरे हफ्ते तक पहुँचते-पहुँचते उन नियमों को भूल जाते हैं, फलस्वरूप कुछ नहीं कर पाते। एक सामायिक रोज करने वाला साल में 365 सामायिक करता है। एक लाइन रोज याद करने वाला बहुत जल्दी सामायिक और प्रतिक्रमण याद कर सकता है।

ऐसी बहुत-सी चीजें हैं, जिनसे हम लाभान्वित नहीं हो पाते। लाभान्वित नहीं होने का कारण है आत्मानुशासन का अभाव। आत्मानुशासन का अभाव दुर्गुण है। ऐसा दुर्गुण जो बड़ी से बड़ी प्रतिभा को खोखला कर देता है। मेधावी लोग भी आत्मानुशासन के अभाव में जीवन में कुछ नहीं कर पाते। जिनके जीवन में बड़ी से बड़ी सफलता जुड़ सकती थी, जिनके नाम के साथ सफलता का उल्लेख हो सकता था, आत्मानुशासन के अभाव में ऐसा नहीं हो पाता।

‘चित्तनदी उभयतो वहति, वहति पुण्याय पापाय च’

चित्त को नदी की संज्ञा दी गई है। जैसे नदी बहती है, वैसे ही चित्त भी बहता है। जैसे नदी में उफान आता है, वैसे ही चित्त में भी उफान आता है। जैसे नदी में उतार आता है, वैसे ही चित्त में भी उतार आता है। जैसे नदी पर बाँध बनाकर उसे लोक कल्याणकारी बनाया जा सकता है, वैसे ही चित्त को अनुशासित करके आत्महितकारी कार्य भी किए जा सकते हैं।

सांसारिक क्षेत्र में मिलिट्री का उदाहरण दिया जाता है कि मिलिट्री से जुड़े लोग जबरदस्त अनुशासित होते हैं। उनका हर कार्य निर्धारित समय पर होता है। उससे जुड़े लोग समय के पाबंद होते हैं। अनुशासित बनकर आध्यात्मिक क्षेत्र में भी हम बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। समय का सदुपयोग और सावधानी बहुत आगे बढ़ा देती है।

नाना गुरु की दिनचर्या बहुत सधी हुई थी। उनका सब कुछ तय समय पर होता था। शय्या त्याग, फिर व्यायाम, प्राणायाम, शीर्षासन, ध्यान, प्रतिक्रमण, नवकारसी, प्रवचन, वाचनी, रात्रि प्रश्न-उत्तर, पठन-पाठन, चिंतन-मनन, सब कुछ समय से। इसी की बदौलत वे समाज हितकारी अनेक कार्य पर पाए। आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. का तो दिन तय था कि इस दिन इस धर्म के ग्रंथ को पढ़ना है। तभी उन्होंने जैन-अजैन ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया। उन्होंने ‘गीता रहस्य’ जैसे ग्रंथ की समीक्षा उसके लेखक बाल गंगाधर तिलक की मौजूदगी में प्रवचन में हजारों जनता के समक्ष प्रस्तुत की। समीक्षा सुनकर बाल गंगाधर तिलक भी आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने अपने चिंतन से जनमानस को आंदोलित कर दिया। युग चेतना में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।

गुरुदेव श्रीलाल जी म.सा. 45 वर्ष की उम्र तक रोज एक नया बोल सीखते थे। दुर्लभ जी भाई जवेरी उनकी जीवनी में लिखते हैं कि आचार्यश्री सधी हुई दिनचर्या के स्वामी थे। नियमित स्वाध्याय, जाप, सूत्र पारायण, थोकड़ों का पुनरावर्तन होता ही था। आचार्य पद पर आसीन होने पर भी उन्होंने कई नए ग्रंथों की वाचना ली।

आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. ने 30 आगम के टब्बे लिखे। 16 साल के छोटे से काल में उनकी अप्रमत्त साधना आज तक हमारे लिए प्रकाश स्तंभ बनी हुई है। यह आत्मानुशासन का ही प्रतिफल है। संघशास्ता शासन प्रभावक श्री सुदर्शनलाल जी महाराज के जीवन से अनेक लोगों ने प्रेरणा पाई थी। पं. हस्तीमल जी म.सा., पूज्य समरथमल जी म.सा. की अनुपमश्रुत सेवा आत्मानुशासन का ही सुफल है।

आत्मानुशासन एक ऐसा साँचा है, जिसमें मन को ढालकर मनुष्य अपनी ऊर्जा से बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है, पर अपनी शक्तियों को जानते हुए भी वह उसका समायोजन नहीं कर पाता। फलस्वरूप अभीष्ट परिणाम नहीं प्राप्त होता। यदि हम हमारी शक्ति का 20 प्रतिशत भी उपयोग कर लें तो समाज को बहुत कुछ दे

सकते हैं और खुद भी संतुष्ट हो सकते हैं।

आवश्यकता है आत्मानुशासन को समझने की। आत्मानुशासन का अर्थ है कि आप खुद अनुशासित बनें। कोई दूसरा क्यों आप पर अंकुश लगाए? क्यों कोई दूसरा आपको टोके? यूँ कह दें कि अनुशासित व्यक्ति ऐसा कार्य ही नहीं करता है, जिससे उसे दूसरा कोई टोके। ऐसा भी कह सकते हैं कि उससे ऐसा कार्य होता ही नहीं है। अनजाने में भी उसके मुँह से अपशब्द नहीं निकलेंगे। उसकी काया से अकृत्य नहीं होगा। स्वप्न में भी वह स्वयं को अनुशासित रूप में देखेगा।

अनुशासन अर्थात् शास्त्र के अनुसार चलना।

अनुशासन अर्थात् गुरु के अनुसार चलना।

अनुशासन का मतलब है सिस्टम के अनुसार चलना।

सामाचारी के अनुसार चलना।

गुरु के इंगित इशारों को समझना।

गुरु द्वारा अनुशासित करने पर क्रोधित नहीं होना।

आदेशों-निर्देशों के प्रति अंतर्मन से समर्पण भाव धारण करना।

ऐसे समर्पण भाव का नायाब उदाहरण है आचार्य श्री उदयसागर जी म.सा. के एक शिष्य द्वारा आचार्यश्री से किया गया निवेदन।

श्री उदयसागर जी म.सा. ने अपने एक शिष्य से पूछा कि क्या खाओगे?

शिष्य कहता है, आप जो खिलाएँगे।

गुरुदेव पूछते हैं कि क्या पहनोगे?

शिष्य कहता है, जो आप पहनाएँगे।

गुरुदेव पूछते हैं कि कहाँ जाओगे?

शिष्य कहता है, आप जहाँ भेजेंगे।

गुरुदेव पूछते हैं कि क्या पढ़ोगे?

शिष्य कहता है, आप जो पढ़ाएँगे।

गुरुदेव पूछते हैं कि कहाँ रहोगे?

शिष्य कहता है, आप जहाँ रखोगे।

इसका मतलब है पूर्णरूपेण समर्पण। मेरा कुछ नहीं है, सब कुछ आपका है। मुझे आपके अनुसार चलना है। एक शिष्य 21 बार बुलाने पर भी आता रहा। गलती नहीं होने पर भी शिष्य डॉट सुनता रहा। ये आत्मानुशासन के उत्कृष्ट नमूने हैं।

भगवान फरमाते हैं कि इच्छा का निरोध करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। आचार्य उमास्वाति कहते हैं कि इच्छा का निरोध करना ही तप है। अनुशासन के ऊपर हजारों किताबें हैं। कई ऑडियो-वीडियो हैं, जिन्हें हम सुनते-देखते हैं। हमें अच्छा भी लगता है। कुछ दिन हम उनमें बताई गई बातों पर अमल करते हैं, पर थोड़े दिनों बाद वह सिलसिला थम जाता है।

क्यों थम जाता है?

इसलिए थम जाता है क्योंकि जो पढ़ा, सुना या देखा, वह सब उधार था। वह आत्मानुशासन में रूपांतरित नहीं हुआ। ध्यान देना है कि अनुशासन और आत्मानुशासन में बुनियादी फर्क होता है। उस बुनियादी फर्क को जान लें।

अनुशासन थोपा जाता है, जबकि आत्मानुशासन प्रकट होता है।

अनुशासन सिखाया जाता है, जबकि आत्मानुशासन दिखता है।

अनुशासन कुछ दिन रहता है, जबकि आत्मानुशासन शाश्वत होता है।

अनुशासन शब्दों और बातों में होता है, जबकि आत्मानुशासन धड़कन और साँसों में होता है।

अनुशासन तनाव देता है, जबकि आत्मानुशासन निर्भर बना देता है।

अनुशासन अर्थात् कोई न देखे तब तक, जबकि आत्मानुशासन मतलब सदा सर्वदा।

अनुशासन में व्यक्ति मुखौटा ओढ़ लेता है। इसका मतलब है कि वह तब तक सही है जब तक कोई देख रहा है। जैसे ही लोगों की नजर उस पर से हटती है वह बेकाबू हो जाता है। ये अनुशासन का दुष्प्रभाव है। इसके

कारण संयम और नियमों का बहुत मखौल उड़ा है। ऐसे लोग धर्म के नाम पर ढोंग करते हैं। लोगों की नजर में वे धार्मिक दिखते हैं पर वास्तव में होते नहीं।

अनुशासन व्यवस्थाओं को तोड़ने की प्रेरणा देता है, जबकि आत्मानुशासन व्यवस्था को आत्मसात कर लेता है।

अनुशासन से दबाव पैदा होता है। दबाव, तनाव लाता है। तनाव से अवसाद पैदा होता है। अवसाद, मन को आत्महत्या तक पहुँचा देता है।

आत्मानुशासन खुलेपन की ओर ले जाता है। खुले मैदान की ओर ले जाता है, जिधर व्यक्ति अपनी गति से गति करता है। नई सोच उत्पन्न करता है। शास्त्रों में विनीत शिष्य को अश्व की उपमा दी गई है। ऐसा अश्व जो कभी चाबुक की मार नहीं खाता। जैसे ही मालिक चाबुक उठाता है या चाबुक उठाने की सोचता है वह तदनुसार अपनी गति व प्रवृत्ति करता है। महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक के लिए कहा जाता है कि वह उनकी आँखों को पढ़ता था। मन के भावों तक को समझ लेता था, लगाम खींचना तो दूर रहा। यह आत्मानुशासन है।

श्री दशवैकालिक सूत्र में विनीत, अविनीत का वर्णन करते हुए बताया गया है कि विनीत पुरुष, तिर्यंच और देवता कैसे शुभ फलों को प्राप्त करते हैं। उनकी कैसी महिमा होती है। फौज के कुत्ते एकदम ट्रेंड होते हैं। पुराने जमाने में कबूतरों को प्रशिक्षित किया जाता था। वे समय और परिस्थिति के अनुसार कार्य को साधते थे।

वृक्ष की शाखा-प्रशाखा, पत्तियाँ, फूल, फल बाहर निकलने दो। उसमें कुछ भी थोपने की कोशिश न करो, क्योंकि वह जो बनने वाला है बीज में डिसाइड हो चुका है। पूरा का पूरा ढाँचा बीज में फिट है। आप उसमें कोई बदलाव नहीं कर सकते। यदि करेंगे तो आपको और पौधे, दोनों को हानि झेलनी पड़ेगी।

**बच्चों के नन्हें हाथों को, चाँद ब्रिस्ताखे छूने दो।
चाख किताबें पढ़कर ये भी, हम जैसे हो जाएँगे।।**

किसी को बचपन में अनुशासित कर सकते हैं।

गर्भावस्था और बाल्यावस्था बीज की अवस्था है। तदनुसार उसके भविष्य का निर्माण होगा। बड़ा होने के बाद उसका आत्मानुशासन ही काम आएगा। बड़ा होने पर आप कुछ समझाने जाएँगे तो बात बनने की जगह बिगड़ेगी। दुर्योधन, कंस, रावण, हिटलर, मुसोलिनी, चंगेज खाँ, इदी अमीन, लादेन की क्रूरता का कारण कहीं न कहीं उनको बचपन में दिए गए संस्कार ही हैं। बाल्यावस्था अनुशासन की होती है। जब अनुशासन धीरे-धीरे आत्मा में रम जाता है, तब उसे आत्मानुशासन कहा जाता है।

अवचेतन मन में जो संस्कार घर कर जाते हैं वही पूरे जीवन को संचालित करते हैं। बचपन से शाकाहारी व्यक्ति मांसाहार देखना भी पसंद नहीं करेगा। इसलिए हमारे बुजुर्गों ने छुआछूत का नियम बनाया था कि जो लोग अभक्ष्य का सेवन करते हैं, उनके साथ कोई व्यवहार नहीं करना। भोजन आदि का परहेज करना। उनके साथ एक थाली में खाना नहीं खाना। ऐसे बिंदु अपने प्रारंभिक अवस्था में बहुत सही अर्थ लिए हुए थे। कालांतर में इनका रूप विकृत हो गया। हमें देखना है कि हम कितने आत्मानुशासित हैं।

पुराने जमाने में गुरुकुल अध्ययन शैली हुआ करती थी। गुरुकुल में विद्यार्थियों के संस्कारों पर काम किया जाता था। उनके आंतरिक गुणों के विकास की प्रेरणा दी जाती थी। उस समय प्रायः 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य में रहकर प्रकृति के साथ जीवन यापन करते हुए शिक्षा प्राप्त करते थे। जीवन के पहले 25 वर्ष तक की गई मेहनत उन्हें बलिष्ठ बनाती थी। बलिष्ठ शरीर, स्वस्थ मन और भावुक हृदय प्रदान करता था। 25 साल तक अनुशासन में रहने वाले की बात ही कुछ अलग होगी। उसके व्यक्तित्व का निखार ही कुछ अनूठा होगा। गुरुकुल शिक्षण पद्धति से ऐसे-ऐसे वीर, शील-संपन्न पुरुष हुए जिन्होंने भारतीय संस्कृति का नाम रोशन किया।

वीर दुर्गादास पर औरंगजेब की बेगम मोहित हो गई, किंतु दुर्गादास अपने नियम पर दृढ़ रहे।

चंदनबाला की माता ने शील की रक्षा के लिए

अपने पेट में खंजर घोंप लिया।

वनराज चाबड़ा की माँ ने अपने शील की रक्षा के लिए जीभ खींचकर आत्महत्या कर ली।

मेवाड़ के महाराणा चूंडा ने पिता के वचन की खातिर आजीवन विवाह नहीं करने का प्रण किया। उन्हें उस युग का भीष्म कहा जाता था। आनंद शर्मा ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'अमृत पुत्र' में इस घटना का मार्मिक चित्रण किया है।

वीर पृथ्वीराज चौहान ने ध्वनि के आधार पर मुहम्मद गोरी को मार गिराया। यह गुरुकुल के संस्कारों का ही सुफल है। उससे आत्मानुशासन पैदा होता है।

गुरुकुल अध्ययन प्रणाली के प्रभाव से ही हेमचंद्राचार्य ने साढ़े 3 करोड़ श्लोकों की रचना की।

हरिभद्र सूरी ने 1444 ग्रंथ बनाए।

बप्पभट्टी ने सरस्वती को सिद्ध कर लिया।

अभयदेव सूरी ने 9 अंगों की टीका बनाई।

धर्म सिंह जी म.सा. ने 32 आगमों की टब्बा लिखी।

दौलतराम जी म.सा. ने दिल्ली से गुजरात तक धर्म प्रवर्तन किया। शंकराचार्य ने 32 साल की छोटी वय में अद्भुत परचम फहराया।

आचार्य श्री नानेश ने प्रमेय कमल, मार्तंड और ब्रह्मसूत्र के शांकर भाष्य का अध्ययन किया।

आचार्य आनंद ऋषि जी ने 80 साल की उम्र में फारसी भाषा पढ़ी।

मुनि जंबूविजय जी ने द्वादशारण्य चक्र ग्रंथ का तिब्बतियन से संस्कृत में अनुवाद किया। मुनिश्री अनेक देशी-विदेशी भाषाओं के जानकार थे। 90 वर्ष की उम्र तक जिनशासन की श्रुत सेवा करते रहे।

मुनि पुण्यविजय जी ने जैसलमेर जैसे शहर में रहकर भयंकर गर्मी और परीषहों को सहकर ज्ञान भंडार को सुरक्षित करने का प्रयास किया।

विवेकानंद के साथ उसी समय अमेरिका में सर्वधर्म सम्मेलन में जैन धर्म ध्वज फहराने वाले शासन प्रभावक

भाई श्री राघव जी वीर जी गांधी ने पश्चिम को जिनशासन से परिचित कराया। विशेषज्ञों का मानना है कि उनकी प्रतिभा, वाग्मिता और विचक्षणता अतुलनीय एवं अप्रतिम थी। यह गुरुकुल शिक्षा का ही प्रभाव है।

जैन जगत के अद्भुत विद्वान डॉ. सागरमल जैन ने अनेक ग्रंथों का लेखन किया। साथ ही सैकड़ों लोगों को शोध करवाया।

पंडित धीरज भाई 90 वर्ष की उम्र तक न्याय पढ़ाते रहे।

पन्यास आचार्य चंद्रशेखरविजय जी ने कमरतोड़ मेहनत करके न्याय का अभ्यास किया।

मुनि भक्तियशविजय जी ने गूढार्थ तत्वालोक पर 14 भागों में टीका लिखकर संस्कृत जगत एवं न्याय जगत को चकित कर दिया।

उपाध्याय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने 6 महीने में 'सिद्धांत कौमुदी' जैसे ग्रंथ का गहरा अभ्यास किया। आपने 6 दिन में 6 कर्म ग्रंथ का आगम, टीका, टब्बा, भाष्य, चूर्ण का गहरा अध्ययन कर महान श्रुत सेवा की। समय के एक-एक क्षण का उपयोग करना, आत्मानुशासन में रहना कोई इनसे सीखे।

साधु-साध्वियों के साथ-साथ श्रावक-श्राविका भी आत्मानुशासन द्वारा जिनशासन का गौरव बढ़ा रही हैं। विदुषी श्राविका रत्न श्रीमती कंचन देवी कांकरिया ने भगवती सूत्र पर 10,000 से ज्यादा प्रश्न बनाकर अनुपम श्रुतसेवा की और अनेक साधु-साध्वियों को अध्ययन करवाकर महान लाभ का कार्य किया। कोई तो उन्हें साक्षात् सरस्वती-सा मानते हैं। लोग उनकी तुलना लता मंगेशकर से करते हैं। मधुरवाणी में पढ़ाती हुई कंचन देवी सरस्वती-सी प्रतीत होती हैं। हुआ यूँ कि एल.एम. म्यूजिक के शुभारंभ के अवसर पर मशहूर वीणावादक पंडित विश्वमोहन भट्ट का प्रोग्राम रखा गया था। वे कहते हैं कि मैंने उस समारोह में पहली बार लता जी को देखा और साष्टांग प्रणाम किया। तब वे कहने लगीं कि मैं

इतनी बड़ी नहीं हूँ। मैंने कहा कि ये हमें मालूम है कि आप कितनी बड़ी हैं। आप साक्षात् सरस्वती-सी हैं। ऐसे ही कंचन देवी भी प्रतीत होती हैं।

अनेक श्रावक-श्राविका, बिजनेस, फैक्ट्री, जॉब की मसरुफियत के बावजूद अपना समय संघ, समाज एवं शासन की सेवा में प्रदान करते हैं। भाई पुरण सुराणा, आदित्य पिरोदिया और उनकी टीम ने श्रुत का अभ्यास करके संघ का गौरव बढ़ाया। मुंबई की प्रभा देवी ललवानी, कोलकाता की श्वेता बच्छावत ने कर्म सिद्धांत में अपनी पैठ बनाई और शासन सेवा कर रही हैं। इरोड की अनिता गोलछा, कोलकाता की सीमा सेठिया, स्तोक के द्वारा संघ गौरव बढ़ा रही हैं। दिल्ली की शांति देवी सांड ने संपूर्ण उत्तराध्ययन सूत्र कंठस्थ कर समय सार्थक किया। जयपुर निवासी मंजू देवी भंडारी उत्तराध्ययन ए बी सी डी की तरह बोलती हैं। हर दिल अजीज महेश नाहटा से कौन अपरिचित है, जिन्होंने देश-विदेश में जैन धर्म, शाकाहार और आचार्य श्री रामेश के सिद्धांतों को पहुँचाया। आपकी आवाज और शैली के लोग मुरीद हैं। दिल्ली के शांतिलाल कोठारी 80 वर्ष की उम्र में स्वाध्याय करते हैं और भक्ति के श्लोक एवं स्तोत्र याद करते हैं। ऐसे श्रावकरत्न शासन की निधि हैं।

ये न सोचें कि हमें थोके पढ़ने में रुचि नहीं है तो हम ज्ञानी नहीं बन सकते हैं। ज्ञान के अनेक मायने हैं। अनेक विधाएँ हैं। भगवान ने शास्त्रों को चार अनुयोगों में विभाजित किया है। आपको जिसमें रुचि हो उसको पढ़ें। उसके ऊपर मेहनत करें। ईमानदारी के साथ उसमें सप्ताह के आठ घंटे दें। जैन साहित्य भरा पड़ा है। कथा साहित्य भरा पड़ा है। जैन ज्योतिष, जैन भूगोल, जैन वास्तु, जैन गणित, जैन आहार, विज्ञान क्या नहीं है। एक बात और, हर साल के 5 हजार रुपए जैसी छोटी राशि साहित्य में निवेश करें। इतनी राशि तो आप किसी होटल में एक बार जाकर उड़ा देते हैं। आपके घर पर एक ग्रंथालय होना चाहिए। किताबें होंगी तो पढ़ेंगे न। होगी तो कम से कम देखेंगे तो।

अनेक शहरों में पुस्तक मेले लगते हैं। साहित्य उत्सव होते हैं। आप वहाँ पहुँचें। दिल्ली में हर साल पुस्तक मेला लगता है। विश्व साहित्य वहाँ उपलब्ध होता है। आपके घर पर अच्छा साहित्य होगा तो आपके बच्चे पढ़ेंगे अन्यथा वे जासूसी और फिक्शन पढ़कर अपने जीवन को तबाह करने में लगेंगे। जैन कथा साहित्य, जैन उपन्यास सभी कुछ है हमारे पास। आगे आएँ और उसे जानने-समझने की कोशिश करें।

विश्व पटल पर देखने से पता चलेगा कि जैन साहित्यकारों का प्रायः अभाव है, जबकि हमारे यहाँ पर 99% साक्षरता है। इतनी साक्षरता के बावजूद क्यों विख्यात ट्रेनर, स्पीकर, लेखक, वक्ता, कथावाचक नहीं हैं। साधु की अपनी मर्यादा है, परंतु गृहस्थ वर्ग क्या कर रहा है? क्या आपकी इतनी पहुँच भी है कि आप पुलिस महकमे, लाल फीताशाही और लालबत्ती तक मुनियों को पहुँचाएँ। यदि है तो मुनियों के पास लाएँ। यह भी धर्म प्रभावना का एक रूप है। 8 प्रकार से प्रभावना हो सकती है। आप ये देखें कि आप कैसे कर सकते हैं। क्या आपने कभी अखबार में कोई लेख लिखा? क्या कभी ज्वलंत मुद्दे पर चर्चा करने की कोशिश की? आजकल शाकाहार-मांसाहार पर बहुत बहस हो रही है। इस पर बहस हो रही है कि अंडा शाकाहारी है या नहीं! चमड़े का प्रयोग, वीगन (Vegan) और शाकाहार में क्या फर्क है। इस प्रकार के कई मुद्दे हैं जिस पर काम किया जा सकता है। गुजरे दौर में संधारे पर बहुत बहस हुई। आपने कुछ किया या नहीं! समय निकालें। जैन तत्त्वों को समझने के लिए समय निकालें।

एक व्यक्ति एक मुनि के पास गया और कहने लगा कि आपने बाइबिल पढ़ी है, बहुत महान किताब है। मुनि ने पूछा कि आपने उत्तराध्ययन पढ़ा? उसने कहा, नहीं। जब पढ़ा नहीं तो अब कैसे होगी तुलना। तुलना तो अध्ययन से ही होगी। पढ़ेंगे तो हो पाएगी।

आपके घर में डायनिंग रूम है, किचन है, बेडरूम है, गेस्ट रूम है, लैट-बाथ है। सब कुछ तो है पर लाइब्रेरी है या नहीं? स्वाध्याय कक्ष है या नहीं? स्टडी टेबल है या

नहीं? राइटिंग टेबल है या नहीं? नहीं है तो कैसे जी रहे हो? क्या है आपका उद्देश्य? क्या है आपका लक्ष्य? ऐसे जीने का क्या फायदा? ऐसे यदि 50 साल भी जीते रहेंगे तो क्या हासिल होगा?

हम सोचें? ड्राइंग, पेंटिंग, सिंगिंग आदि न मालूम कितनी चीजें हैं, जो हमें आनंद से भर सकती हैं। किताबें हमारा जीवन सरस बना सकती हैं।

पीछे के पृष्ठों पर दिए गए अनेक नामों में गृहस्थ जीवन जीने वालों के नाम भी हैं।

क्या उन सभी का एक दिन 24 घंटे से अधिक का है?

क्या उनका सप्ताह 7 दिन से ज्यादा का है?

नहीं। उनके पास भी 24 घंटे का ही दिन है। सात दिन का ही सप्ताह है। 30 दिन का ही महीना है। वे भी खाते-पीते हैं। उनके भी पति/पत्नी और बच्चे हैं। वे भी अपने पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्यों को निभाते हैं। उनके पास भी मोबाइल है। ये सब करते हुए भी वे जिनशासन के गौरव में कुछ योगदान दे पा रहे हैं। योगदान दे पाने का एकमात्र कारण है आत्मानुशासन।

किसी ने कहा है -

उठने ऋद्धा दिन काम किया

और ऋद्धी रात काम किया

उठने खेलना छोड़ा और मौज मस्ती छोड़ी

उठने ज्ञान के ग्रंथ पढ़े और नई बातें सीखीं

वह आगे बढ़ता गया पाने के लिए क्षफलता

जब-बस दिल में विश्वास और

छिम्मत लिए वह आगे बढ़ा

और वह क्षफल हुआ

लोगों ने उसे भाव्यशाली कहा

स्वनिंत्रण व स्वअनुशासन के लिए स्वयं से वादा करना होगा।

फिल्म जगत में अमिताभ बच्चन एवं लता मंगेशकर के अनुशासन की मिसालें दी जाती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी 74 साल की उम्र में भी 18 घंटे काम करते हैं। विदेशी दौरों पर भी नवरात्रि के नियमों का पालन करते हैं।

नेहरू जी ने जेल में किताबें लिखी। गांधी जी समय के पाबंद थे। उनका आत्मानुशासन ही उनकी लय बनाए रखता था।

जब ये लोग इतना आत्मानुशासन रख सकते हैं तो धर्म के क्षेत्र में हमें कितना रखना चाहिए! धर्म से तो सिर्फ और सिर्फ आत्मा का ही हित होगा। इससे हमारी साधना-आराधना बढ़ेगी जो हमें मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ाएगी। श्रीमद् उत्तराध्ययन की टीका में एक कहानी आई है कि सचेनक हाथी मदोन्मत होकर उस आश्रम के ऋषियों के साथ बुरा बर्ताव करने लगा, जिस आश्रम में बड़ा हुआ था। जिन ऋषियों ने उसे बचपन से पाला था उन्हें ही उठा-उठाकर पटकने लगा। आश्रम को उजाड़ने लगा। कुछ ऋषि उसे समझाते हैं, किंतु उस पर कुछ भी असर नहीं होता। वह आश्रम को नष्ट करने पर तुल गया।

ऋषियों का एक दल राजा श्रेणिक के पास पहुँचकर उसकी शिकायत करने लगा। ऋषियों की बात सुनकर श्रेणिक ने उस हाथी को पकड़ने के लिए अपने लोगों को भेजा। लोग दल-बल से आए, परंतु हाथी को पकड़ने में नाकाम रहे। लोगों द्वारा पकड़ने का प्रयास करने पर वह हाथी और ज्यादा गुस्से में आ गया। उस हाथी का पूर्वजन्म का मित्र देव योनि में था। वह देवलोक से आकर हाथी को समझाता है। समझाते हुए कहा कि सचेनक, 'अप्या चैव दमेयव्वो' अर्थात् आत्मा का दमन करो। आत्मा दुर्दम है। दूसरों से दमित होने की वध और बंधन की अपेक्षा मत करो।

इसे सुनकर सचेनक शांत हुआ। राजा ने उसको पकड़ा और उसके सौंदर्य को देखकर उसे पट्टहस्ती बना दिया। यह आत्मानुशासन का अद्भुत उदाहरण है। हमारे लिए भी आत्मा का दमन श्रेष्ठ है। संयम और तप द्वारा आत्मा का दमन करने वाला इस लोक और परलोक में सुखी होता है।

“आत्मानुशासन महान है जीवन का उत्थान है। जो कोई इसको धारण करता बन जाता महान है।”

भारत सरकार न मालूम कितने प्रकार के नियम बनाती है। प्रदूषण नियंत्रण के लिए नियम, कर संबंधी नियम, ट्राफिक संबंधी नियम, विरासतों को गंदा न करने का

नियम, ट्रेन और फ्लाइट में सफाई का नियम, लाइब्रेरी का नियम आदि कितने ही नियम हैं। सबके बारे में लिखा जाए तो कई पन्ने भर सकते हैं। बहुत सारे नियम बने तो हैं, पर उनका पालन होता नहीं दिखता। इसका कारण है आत्मानुशासन का अभाव। जब तक नागरिकों में आत्मानुशासन नहीं आएगा, तब तक इनका पालन कौन करवा सकता है? सरकार क्या करेगी? पुलिस क्या करेगी?

एक भारतीय विदेश में गया। वहाँ किसी लाइब्रेरी में बोर्ड देखा, जिस पर लिखा हुआ था 'इंडियंस आर नॉट अलाउड।' पूछने पर पता चला कि कुछ समय पहले वहाँ गए किसी भारतीय ने किताबों में से चित्र काट लिए। पन्ने फाड़ लिए। तब से साइनबोर्ड लगा हुआ है। विदेश के मॉल में 'नो इंट्री फॉर इंडियन' देखने पर जब पूछा गया तो पता चला कि किसी भारतीय ने कॉइन की जगह वाइसर डाले, जबकि वहाँ पर सिस्टम है कॉइन डालने का। कॉइन डालने से कोक निकलेगी, कॉइन डालने से कॉफी आदि कोई भी चीज निकलेगी। कॉइन की जगह वाइसर डालना आत्मानुशासन का अभाव है। सोच का बौनापन है। रात्रि भोजन का त्याग करने वाले कई लोग पाँच-दस मिनट की खातिर ऐसा कहकर रात्रि भोजन के पचचक्खान में दोष लगाते हैं कि अभी तो उजाला है। अभी तो धूप दिख रही है। अभी तो हाथ की रेखा दिख रही है। अभी तो घंटी की आवाज नहीं आई है। एकासना करके लोग खिसक-खिसककर खाते हैं। वहीं सो जाते हैं, फिर उठकर चाय पी लेते हैं। उत्क्रांति का फार्म भरने के बाद न मालूम उसमें कैसी-कैसी गलतियाँ निकालते हैं। मोबाइल का पचचक्खान लेकर लैंडलाइन चलाते हैं। पानपराग का पचचक्खान लेकर रजनीगंधा खाते हैं। टी.वी. देखने का पचचक्खान लेकर मोबाइल में देखते हैं। हरी लिलौती का पचचक्खान लेकर टमाटर खाते हैं। तर्क देते हैं कि वह लाल है। आम खाते हैं, क्योंकि वह पीला है। जामुन खाते हैं, क्योंकि वह काला है।

ये सब क्या है? हालाँकि सभी ऐसे नहीं हैं। करणीदान जी लूणिया ऐसे श्रावक थे, जिन्होंने नियम लिया था कि सालभर में 100 रुपए से अधिक का कपड़ा नहीं

पहनूँगा। उन्होंने सिल-सिलकर पहना, पर अपने नियम में कोई दोष नहीं लगाया। पैबंद लगाते जाते, पर कभी लिए गए नियम के साथ धोखाधड़ी नहीं की। यह आत्मानुशासन से ही संभव है। करणीदान जी ही नहीं, कई ऐसे श्रावक हैं जिन्होंने गृहस्थ में रहकर नियमों का सूक्ष्मता से पालन किया। जब तक आत्मानुशासन नहीं होगा, तब तक नियमों का पालन नहीं हो सकेगा। सुना गया है कि कई लोग तपस्या पचचक्खने के बाद भी खाते हैं। ऐसा आत्मानुशासन के अभाव में ही होता है।

आत्मानुशासन वाला रास्ते-रास्ते चलता है। एक गुरु ने अपने शिष्य को कबूतर देते हुए कहा कि जहाँ कोई न देखे, वहाँ इसे मार देना। शिष्य कई दिनों बाद लौटा और गुरु को वापस कबूतर सौंप दिया। गुरु ने पूछा कि क्या हुआ? शिष्य ने कहा कि कहीं कोई है तो कहीं कोई! और परमात्मा तो मुझे हर समय देख ही रहे हैं। ऐसा उत्तर आत्मानुशासन का उदाहरण है। वह दिन धन्य होगा, जब हमारे भीतर भी आत्मानुशासन पैदा होगा।



चौथा बिंदु आत्मानुशासन पूरा हो चुका है। अब आगे यह लिखने की जरूरत नहीं है कि आपको क्या करना है। आप समझ चुके होंगे कि पुनः रुकना है, सोचना है, अपने आप से कुछ वादा करना है फिर आगे बढ़ना है।

इस बार अगले 21 दिन तक इन्हें अपने जीवन का हिस्सा बनाएँ -

1. सामान बिखेरकर नहीं रखना है।
2. हाथ का काम अधूरा नहीं छोड़ना है।
3. जूठा नहीं छोड़ना है।
4. रात 10 बजे से सुबह 7 बजे तक मोबाइल का त्याग करना है।
5. कम से कम किताब का 1 पेज रोज पढ़ना है।
6. गाली नहीं देना है।
7. तू-तड़ाक की भाषा का प्रयोग नहीं करना है।

साभार- आध्यात्मिक आरोग्यम्

श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 मार्च 2025 अंक से आगे...

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

प्रश्न 165 'रुचि' किसे कहते हैं?

उत्तर जिन कारणों से सम्यक्त्व (श्रद्धा) प्राप्त व पुष्ट होती है, उन कारणों को 'रुचि' कहते हैं। (श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र अ. 28 में भी 10 रुचि का वर्णन है)

प्रश्न 166 जातिस्मरण की प्राप्ति किन हेतुओं से होती है?

उत्तर जातिस्मरण की प्राप्ति 3 हेतुओं से होती है। यथा -

- (1) बाह्य निमित्त से - श्रेयांस कुमार को,
- (2) शुभ अध्यवसायों से - तेतली पुत्र को,
- (3) मोह के उपशम से - नमि राजर्षि को।

प्रश्न 167 प्रकीर्णक ग्रंथ किसे कहते हैं?

उत्तर तीर्थंकर भगवान स्वयं जिन्हें दीक्षा देते हैं उन साधुओं द्वारा जो शास्त्र रचे जाते हैं, वे प्रकीर्णक ग्रंथ कहलाते हैं अर्थात् इन संतों द्वारा अपनी-अपनी योग्यता एवं रुचि के अनुसार तीर्थंकर भगवान के उपदेशों को मति (बुद्धि) में संग्रह किया जाता है, उसे प्रकीर्णक ग्रंथ कहते हैं। प्रकीर्णक कालिक और उत्कालिक दोनों प्रकार के होते हैं। तीर्थंकरों के प्रशिष्यों (शिष्यानुशिष्यों) के प्रकीर्णक नहीं कहलाते हैं। श्रीमत् समवायांग सूत्र के 84वें समवाय में उल्लेख है कि ऋषभदेव भगवान के 84 हजार शिष्य व 84 हजार प्रकीर्णक थे। (तीर्थंकरों द्वारा दीक्षित साध्वियों के प्रकीर्णक नहीं कहलाते हैं, इसका कारण ग्रंथों में भी उपलब्ध नहीं है)

नोट - भगवान महावीर के निर्वाण के 960 वर्षों के बाद वल्लभीपुर में एक पूर्वधर देवर्धि गणि क्षमाश्रमण की नेश्राय में ताड़ पत्रों पर शास्त्र लिखे गये थे।

प्रश्न 168 सम्यक्त्व के चार श्रद्धान कौन से हैं?

- उत्तर**
- (1) परमार्थ का परिचय करे।
 - (2) परमार्थ को जानने वालों की सेवा करे।
 - (3) जिसने सम्यक्त्व का वमन कर दिया है, उसकी संगति नहीं करे।
 - (4) कुतीर्थियों की संगति से दूर रहे।

नोट - श्रद्धा मन की वह दृढ़ता है, जिससे धर्म में स्थिरता आती है। सम्यग्दर्शन रूप महान रत्न को प्राप्त करने के पश्चात् उसकी सुरक्षा हेतु इन बोलों का पालन करना अनिवार्य है। वे धन्य हैं जो इसकी सुरक्षा करते हैं।

प्रश्न 169 परमार्थ का परिचय करें आदि उपर्युक्त 4 बोलों का क्या अर्थ है?

- उत्तर**
- (1) नवतत्त्वों का ज्ञान परमार्थ - परम + अर्थ (सार) कहलाता है। इस ज्ञान को आदरपूर्वक ग्रहण करना व इसकी प्रशंसा करना परिचय का भावार्थ है। नवतत्त्वों की गूढ़ जानकारी होने पर ही जीव 'संवर-निर्जरा' के साधक बनते हैं।
 - (2) परमार्थ के ज्ञाता की संगति से जैनत्व और जीवदया के वृक्ष पल्लवित होते हैं।
 - (3) जो सम्यक्त्व को छोड़ देता है उनका चिन्तन ऊर्ध्वमुखी नहीं होता है। इसलिए उनकी संगति अधोमुखी बनाकर भारी-कर्मा बना सकती है।
 - (4) कुतीर्थियों के प्रभाव में आकर मोक्ष मार्ग को छोड़कर संसार मार्ग अपना सकता है।

ध्यातव्य बिंदु - शास्त्रकारों द्वारा दी गई ये धार्मिक मर्यादाएँ वरदान हैं क्योंकि ये मर्यादाएँ वीतरागता को प्राप्त करने में सहायक होती है।

प्रश्न 170 सम्यक्त्व के आठ आचार कौन से हैं?

- उत्तर**
- (1) निःशंकित - जिन प्रवचनों में शंका न रखना।
 - (2) निष्कांक्षित - परदर्शन की आकांक्षा न करना।
 - (3) निर्विचिकित्सा - धर्म क्रिया के फल में सन्देह न करना।
 - (4) अमूढ़ दृष्टि - बाल तपस्वी के विद्या और तप के चमत्कार से मोहित होकर श्रद्धा से विचलित न होना।
 - (5) उपबृंहण (वृद्धि करना) - स्वधर्मी के सदगुणों की प्रशंसा करके उनके गुणों में वृद्धि करना।
 - (6) स्थिरीकरण - धर्म से डिगते हुए को उपदेशादि द्वारा धर्म में स्थिर करना।
 - (7) वात्सल्य - स्वधर्मी के प्रति वत्सल (प्रीति) भाव रखकर उनका उपकार करना।
 - (8) प्रभावना - धर्मकथा आदि से भी जिनशासन का प्रभाव-प्रसिद्धि बढ़ाना।

नोट - प्रथम चार दर्शनाचार व्यक्तिगत दृष्टि को शुद्ध रखते हैं तथा शेष चार संघीय जीवन को संगठित रखते हैं।

प्रश्न 171 वीतराग (कषायोदय रहित) दर्शन आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद हैं -

- (1) उपशांत कषाय वीतराग दर्शन आर्य और (2) क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

प्रश्न 172 उपशांत कषाय वीतराग दर्शन आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर उपशांत कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद हैं -

- (1) प्रथम समय उपशांत कषाय वीतराग दर्शन आर्य,
- (2) अप्रथम समय उपशांत कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

अथवा

- (1) चरम समय उपशांत कषाय वीतराग दर्शन आर्य,
- (2) अचरम समय उपशांत कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

नोट - अप्रथम समय यानी प्रथम समय को छोड़कर शेष सभी समयवर्ती जीव।

-क्रमशः ♥♥♥♥

श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

तेरहवाँ अध्ययन : चित्तसंभूइज्जं अज्झयणं

15-16 मार्च 2025 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - सरिता बेंगानी, कोलकाता

बारहवें अध्ययन 'हरिप्रसिज्जं' की व्याख्या हो चुकी है। प्रस्तुत अध्ययन 'चित्तसंभूइज्जं' में चित्त एवं संभूत के छह भवों के लगातार पारस्परिक संबंध और फिर विसंबंध का निरूपण है। पूर्व अध्ययन क साथ इसका संबंध इस प्रकार है- बारहवें अध्ययन में उच्च ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं 12 प्रकार के तप में पुरुषार्थ करने वाले साधक नीच कुल में उत्पन्न होने पर भी जगत पूज्य बन सकते हैं, जैसे- 'हरिकेशबल मुनि'। प्रस्तुत अध्ययन में यह बताया जा रहा है कि यदि उच्च चारित्र एवं उत्कृष्ट तप का पालन भोगों की आकांक्षा के लिए किया जाए तो वह 'निदान' कहलाता है। निदान आत्महितैषी जीवों के लिए 'शल्य' (काँटा) के समान है अर्थात् निदान के वश जीव भोगों को प्राप्त तो कर लेता है किन्तु बदले में वह धर्माचरण की पिछली सारी कमाई (पुण्यवानी) को गँवा बैठता है और वो दुर्गति से भटकता रहता है। अतः भगवान महावीर स्वामी ने संभूत के जीवन के माध्यम से भोगों के उच्च शिखर पर बैठे हुए व्यक्ति के गहरे पतन और चित्त के जीवन के माध्यम से त्याग के शिखर पर चढ़े हुए व्यक्ति के पूर्व उत्थान को प्रकाशित किया है। संक्षेप में चित्त-संभूत के पूर्व पाँच भवों की कथा इस प्रकार है -

अयोध्या नगरी के नरेश मुनिचन्द्र सांसारिक विषयों से विरक्त हो गये थे। एक दिन सागरचन्द्र मुनि के पास उन्होंने दीक्षा ग्रहण कर ली। किसी समय मुनिचन्द्र अपनी शिष्यमण्डली के साथ विहार करते हुए एक महाभयानक अटवी में भटक गये। वे भूख-प्यास से व्याकुल हो रहे थे। कुछ आगे चले ही थे कि इतने में इनको चार गोपाल पुत्र नन्द-सुनन्द-नन्ददत्त-नन्दप्रिय मिले। उन लड़कों ने उन्हें सुविशुद्ध आहार देकर पुण्य का उपार्जन किया। दूध आदि की प्राप्ति से क्षुधा एवं तृषा शांत हुई। मुनि मुनिचन्द्र ने गोपाल-पुत्रों को धर्म उपदेश दिया। धर्म देशना सुनकर उन चारों का चित्त संसार से विरक्त हो गया और संसार की असारता को जानकर उन चारों ने दीक्षा ग्रहण कर ली। उन चारों में से दो मुनियों को साधुओं के मलीन वस्त्रों से घृणा होती थी। ये चारों ही गोपाल मुनिराज चारित्र पालन करने के कारण अपनी आयु को पूर्ण करके देवलोक में देव रूप में उत्पन्न हुए। इनमें से दो मुनियों नन्ददत्त-नन्दप्रिय के जन्म का वर्णन उत्तराध्ययन सूत्र के चौदहवें अध्ययन 'इषुकारिय' में प्रतिपादित है तथा जो मलीन एवं पसीने से तर हुए वस्त्रों से घृणा करते थे, वे दोनों मुनि नन्द-सुनन्द देव आयु से च्यवकर 'दशपुर' नामक नगर में शाण्डिल्य ब्राह्मण की यशोमति नाम की दासी से शौण्डीर एवं शौण्डदत्त नाम के युगल पुत्र हुए (**पहला भव**)। बाल्यावस्था पार करके ये दोनों भाई युवा हुए।

एक दिन ये दोनों भाई खेत की रखवाली करने के लिए वन में गये और वहाँ वट वृक्ष के नीचे सो रहे थे कि अचानक एक सर्प निकला और एक भाई को डस लिया। जहर की तीव्रता से वह वहीं मर गया। सर्प की तलाश करते हुए दूसरा भाई भी उसी सर्प द्वारा डसा गया और वह भी वहीं मर गया। दोनों भाई मरकर कलिंजर पर्वत पर एक मृग के उदर में युगल रूप में उत्पन्न हुए (**दूसरा भव**)। वहाँ भी वे सुख से नहीं रह सके। एक बार वे दोनों अपनी माँ के साथ चल रहे

थे तभी एक शिकारी ने एक ही बाण से दोनों को मार दिया। मरकर ये दोनों मृग गंगा के किनारे पर एक हंसनी के गर्भ से युगल रूप में जन्मे (तीसरा भव)। वहाँ भी मछुए ने इनको सुख से नहीं रहने दिया। जब ये अपनी हंसनी माँ के साथ घूम रहे थे तभी एक मछुए ने दोनों को पकड़ कर मार डाला। वहाँ से मरकर फिर ये दोनों काशी देश में भूतदत्त नामक चाण्डाल के यहाँ युगल पुत्र रूप में जन्मे (चौथा भव)। उनका नाम 'चित्त' और 'सम्भूत' रखा गया, दोनों भाइयों में अपार स्नेह था।

वाराणासी में उस समय शंख नाम के राजा राज्य करते थे। उनके मंत्री का नाम 'नमुचि' था। राजा ने मंत्री को किसी भयंकर अपराध पर क्रुद्ध होकर उसे प्राणदण्ड दे दिया और 'भूतदत्त' चाण्डाल से कहा कि- 'बिना किसी बात पर विचार किये इसे मार दो।' चाण्डाल उसको मारने के लिए श्मशानभूमि में ले गया, परन्तु भूतदत्त ने अपने दोनों पुत्रों को अध्ययन कराने की शर्त पर उसका वध न करके उसे अपने घर में छिपा लिया। जीवित रहने की आशा से नमुचि दोनों चाण्डाल पुत्रों को पढ़ाने लगा और कुछ ही वर्षों में दोनों कुमार अनेक विद्याओं में प्रवीण बन गये। चाण्डाल पत्नी नमुचि की सेवा करती थी और नमुचि उसके साथ अनुचित संबंध रखने लगा। भूतदत्त को जब यह बात ज्ञात हुई तो उसने नमुचि को मारने का निश्चय कर लिया किन्तु कृतज्ञतावश दोनों चाण्डाल पुत्रों ने नमुचि को यह सूचना दे दी। नमुचि वहाँ से प्राण बचाकर भागा और हस्तिनापुर में सनत्कुमार चक्रवर्ती राजा ने उसे अपने मंत्री रूप में स्थापित कर लिया था।

एक समय वाराणासी में उत्सव के समय चित्त-सम्भूत के रूप, लावण्य, संगीत, नृत्य, यौवन को देखकर नगरवासियों का मन इतना मुग्ध हो गया कि उन्हें दोनों चाण्डाल जाति के बालकों से स्पर्श-अस्पर्श के भेद का पता ही नहीं चला। इन दोनों की प्रशंसा देखकर अन्य गायकों के मण्डल उनसे ईर्ष्या करने लगे और जातिवाद को धर्म का नाम देकर उन्होंने राजा से शिकायत की कि 'इन दोनों चाण्डाल पुत्रों ने नाचते-गाते हुए इधर-उधर फिरते हुए एकमेक होकर हमारा धर्म नष्ट किया है।' इस बात पर राजा ने दोनों चाण्डाल पुत्रों को वाराणासी से बाहर निकालवा दिया।

एक बार वाराणासी में कौमुदी महोत्सव था। जब दोनों भाइयों ने यह सुना तो वे दोनों इस महोत्सव में सम्मिलित होने के लोभ से रूप बदल कर पुनः नगर में आ गये। संगीत के स्वर सुनते ही इन दोनों से रहा नहीं गया और इनके मुख से भी संगीत के स्वर निकल पड़े। लोग मंत्रमुग्ध होकर इनके पास बधाई देने और परिचय पाने आए। वस्त्र का आवरण हटते ही लोगों ने उन्हें पहचान लिया तथा ईर्ष्या एवं जाति मद में अन्धे लोगों ने उन्हें पुनः चाण्डाल पुत्र कहकर बुरी तरह मार-पीटकर उन्हें नगर से बाहर निकाल दिया। इस प्रकार अपमानित एवं तिरस्कृत होने पर उन्हें अपने जीवन से घृणा हो गई थी। दोनों ने पहाड़ पर से कूदकर आत्महत्या करने का निश्चय किया। वे पहाड़ पर चढ़े और कूदने की तैयारी में ही थे तभी उनकी नजर एक निर्ग्रथ साधु पर पड़ी जो एक शिलातल पर ध्यानस्थ आतापना ले रहे थे। मुनिराज के दर्शन मात्र से इनके अशान्त हृदय में कुछ धैर्य बंधा और वे दोनों मुनिराज के पास पहुँचे। मुनिराज के चरणों में बहुमान से मस्तक नवाया और उनको सारा वृत्तान्त सुनाया।

उनकी बात सुनकर मुनिराज ने कहा— "अनंत पुण्योदय से पाये हुए इस जीवन को मनुष्य पर्याय को अंत करने का विचार, क्या बुद्धिमानी है? आत्महत्या कायों का काम है। इससे दुःखों का अंत नहीं होता बल्कि दुःख बढ़ जाते हैं। विमल बुद्धि वाले जीव के लिए ऐसा करना उचित नहीं है, यदि शारारिक एवं मानसिक समस्त दुःख सदा के लिए मिटाने हैं तो मुनिधर्म की शरण में आओ।" मुनिराज की वाणी को सुनकर दोनों प्रतिबुद्ध हुए। दीक्षा अंगीकार करके दोनों ने शास्त्रों का अच्छी तरह अध्ययन किया। गुरु की आज्ञा से उन्होंने षष्ठ (बेला), अष्टम (तेला), दशम (चौला), अर्धमास, मासखमण आदि तपस्या की आराधना प्रारंभ की। इस तरह विविध उत्कृष्ट तपस्याओं के निमित्त से उन्हें कई लब्धियाँ स्वतः प्राप्त हो गई थी।

- क्रमशः ❤️❤️❤️

धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

संस्कार और भ

कष्टों का पहाड़

15-16 मार्च 2025 अंक से आगे...

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंद कुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंद कँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चरित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

मनुष्य-जीवन की सच्ची परीक्षा विषम परिस्थितियों में हुआ करती है। कौन मनुष्य कितना धीर और वीर है, इसका पता घर में आराम से गद्दों पर लेटने वाले के संबंध में कैसे लग सकता है? अपने घर तो सभी शूरीर कहलाते हैं। एक कुत्ते जैसा प्राणी भी अपनी गली में शेर बन जाता है। सच्ची शूरीरता का पता तब लगता है जब कष्टों के पहाड़ सामने हों, विघ्न बाधाएं अड़ी खड़ी हों, मौत की घण्टी सामने नाच कर रही हो, जीवन का चंचल दीपक एक ही हवा के झोंके में बुझने वाला हो, भय और आतंक की ज्वालाएँ सब ओर से लपलपाती हुई बढ़ रही हों। इस प्रकार की संकटापन्न परिस्थिति में जो अपने कदम पीछे न रखे, भय से जरा भी विह्वल न हो, वही धीर और वीर है।

साधु-जीवन का मार्ग फूलों का मार्ग नहीं है। बड़ी-बड़ी आकाश-पाताल को एक कर देने वाली बातें करने वाले पुरुष भी इस मार्ग पर लड़खड़ा जाते हैं, विकट समय में वे भी हार खा बैठते हैं। धैर्यशाली पुरुष ही इस पथ का सच्चा यात्री हो सकता है। जो कायर और बुजदिल है, जो संकट की घड़ियों में चीख उठता है, अपने मार्ग से

फिसल जाता है, वह साधुता के उच्च-शिखर पर नहीं चढ़ सकता। वह साधु जीवन ही क्या, जिसमें मौत का नाच सामने देखकर आँखों से आँसू आ जाए?

साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. ने जीवन में कई उथल-पुथल की परिस्थितियाँ देखी हैं। उन्होंने अपने जीवन में सुख भी देखा है और दुःख का भी साक्षात्कार किया है। वे कोमल-शय्या के सुख का भी अनुभव कर चुकी हैं और कठोर चट्टान की शय्या भी अंगीकार कर चुकी हैं। वे न सुख में फूली और न दुःख में घबराई। भयभीत होना उनकी प्रकृति में नहीं था। भयंकर से भयंकर दृश्यों को देखकर उनका अटल साधुत्व चमकने लगता था। वे जहाँ जाती थीं वहीं अपने व्यक्तित्व का चमत्कार दिखाती थीं। उनके लिए जंगल में भी मंगल हो जाता है।

आप सोजत का चातुर्मास सम्पन्न कर प्रवर्तिनी श्रेय कुमारी जी की सेवा में पधारी। वहाँ श्रीमती चाँद बाई की दीक्षा आपके ही करकमलों से सम्पन्न हुई। वि.सं. 1970, चैत्र बदी में आप दीक्षा प्रदान कर ज्योंही सोजत में श्री केशर कुमारी जी म.सा. की सेवा में लौटी, वहाँ भी

इन्हीं साध्वी श्री चाँद बाई की सुपुत्री केशर बाई की दीक्षा थी। वह दीक्षा प्रदान करने में भी आपका योगदान रहा।

इधर बैशाख मास में केशर बाई की दीक्षा हुई, उधर पूज्य श्री चौथमल जी म.सा. के पट्टधर कठोर चारित्रशील पूज्य श्री श्रीलाल जी महाराज का संदेश आता है कि “जोधपुर संघ का काफी उत्साह और धर्म प्रेम है। यहाँ की बहनें चाहती हैं कि कोई साध्वी जी म.सा. का चातुर्मास प्राप्त हो तो हम भी अच्छी तरह से धर्म-ध्यान कर सकें। साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी विदुषी हैं और प्रभावशालिनी हैं। वे जोधपुर आना चाहें तो आ सकती हैं।”

पूज्यश्री के इस संदेश में ‘एक पंथ, दो काज’ वाली कहावत खरी उतरती है। धर्म का प्रचार और आचार्यश्री जी की सेवा व उनके शास्त्रीय अनुभव का लाभ! इस स्वर्ण-अवसर को भला छोटी आनंद कुमारी जी कब टाल सकती थीं? नवीन शिष्या को दीक्षा प्रदान कर आपश्री सोजत के बाहर ही ठहरी हुई थीं। मारवाड़ में यह प्रथा है कि नवदीक्षित को दीक्षा लेते ही गाँव या शहर में नहीं रखते हैं। शायद गाँव में प्रवेश करने पर उसे कहीं घर की याद आने लगे या उच्च प्रासाद देखकर मोह से घिर जाए अथवा उसका वैराग्य रफूचक्कर हो जाए। सन्यास लेकर उसी समय घर की ओर मुख मोड़ना, सम्भव है कि घरवालों के मोह का कारण बन जाए। इस प्रथा में क्या रहस्य है, यह तो ज्ञानी ही जानें।

हाँ, तो साध्वी श्री बड़ी आनन्द कुमारी जी म.सा. ने आपको जोधपुर की ओर विहार करने की आज्ञा दे दी। आज्ञा प्राप्त कर छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. के साथ नवदीक्षिताएँ— साध्वी श्री मूली बाई जी म.सा., साध्वी श्री चाँद बाई जी म.सा., साध्वी श्री केशर बाई जी म.सा. ठाणा-4 का सोजत से विहार हुआ। सोजत के अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने दूर तक विहार सेवा का लाभ लिया। छोटे-छोटे गाँवों को अपनी चरणरज से पावन करती हुई साध्वीवर्याएँ विहाररत थीं।

बैशाख का महीना समाप्ति पर था। बहुत जोर की

गर्मी पड़ रही थी। राजपूताने में इन दिनों कितनी कड़ी धूप व गर्मी पड़ती है, यह तो भुक्तभोगी ही बता सकते हैं, जो रेगिस्तान के बालू के टीलों पर नंगे पैर चले हों। खुले सिर पर सूर्य के प्रचण्ड ताप से सारा शरीर पसीने से तरबतर हो जाता है और नीचे भट्टी की तरह जलती हुई बालुका। छाया तो रेगिस्तान में बहुत इंतजार करने पर मिलती है, वह भी कंटीले वृक्षों की छाया। दोनों ओर का यह दुःसह्य ताप यात्री की सच्ची कसौटी कर लेता है। मारवाड़ की यह यात्रा कितनी मँहगी पड़ती है, यह तो अनुभव करने पर ही जाना जा सकता है। ऐसे कष्ट भरे पथ पर स्वार्थ-साधना के लिए चलने वाले तो बहुत मिल सकते हैं, पर परमार्थ बुद्धि से अपने प्राणों का मोह त्याग कर विचरण करने वाली साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. जैसी महान आत्माएँ विरली ही होंगी। इस घोर ताप को सहती हुई श्री छोटी आनंद कुमारी जी एवं साध्वीवर्याएँ मरुधर देश के शिरोमणि स्थल जोधपुर की ओर प्रयाण कर रही थीं। उष्णता अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची हुई थी। उसने अपना प्रभाव भी डाल दिया। चिनाव के आस-पास आप रूपाव ग्राम में पहुँची होंगी, इतने में छोटी साध्वी श्री चान्द बाई जी को दाहज्वर का प्रकोप हो गया। सारा शरीर तवे के समान जल रहा था। अपनी शिष्या का यह हाल देखकर आनंद कुमारी जी खुद परिचर्या करने में जुट गईं। दूसरी साध्वियों को गाँव में धोवन-पानी तलाश करने भेजा। चार-पाँच कोस चलकर आई, थकान से पाँव चूर-चूर हो रहे थे, फिर भी गोचरी-पानी की तलाश करने के लिए खुद को ही जाना होगा। साधुता का मार्ग कितना कठिन है? कच्चे जोगियों की यहाँ आकर परीक्षा हो जाती है।

साध्वियाँ गाँव में गोचरी-पानी की तलाश में घूमने लगीं। यहाँ कोई जैनियों के घर तो थे नहीं कि घरों में जाते ही मिल जाता। कई घरों में ग्रामीण लोगों ने बड़ा स्वागत किया और भक्तिभाव से आहार-पानी बहराया। कई जगह नहीं भी मिला। फिर भी साध्वियों ने साहस नहीं छोड़ा और किसी तरह से जितना मिला उतना लेकर आई। चाँदबाई आर्याजी को पहले आहार-पानी देकर फिर

साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी व दूसरी साध्वियों ने थोड़ा-थोड़ा आहार किया। उनकी अनवरत परिचर्या हो रही थी। ग्राम के लोगों ने साध्वी जी की हालत और जैन-साध्वियों की कठिन चर्या देखी तो वे दंग रह गए। कितने ही लोग आपके परम भक्त बन गए। आपकी मीठी बोली और धर्मकथाएँ सुनकर लोगों ने आपसे कहा—“यह साध्वी जी जब तक ठीक न हो जाएँ तब तक आप यहीं विराजें। हम आपकी सेवा करेंगे।” आपकी भी यही इच्छा थी। अतः वहाँ पर ही ठहरने का निर्णय कर लिया। जेठ सुदी 13 तक साध्वी जी का उपचार चलता रहा। अब वे काफी स्वस्थ हो गई थी।

इसी बीच में ‘साथीण’ ग्राम में कितने ही लोगों ने यह अफवाह फैला दी कि साध्वी श्री आनन्द कुमारी जी ने साध्वी श्री चाँदबाई आर्या को छोड़ दिया और उनकी सांसारिक बेटी साध्वी श्री केशर जी आर्या को रख लिया। ‘साथीण’ में साध्वी श्री चान्द बाई आर्या का सांसारिक पीहर था। वहाँ से उनके सांसारिक भाई मेघराज जी इस घटना की छानबीन करने आए। वे उधर के गाँवों में घूमते-घामते ‘रूपाव’ आ पहुँचे। उन्होंने अपनी आँखों से जब यह देखा कि उनकी गुरुणी साध्वी श्री आनंद कुमारी जी खुद सेवा में लगी हुई हैं और बीमार साध्वी जी की सारी व्यवस्थाएँ कर रही हैं तो मेघराजजी दंग रह गये। उन्होंने साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. से कहा कि “आप तो अपनी शिष्या की खूब सार-सम्वाल करती हैं, बड़े प्रेम से रखती हैं। लोगों ने यों ही अफवाह उड़ा दी। मुझे आपकी चर्या देखकर बड़ा संतोष हुआ है। मेरा अपराध क्षमा कीजिए। मेरे मन में आपके प्रति ऊँचे-नीचे परिणाम आ गए थे। आप तो महाभाग्यवती सती हो।” साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी ने बड़ी गम्भीरता से कहा—“क्या हमने इन्हें छोड़ने के लिए लिया था? आप कभी यह विचार न करें कि साध्वियाँ यों ही बीच में धर्मधक्का देकर निकाल देंगी या छोड़ देंगी। क्या हमें ये कड़वी लगती हैं? मेरी तरफ से आपको माफी है। मुझे तो आपके प्रति जरा भी द्वेषभाव नहीं है।” मेघराज जी वन्दना कर चले गये।

देखिये, झूठे आरोप लगाने वाले को भी शांति से उत्तर देना और अपनी समता न खोना, यह साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी का उज्वल गुण था। थोड़ी-सी बात सुनने पर क्षुद्रपुरुषों के हृदय में क्रोध का साँप फुफकारने लगता है, पर महापुरुषों की प्रकृति में यह बात नहीं होती।

हाँ, तो प्रस्तुत विषय पर आइए। जेठ सुदी 14 तक साध्वी श्री चाँद बाई आर्या की तबीयत ठीक हो गई थी। साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी ने कोमलता से पूछा—“क्यों बाई! अब तुम्हारी तबीयत ठीक है?”

“हाँ, अब तो आपकी कृपा से मैं काफी स्वस्थ हूँ। दो-चार कोस तक चल भी सकती हूँ।”

“देखना, कहीं फिर तबीयत बिगड़ न जाए। तुम खुशी से चल सकती हो तो चलो।”

“हाँ! मैं प्रसन्नतापूर्वक चल सकती हूँ। चलिये, पधारिये!”

साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. ने सोचा कि इन बुढ़ी आर्या को जोधपुर लेकर चलना बड़ी टेढ़ी खीर है। अभी अचानक इनके अशान्ति हो गई। भाग्य से गाँव सुलभ मिल गया, नहीं तो बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता। अतः सोजत लौटना ही ठीक रहेगा। सब ने सोजत की ओर प्रस्थान किया। चाँद बाई आर्या को छोड़कर तीनों साध्वियों के उपवास था। गर्मी कम न थी। जेठ की दुपहरी तो हर जगह भयानक होती है। साथ में दो रोटी, दही और कुछ पानी लेकर चल पड़ी। गर्मी बार-बार सताती थी। साथ में बीमारी से तुरन्त उठी हुई आर्या थी, अतः थोड़ी-थोड़ी दूर पर उठते-बैठते, किसी तरह दो कोस का मार्ग काटा। वहाँ से श्मशान के पास आई, जहाँ से सोजत करीब आधा कोस था। इतने में तो आर्या जी चक्कर खाकर धड़ाम से गिर पड़ी। प्यास के मारे कंठ सूख गए थे। बोला नहीं जा रहा था। इशारे से धोवन पानी पीने को मांगा। साथ में जितना पानी लेकर चली थीं, वह सारा पानी पी चुकी थीं। बड़ी मुसीबत हुई। ग्राम पास में नहीं और बीमार प्यास से तड़फड़ा रही है।

क्या करें? कड़कड़ाती हुई गर्मी! तपी हुई बालुका! ऐसे समय में धैर्य की परीक्षा होती है। ऐसे समय में फकीरी का पता लगता है। अपरिपक्व व्यक्ति तो परीषहों की मार खाकर गीदड़ की तरह संयम के क्षेत्र को छोड़कर भाग जाते हैं, परंतु साध्वी श्री आनंद कुमारी जी के हृदय में धैर्य का प्रवाह इस समय भी कम नहीं हुआ था। उनके अंतर्हृदय में कवि की यह उक्ति सतत झंकृत हो रही थी -

**फकीरा फकीरी दूर है जितनी दूर खजूर।
चढ़े तो चाखे प्रेमरस, गिरे तो चकनाचूर॥**

हाँ, तो साध्वी श्री आनंद कुमारी जी ने बड़े धैर्य से काम लिया। उन्होंने बीमार साध्वी को एक निकटवर्ती वृक्ष की छाया में लेटा दिया और पास में केशर जी आर्या को बिठा दिया और बोले कि “हम पानी की तलाश में जा रही हैं। कहीं मिला तो झटपट लेकर लौटती हैं। तुम इन्हें ढाढस बंधाना और सावधानी रखना।”

साध्वी श्री आनंद कुमारी जी और मूली बाई आर्या जी दोनों मध्याह्न की तपती रेत पर सोजत की ओर निकल पड़ी। चलना भी कठिन हो रहा था साथ में काँटे भी पैरों की परीक्षा ले रहे थे। तपी हुई बालु पर पैर रखना भट्टी में पैर रखने के समान हो रहा था, फिर भी सोजत दरवाजे से थोड़े से फासले तक पहुँच गईं। स्वयं को प्यास लगी थी उसकी कोई परवाह नहीं। चिंता यही कि कहीं सतियों के लिए धोवन पानी मिल जाए तो ठीक है, क्योंकि उनके प्राण मुट्ठी में आ रहे हैं। रास्ते पर ही एक कुआँ पड़ता था, वहाँ दो-चार मनुष्य दिखे। उन लोगों से जाकर पूछा कि तुम्हारे यहाँ छाछ हो तो हमें बहरा दो। उन्होंने कहा — “छाछ तो नहीं है। अभी इस समय भरी दोपहर में कैसे आई?”

आप बोले — “हमारे साथ की एक साध्वी को बहुत प्यास लगी है। वह घबरा रही है, इसलिए कुछ छाछ या धोवन पानी तलाश करने आई हैं।” किसानों ने कहा — “यह कुएँ का पानी क्यों नहीं ले लेती? कहो जितना दे दें।” साध्वी श्री आनंद कुमारी जी — “हम जैन साध्वियाँ हैं, चाहे हमारे प्राण चले जाएँ, पर कुएँ का पानी (कच्चा पानी) नहीं पी सकती। हमारे ऐसी ही प्रतिज्ञा है।” किसान — “तो

तुम जानो। यहाँ तो मिलना मुश्किल है। दरवाजे के पास हलवाइयों की दुकानें हैं, वहाँ जाकर पूछो। वे दे दें तो दे दें।”

साध्वी श्री आनंद कुमारी जी ने आशा का पल्ला नहीं छोड़ा। उन्हें आशा थी कि वहाँ जाने पर तो मिल ही जाएगा। आप चलीं। रास्ते में एक किसान का लड़का छाछ की हंडिया लिये जा रहा था। उससे कहा — “भाई, हमें बड़े जोर की प्यास लगी है। तेरी इच्छा हो तो यह छाछ दे सकता।” किसान का लड़का बड़ा सीधा था। उसने हंडिया में जो थोड़ी-सी छाछ थी, वह बहरा दी। पर इतनी सी छाछ से क्या होना था? वह तो होठों तक आकर सूख जाती। आखिरकार हलवाइयों की दुकानों पर आईं। वहाँ पर सहज ही धोवन (कड़ाही का धोया हुआ पानी) रखा था। हलवाइयों से कहा — “यह धोवन पानी अगर आप लोगों की इच्छा हो तो हमें दे दो! हमारे साथ में एक साध्वी है। वह बहुत घबरा गई है। उन्हें हम पीछे छोड़कर आई हैं। हमें भी कड़ी प्यास लगी है।” हलवाई ने कहा — ऐसा गन्दा धोवन तो हम नहीं दे सकते। हमारे यहाँ धर्मशास्त्रों गन्दा पानी देने से भविष्य में गन्दा ही मिलता है, ऐसा कथन है। और कहीं पानी ढूँढो।” आनंद कुमारी जी ने कहा — “भाई! इस समय हमारी साध्वी की तो जान जाने की नौबत आ गई है और तुम अपनी फिलोसफी बता रहे हो। हमारा यह नियम है कि हम धोवन या गर्म पानी के सिवाय और पानी नहीं लेती। तुम्हें देने में हर्ज ही क्या है? फालतू ही तो



फैंकोगे। इसकी अपेक्षा हमारे काम में आए तो क्या हानि है?” हलवाई किसी तरह भी देने को तैयार नहीं हुआ। पास में एक सज्जन व्यक्ति बैठा था, जो जैन था। उसने हलवाई को समझाया कि इन्हें यह धोवन दे दो। ये ऐसा ही धोवन पीती हैं। तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा। हलवाई ने संतुष्ट होकर सारा धोवन आपको बहरा दिया। दो पात्र पूरे भर गये थे। धोवन मिलने पर मन को संतोष हुआ। आपको धोवन मिलते ही थोड़ी सी छछ दोनों सतियों ने पीकर वापिस लौटने का इरादा किया।

इधर चान्द कँवर जी का जी काफी घबराने लगा। बेहोशी आ गई। केशर जी आर्या ने देखा कि अब इनके शरीर में चैन नहीं है और चेहरा निस्तेज होता जा रहा है। मृत्यु के लक्षण दिखते हैं। उन्होंने उसी समय अपनी माता आर्या जी को संथारा (अनशन) करा दिया। इधर आप दोनों पानी लेकर पहुँची और उधर उनके प्राण-पखेरू उड़ गये। हाँ! काल की गति बड़ी विचित्र है। यह दशा पत्थर को भी कम्पा देने वाली थी। काल के क्रूर हाथों के आगे मनुष्य का बस ही क्या है? किसी तरह उनकी पुत्री केशर जी आर्या को आश्वासन दिया गया और सोजत संघ को समाचार करवाया गया। उस दिन चतुर्दशी थी अतः कई लोगों के पौषध थे। वज्रपात जैसी खबर सुनकर लोगों को मार्मिक व्यथा हुई। शहर से अनेक श्रावक-श्राविकाएँ आए और उन्होंने साध्वीजी का अंतिम संस्कार किया।

साध्वी श्री आनंद कुमारी जी के धैर्य और साहस का यह ज्वलन्त प्रमाण है। एक तरफ तो पृथ्वी जल रही है, खुद को प्यास लगी है, दूसरी ओर अपनी शिष्या प्यास से छटपटा रही है। ऐसे विकट-प्रसंग में भी उन्होंने अपने कर्तव्य का पूर्णतः पालन किया है।

सभी साध्वियाँ वहाँ से भंडोपकरण उठाकर सोजत शहर पधार गईं। जोधपुर जाना लिखा नहीं था। उसमें अभी अन्तराय था। अतः आप जोधपुर चातुर्मास के लिए नहीं जा सकी और वह चातुर्मास सोजत में ही हुआ।

चातुर्मास पूर्ण होने पर आपका विहार पीपाड़

(मारवाड़) की ओर हुआ। पीपाड़ संघ ने प्रवचनादि का काफी लाभ उठाया। धर्म-ध्यान का ठाट लग रहा था। पीपाड़ निवासी जबरचन्द जी सिंघी की धर्मपत्नी महताब कुँवर बाई को आपके वैराग्योत्पादक व्याख्यान सुनकर संसार के प्रपंचों से विरक्ति हो गई। उन्होंने दीक्षा लेने के विचार साध्वी आनंद कुमारी जी के सामने प्रकट किये। महासती जी ने उनकी प्रकृति, ज्ञानाभ्यास आदि की जानकारी ली व दीक्षा लेने का कारण पूछा। उन्होंने सारी बातों का सन्तोषजनक जवाब दिया। महासती जी ने उन्हें अपने कुटुम्बियों से आज्ञा प्राप्त करने के लिए कहा। महताब कुँवर बाई का परिवार काफी बड़ा था, अतः कुटुम्बियों से आज्ञा प्राप्त करना बड़ा कठिन काम था। परिवार वालों से आज्ञा के लिए कहने पर उन्होंने कहा कि तुम तो दीक्षा लेने को तैयार हो गई हो, लेकिन यह कुमारी कन्या क्या करेगी? इसे किसके आश्रय पर छोड़ जाओगी? महताब कुँवर बाई के 8 साल की पुत्री जतन कुँवर बाई थी। इतनी छोटी उम्र होने पर भी उसमें बचपना नहीं था। अपनी माता के साथ प्रतिदिन महासती जी के दर्शन करने जाती, खूब ध्यान से व्याख्यान सुनती और सामायिक, प्रतिक्रमण आदि धर्मक्रियाएँ भी बड़ी उत्सुकता से करती थी। बाल मस्तिष्क से कभी सयानों जैसे सुलझे हुए गम्भीर विचार प्रकटते हैं तो परिवार वाले सुनकर चकित हो जाते हैं। महासती श्री आनन्द कुमारी जी के गम्भीर उपदेशों की छाप इस बाल-हृदय पर भी काफी पड़ चुकी थी। हृदय में संयम-विचार अंकुरित हुआ और अपनी माता के साथ ही पुत्री की भी दीक्षा लेने की उत्कृष्ट अभिलाषा हुई। घरवालों ने जब यह सुना कि लड़की भी साथ ही दीक्षा ले रही है तो उन्होंने महताब कुँवर बाई को काफी धमकाया और कहा— “तुम्हारी तो दीक्षा लेने की उम्र है, पर इस बालिका को कोमल वय में साथ क्यों ले जा रही हो?” महताब कुँवर बाई ने घरवालों को बड़े प्रेम से समझाया तो भी वे पुत्री को साथ में दीक्षा देने को किसी तरह भी तैयार नहीं हुए।

जोधपुर में सेठ लच्छीराम जी साँड, छगनलाल जी मुणोत व सतीदान जी गोलेछा (ब्यावर वाले) प्रतिष्ठित

व्यक्तित्व थे। महताब कुँवर बाई का जोधपुर आवागमन होता ही रहता था। इन्होंने अपनी पुत्री के दीक्षा के विचार उनके सामने प्रकट किए और आज्ञा दिलाने के लिए प्रयत्न करने को कहा। इन लोगों ने बाई की बात मानकर पीपाड़ आकर आज्ञा के लिए जी-तोड़ परिश्रम किया। घरवालों को बहुत समझाया। आखिरकार उन्होंने दीक्षा के लिए आज्ञा दे दी, परंतु सरकार की ओर से यह प्रतिबंध था कि 18 वर्ष से कम उम्र में दीक्षा नहीं ले सकते। अन्ततोगत्वा सेठ चाँदमल जी रियाँ वालों ने प्रयत्न करके यह प्रतिबंध हटवाया और दीक्षा की तैयारी करने के लिए कहा।

यह सब करने में दो वर्ष लग गये। संसार की दशा विचित्र है। यह किसी के शुभ कार्य को अच्छी नजरों से नहीं देखता। 'श्रेयांसि बहुविघ्नानी' इस लोकोक्ति के अनुसार शुभ कार्य में विघ्न हुए बिना नहीं रहते। अस्तु, इधर समस्त पीपाड़ संघ व घर वाले दीक्षा महोत्सव की तैयारी में जुटे हुए थे दोनों वैरागिनें बड़े ठाट-बाट से दीक्षा स्थल पर पहुँच चुकी थीं। दोनों वैरागिनों ने मस्तक मुण्डन करवा लिया था और दीक्षा लेने की तैयारी थी। इतने में कितने ही धर्मद्रोही विरोधियों ने विघ्न डालने का प्रयत्न किया। उन्होंने पीपाड़ के मुसलमान हाकिम से, जो कई वर्षों से हाकिमी कर रहा था, यह शिकायत की कि एक दस वर्षीया बालिका को जबरन दीक्षा दी जा रही है। यह महान अनर्थ है। भोले हाकिम ने उसी समय उक्त बाई की दीक्षा के लिए हुकुम निकाला कि "जबरचन्द जी की धर्मपत्नी तो दीक्षा ले सकती है, पर उनकी पुत्री को किसी हालत में अभी दीक्षा न दी जाए।" बाहर से आने वाले लोगों की आशाओं पर पानी फिर गया। यह हुकुम तो पहले ही दिन निकाल दिया गया था, लेकिन सुनाया गया ऐन दीक्षा लेने के मौके पर।

संघ के लोगों के चेहरे का रंग उड़ गया था। उनकी प्रतिष्ठा धूल में मिल रही थी। फिर भी संघ के अग्रगण्य लोगों में से कई व्यक्ति हताश होने वाले नहीं थे। उन्होंने बड़े उत्साह भरे शब्दों में कहा — "चिन्ता की कोई बात नहीं है। हम अपने सत्कार्य में महासती जी की कृपा से

अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। वे सीधे कचहरी गये। जाकर देखा तो वहाँ का मामला ही और का और हो गया था। उन हाकिम साहब का तबादला हो गया था। उनके स्थान पर जैन हाकिम आये हुए थे। उनके सामने सारी परिस्थिति रखी गई। उन्होंने कहा — "छोटी उम्र में दीक्षा लेने वाली बहन को यहाँ हाजिर करो, उसका बयान लिया जाएगा।" सब ने कहा — "अब वह यहाँ नहीं आ सकती। आप वहाँ पधारकर ही तहकीकात कर सकते हैं।" सब लोगों की दृढ़ता की छाप जैन हाकिम पर पड़ चुकी थी। वह खुद आए और जतन बाई से पूछा — "तुम दीक्षा क्यों ले रही हो? क्या तुम्हें इन साध्वियों ने बहकाया है? या माता के सिखाने से दीक्षा ले रही हो? अभी तुम्हारी उम्र दीक्षा लेने जैसी नहीं है। अभी गृहस्थी में ही रहो।"

जतन बाई — "दीक्षा लेने का कारण और कुछ नहीं, मुझे आत्मकल्याण करना है। मैं किसी के बहकावे में आकर या सिखाने से दीक्षा नहीं ले रही हूँ। मैं अपनी खुशी से यह बाना अंगीकार कर रही हूँ। आप मुझे दीक्षा लेने की मनाही कर रहे हैं, पर क्या आप यह गारन्टी दे सकते हैं कि तुम विधवा नहीं होओगी? यदि हाँ, तो मैं रुकने के लिए सहर्ष तैयार हूँ अन्यथा मुझे रोकने की शक्ति किसी में नहीं है।"

हाकिम यह उत्तर सुनकर दंग रह गये। उन्होंने दीक्षा लेने की सहर्ष स्वीकृति दे दी और यह भी तसल्ली दी कि मैं स्वयं यथावसर उपस्थित होकर इस कार्य में भाग लूँगा। संवत् 1971 फाल्गुन बदी को बड़े ही शांतिपूर्वक रूप से दीक्षा सम्पन्न हुई।

साध्वी श्री आनंद कुमारी जी के सामने यह घटना चक्र चल रहा था। उनसे जब कभी बातचीत होती तो वे कहतीं — 'सत्यमेव जयते नानृतम'। आखिर सत्य की जीत होती है, झूठ की नहीं। वस्तुतः सत्य की शक्ति संसार में बहुत बड़ी शक्ति है।

साभार- धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

-क्रमशः 🌸🌸🌸

महावीर चेतना का विराट स्वर

संस्कार सौरभ

- डॉ. इंद्रा जैन, उदयपुर

जैन दर्शन में संसार के समस्त विषयों का प्रत्यक्ष या परोक्ष चिंतन प्रस्तुत किया गया है। तीर्थंकर भगवान ने प्राणीमात्र के कल्याण के लिए आध्यात्मिक और व्यावहारिक या सांसारिक सभी विषयों को व्याख्यापूर्वक समझाया है। अकेले भगवती सूत्र में ही गौतम स्वामी ने 36000 प्रश्न पूछकर तत्वज्ञानसुओं की जिज्ञासाओं का सूक्ष्मता से समाधान किया है।

जिनवाणी का प्रमुख उद्देश्य जीव को समस्त दुःखों से सदा के लिए मुक्त करना है लेकिन यह तब ही संभव है, जब ज्ञान और क्रिया दोनों के संगम से पुरुषार्थ कर जीव दुःख के कारण रूप दोषों, पापों का त्याग करे। इसके लिए साधना की आवश्यकता है। असंभव कुछ भी नहीं है। प्रभु ने फरमाया है कि साधक जब उत्कृष्ट और अप्रमाद संवर धर्म को स्पर्श करता है तब मिथ्यात्व यावत् कषाय से उपार्जित कर्मरज को झाड़ता है।

जया संवरमुक्कट्टं धम्मं फासे अणुत्तरं।

तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं।।

- दश. सूत्र, अ. 4, गाथा 55

जब मिथ्यात्व यावत् कषाय के परिणाम से उपार्जित किए हुए घाति कर्म रूपी रज को झाड़ देता है, तब वह सभी पदार्थों को जानने वाले केवल ज्ञान और

केवल दर्शन को प्राप्त कर लेता है।

जीव के शाश्वत आनंद और मनुष्य भव का वैशिष्ट्य बताने के लिए महावीर ने पहले स्वयं साधना करके मोक्ष मार्ग को जाना और फिर अन्य जीवों पर अनुकम्पा कर उसे बताया।

महावीर ने प्रत्येक युग के मानव जीवन की शांति एवं आनंदमय जीवन के बारे में सोचकर जिस अहिंसा प्रधान धर्म को सूक्ष्मता से समझाया यदि हम उसका अंश मात्र भी पालन करने का प्रयास करें तो अनेक अनचाही चिंताओं से मुक्त हो सकते हैं।

प्रत्येक मनुष्य यह सोच ले कि वह मन, वचन और कर्म से किसी दूसरे प्राणी को दुःख नहीं पहुंचाएगा तो संसार की बहुत सारी समस्याओं का स्वमेव समाधान हो जाएगा। महावीर ने तो मिट्टी, पानी, अग्नि, हवा और वनस्पति के भी अकारण दुरुपयोग को हिंसा बताया है। हम क्या कर रहे हैं? किस प्रकार की जीवनशैली की ओर बढ़ रहे हैं? जहाँ इनके दुरुपयोग की कोई चिंता ही नहीं है।

अपरिग्रह जैनों का मुख्य सिद्धांत है और हम शारीरिक सुख भोग की पराकाष्ठा को भी पार करते जा रहे हैं। संतोष, धन और परिग्रह की मर्यादा से पूर्णतः अनभिज्ञ बन रहे हैं।

महावीर के सिद्धांत तो चेतना के प्रखर स्वर गुंजायमान करते रहेंगे। हमें जागने की आवश्यकता है। हम कितना उन सिद्धांतों को जानना चाह रहे हैं और फिर कितना आचरण में लाना चाहेंगे क्योंकि ज्ञान बिना क्रिया उचित फल प्रदान नहीं करेगी। मानस को आनंद से आप्लावित करने के लिए महावीर वाणी सदैव मुखरित है और होती रहेगी।



श्रमण-श्रमणीवृन्द त्यागी, संयमी, स्वादजयी होते हैं। श्रमण जीवन निर्वाह हेतु असावद्य निर्दोष मधुकरी वृत्ति से आहार लेते हैं। साधु अपने निर्वाह के लिए किसी प्रकार का आरंभ-समारंभ नहीं करते। उनके आहार का उद्देश्य पदार्थों की स्वाद-लोलुपता नहीं अपितु संयम के लिए मात्र देह को पोषित करना होता है। आहार का प्रभाव न केवल विचारों पर पड़ता है वरन् आचार एवं व्यवहार को भी प्रभावित करता है। इसलिए संयमी

जितना उदरपूर्ति के लिए आवश्यक है। वह दूसरे दिन के लिए संग्रह नहीं करता। ऐसे ही संयमी निर्ग्रन्थ अपनी आवश्यकतानुसार आहार लेते हैं। आहार का लक्ष्य मोक्ष होता है, स्वाद नहीं। संयम पालने का आधार देह है और देह का निर्वाह आहार है।

गोचरी, साधु की भिक्षावृत्ति है। यह जीवन निर्वाह की निर्दोष प्रवृत्ति है। संयम-रमण में अभिवृद्धि है। बहराने वाला पाता शिवपथ की सिद्धि है। गोचरी-विवेक श्रमण एवं श्रावक दोनों के लिए आवश्यक होता है। गोचरी-विवेक का विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है -



गोचरी विवेक

- पद्मचंद गांधी, जयपुर

साधक आचार के प्रति जागरूक रहने के कारण आहार-विवेक का ध्यान रखते हैं।

निर्ग्रन्थ अणगार अहिंसा और अपरिग्रह महाव्रत का पालन करने के लिए सर्व-संपत्करी भिक्षा का अवलम्बन लेते हैं। उनकी भिक्षावृत्ति न दीनवृत्ति है और न पौरुषहीनता है। यह नितान्त अहिंसा की आराधना हेतु है। दशवैकालिकसूत्र अ.1 गाथा 2-4 स्पष्ट करती है कि जैसे भंवरा अलग-अलग फूलों से थोड़ा-थोड़ा रस पीता है, किसी भी पुष्प को पीड़ित नहीं करता, हानि नहीं पहुँचाता, गन्ध या वर्ण को विकृत नहीं करता और अपने को भी तृप्त कर लेता है, ठीक उसी प्रकार श्रमण दाता द्वारा दिये जाने वाले निर्दोष आहार की एषणा में रत रहते हैं। श्रावक द्वारा सहजता में बनाये गये आहार का कुछ अंश ग्रहण करते हैं। भंवरा उतना ही रस ग्रहण करता है

- गो** - गोपन करना,
- च** - चित्तवृत्तियों को शुद्ध रखना,
- री** - रीति-प्रीति से देना,
- वि** - विनष्ट होना,
- वे** - वेग व उद्वेग,
- क** - कर्मों का प्रदेश

अपरिग्रही प्रवृत्ति के कारण साधु के पास आहार प्राप्ति का एकमात्र विकल्प है भिक्षावृत्ति। जिसके माध्यम से वह आवश्यक सामग्री प्राप्त करता है। इसलिए उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 2 गाथा 28 में कहा है - **‘सर्वं से जाइयं होइ, नत्थि किंचि अजाइयं’** अर्थात् साधु के लिए जो कुछ सामग्री होती है, वह सब याचित ही होती है। इसलिए उसे परदत्तभोई भी कहते हैं। संयमी

श्रमणों की गोचरी मात्र शरीर रक्षण, पोषण एवं शरीर बचाने के लिए है, जिससे उनका प्रत्येक पल ज्ञान-ध्यान, मोक्षमार्ग में लगे।

श्रमण का गोचरी-विवेक

निर्ग्रन्थ श्रमणों को कैसा आहार लेना, किस प्रकार लेना, कहाँ से लेना, कितना लेना, किस समय लेना, किस प्रकार दिया जाता हुआ लेना, किस प्रकार दिया जाता हुआ नहीं लेना इत्यादि विषयों में शास्त्रकारों ने स्पष्ट दिशा-निर्देश एषणा समिति में दिये हैं। उन विविध नियमोपनियमों का सावधानी से पालन करना आवश्यक होता है। एषणा के तीन भेद बताये हैं, जो गवेषणा, ग्रहणेषणा तथा परिभोगेषणा के रूप में जाने जाते हैं।

गवेषणा : गोचरी के लिए निकलने पर आहार के कल्पनीय-अकल्पनीय के निर्णय, जिन नियमों का पालन करना और जिन दोषों से बचना साधु के लिए आवश्यक है, वह गवेषणा है अर्थात् सूझते आहार की खोज करना।

ग्रहणेषणा : आहार आदि को ग्रहण करते समय साधु जिन-जिन नियमों का पालन करता है और जिन दोषों से बचता है, वह ग्रहणेषणा कहलाती है।

परिभोगेषणा : मिले हुए आहार का उपभोग करते हुए साधु को जिन-जिन नियमों को पालना चाहिए और जिन दोषों से बचना चाहिए, उसे परिभोगेषणा कहते हैं।

एषणा समिति के अनुसार 42 दोष टालकर जिनमें 16 उद्गम के दोष, जो भिक्षा देते समय गृहस्थ द्वारा लगते हैं, उत्पादना के 16 दोष, जो साधु द्वारा लगने वाले होते हैं तथा 10 दोष साधु एवं श्रावक द्वारा लगते हैं, जिन्हें एषणा के दोष कहते हैं। इस प्रकार 42 दोषों को टालना जरूरी होता है। इसके साथ उपभोग या परिभोग में लगने वाले 5 दोष हैं। इनको मिलाते हुए मुख्य रूप से 47 दोषों से रहित आहारादि ही साधु के लिए ग्राह्य और उपभोग्य है।

श्रावक का गोचरी-विवेक

श्रावक का 12वां व्रत अतिथि+संविभाग का

होता है। जिसका अर्थ है- अतिथि के संविभाग अर्थात् जो बिना बताये, बिना निश्चित समय, तिथि के श्रमण-निर्ग्रन्थ का गोचरी के लिए आना तथा व्रतधारी श्रावक अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर अपने पास प्राप्त साधनों में से परिवार के पोषण के अतिरिक्त पंचमहाव्रतधारी संयमी श्रमण का हिस्सा या संविभाग करे और अहोभाव से अपने साधनों में से दान करें, संविभाग कहलाता है। आवश्यकसूत्र में स्पष्ट करते हुए लिखा है- गृहस्थ, श्रावक जो अपने लिए आहारादि बनाते हैं या साधन प्राप्त करते हैं उनमें से एषणा समिति भिक्षावृत्ति के 42 दोषों के त्याग के रूप से युक्त निस्पृह साधु-साध्वियों के कल्पनीय एवं ग्राह्य आहारदान देने के लिए भाग करना यथा संविभाग है। इस व्रत को ग्रहण करते समय श्रावक प्रतिज्ञा करता है कि 'मुझे श्रमण-निर्ग्रन्थों को आधाकर्मादि 16 उद्गम दोष एवं अन्य 26 दोषरहित प्रासुक एवं एषणीय 14 प्रकार के दान अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कम्बल, पाद पोंछन, छोटा पाट, सोने का लम्बा पाट, शय्या, बिछाने के लिए दर्भादि, औषध और भेषज का दान- अहोभाव से आदरपूर्वक करे।

तत्त्वार्थ सूत्र अध्ययन 6 सूत्र 34 के अनुसार 'विधि द्रव्य, दातृ पात्र विशेषात् तद्विशेषः।' श्रावक को अतिथि संविभाग के माध्यम से निम्न चार अंगों का ध्यान रखना अनिवार्य है -

1. विधि : विधि शुद्ध दान वह कहलाता है, जो अभ्युत्थान, सत्कार आदि विधि से दिया जाए। आदरभाव, अहोभाव से दान देने का भाव रखना, जब भोजन करे उससे पूर्व भावना भाना। मैं धन्य होऊँगा जब सन्त को आहार बहराकर आनन्द की अनुभूति करूँगा, ऐसे भाव रखना। 'पुण्यवान को गोचरी का अवसर मिलता है' जिसके मन में ऐसी भावना आती है, वह धन्य है।

बहराने की प्रवृत्ति आनंद से भरी है, जीवन में हरदम खुशियाँ खड़ी हैं। साधु-भगवन्त भगवान हैं हमारे, इनकी सुश्रूषा निर्जरा की लड़ी है।

साधु-सन्त जब गोचरी के लिए आए, उनकी अगवानी

करें, दरवाजा खुला रखें एवं पुनः पहुँचाने का भाव रखें।

2. द्रव्य : द्रव्य शुद्ध दान वह है जो देय वस्तु कल्पनीय हो, निर्दोष हो। सामग्री सचित में हो, पर अचित्त हो। श्रावक को सचित-अचित्त का विवेक रखना जरूरी है। प्रासुक द्रव्य हो। ऐसी वस्तु नहीं हो जो दोषयुक्त हो। जैसे धर्मरुचि अनगार को कड़वे तुम्बे का आहार दिया गया। देय वस्तु 42 दोषों से रहित हो, मुनियों के तप, संयम में सहायक एवं वर्द्धक हो।

3. दाता : दाता वह शुद्ध कहलाता है जिसमें किसी स्वार्थ, लोभ, प्रसिद्धि या प्रतिफल की भावना न हो, जिसके हृदय में निर्ग्रन्थ के प्रति श्रद्धा-भक्ति हो। जो सुपात्र का प्रेमी हो, उसके प्रति अहोभाव हो, सदैव सुपात्र की भावना रखता हो, सुपात्र को देखकर जिसके मन में आनन्द की सीमा नहीं रहे, सुपात्र को देखकर जिसके खुशी के आँसू छलक पड़े। जैसे चन्दनबाला। ऐसा समझें जैसे बहुत दिन से बिलुडे हुए आत्मीयजन मिले या अत्यन्त प्रिय वस्तु की प्राप्ति हो गई हो। इस प्रकार उच्चभाव से सुपात्र को दान करना, आदरपूर्वक लाना, ले जाना, भावना भाना तथा दूसरों के लिए अनुमोदना करना, पुनः पधारने की भावना रखना।

4. सुपात्र : पात्र वह शुद्ध है जो आरम्भ-परिग्रह तथा सांसारिक सम्बन्धों को त्यागकर आत्मकल्याण के लिए अग्रसर हुआ है तथा जो अणगार है। जो केवल संयम निर्वाह के लिए शरीर को सहारा देने हेतु आहार लेते हैं।

उक्त रीति से चार अंगों सहित संयमी पुरुषों को दान देना उत्कृष्ट सुपात्रदान है। इसको देने से तीर्थकर गोत्र का उपार्जन होता है। आगम स्पष्ट करते हैं- ऋषभदेव को श्रेयांसकुमार द्वारा ईशुरस का दान, सुबाहुकुमार द्वारा पूर्वभ्रम में सुदत्त अणगार को मासखमण पारणे में शुद्ध भावभक्ति रूप आहार दान दिया गया, जिसके फलस्वरूप अपूर्व

आश्चर्यजनक मानवीय सम्पदा मिली।

चन्दनबाला द्वारा प्रभु महावीर को उड़द के बाकलों का दान दिया गया। संगम ग्वाले द्वारा मुनि को खीर के दान से शालिभद्र के रूप में अथाह सम्पदा प्राप्त हुई। प्रभु महावीर ने नयसार के भव में लकड़हारे के रूप में मुनि को दान देकर तीर्थकर गोत्र का उपार्जन किया। पूणिया श्रावक, आनन्द श्रमणोपासक, जगदुशाह, खेमाशाह, राजा कुमारपाल ने यथायोग्य संविभाग कर सुपात्रदान देकर स्वयं को धन्य बनाया।

सुपात्र को दान देते समय निम्न बातों का ध्यान नहीं रखने पर श्रावक को अतिचार दोष लगते हैं। जैसे- अचित्त को सचित पर रख देना, कुबुद्धि से अचित्त को सचित से ढक देना, भिक्षा देने के समय को टाल देना, दान न देने की भावना से स्व वस्तु को परायी बताना, ईर्ष्याभाव से दान देना, ये सभी अतिचार दोष हैं। इनका विवेक रखना जरूरी है।

उपरोक्त के अतिरिक्त गोचरी बहराते समय निम्न प्रकार से भी विवेक रखा जाए-

1. विद्युतीय उपकरण, मोबाइल, सचित वस्तुएँ पास में नहीं रखना।
2. देय वस्तुओं को निर्दोष स्थान पर रखना।
3. सूझता आहार प्रदान किया जाए, ऐसा प्रयास हो।
4. वस्तु को फूँक न देना, संकेत के लिए चुटकी देना, भाप की बूँदें न गिरना हो, इसका ध्यान रखना।
5. आधा सिका हुआ, कच्चा, सचित अथवा मिश्र आहार नहीं बहराना।
6. गोचरी बहराते समय गीले बर्तन पास न हो। स्वयं के हाथ व शरीर भी कच्चे पानी से गीले न हो।
7. गिरी हुई वस्तु को बुहारना नहीं, उठाना नहीं। बहराने के निमित्त से चम्मच, कटोरी बिगाड़ना नहीं।

8. दूध उबल रहा हो, तेल जल रहा हो, पानी से बाल्टी भर रही हो उस समय गोचरी पधारने पर अपना काम बिगाड़ना नहीं। दूसरा सूझता व्यक्ति हो वह गोचरी बहरा सकता है।
9. रास्ते में सचित्त वस्तुएँ न बिखेरें, घर का दरवाजा बन्द न रखें, उस समय पोछा-झाड़ू न करें।
10. निर्ग्रन्थ मुनि को देखकर अन्दर भागना नहीं, सूचित करना नहीं, जो वस्तुएँ जिस स्थिति में हैं, यथास्थिति बनाए रखें।
11. दान देते समय किसी प्रकार की भौतिक लालसा रखे बिना निर्जरा की भावना रखें। ईर्ष्या, अहंकार से बहराना नहीं। बिना पूछे चुपके से बहराना नहीं।
12. बहराने के बाद सामग्री कम पड़ जाए तो पूर्ति हेतु आरम्भ-समारम्भ नहीं करें। घर में पड़ी अन्य सामग्री से काम चला लें या ऊनोदरी तप कर लें।
13. किसी की गलती से घर असूझता हो जाने पर कषाय उत्पन्न नहीं करें, न ही पुनः पधारने का आग्रह करें।
14. साधु के निमित्त से कोई भी वस्तु खरीदकर, बनाकर, टिफिन लेकर नहीं जावें, न ही झूठ बोलकर दें।
15. साधु के निमित्त भोजन, चाय, ज्यूस आदि नहीं बनावें।
16. धोवन पानी, बर्तन राख से मांजकर धोने से ही बनता है, पानी में राख घोलने से नहीं।
17. हरी सब्जियों का सलाद, बीज वाले फल, साबुत बादाम, पिस्ता, अखरोट, खसखस, अंजीर, चिरौंजी, साबुत सौंफ, जीरा, अजवाइन, इलायची आदि न बहरावें।

इस प्रकार गोचरी का विवेक रखकर सुपात्रदान देकर पुण्य अर्जन कर सकते हैं। उत्कृष्ट रसायन आने पर

तीर्थकर गोत्र का उपार्जन कर सकते हैं। अतः हमें गोचरी-विवेक रखकर अपने आपको धन्य बनाना है।

नोट - सचित्त-अचित्त, सूझता-असूझता की बेहतर जानकारी के लिए साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों 'कल्प मर्यादा', 'श्रावक के 12 व्रत' आदि का अध्ययन करें और समय-समय पर महापुरुषों से पूछकर जिज्ञासा-समाधान करते रहें।

***** संकलित *****

ध्यातव्य है कि -

1. चौका, परिंडा आदि के मांजने योग्य बर्तनों को राख से मांजकर उनको धोया हुआ प्रथम बार का पानी एक तरफ साफ सूखे बर्तन में रख दें तो वह पानी 20 मिनट बाद स्वतः धोवन पानी बन जाता है। चूना, योग या राख घोलकर बनाया हुआ पानी किसी भी रूप में धोवन नहीं होता।
2. दाल, चावल, पोहा आदि पकाने से पूर्व उनको धोया हुआ पानी भी एक तरफ साफ सूखे बर्तन में रख देने से 15 मिनट बाद धोवन पानी बन जाता है।
3. दूध, दही, छाछ, आटा आदि के बर्तन को (बिना राख प्रयोग किए भी) धोया हुआ प्रथम बार का पानी एक तरफ साफ सूखे बर्तन में रख देने से 15 मिनट बाद वह भी धोवन पानी बन जाता है।

उक्त तीनों प्रकार के धोवन सचित्त के त्यागी श्रावक-श्राविका, तपस्वी और संयमी साधु-साध्वियों के लिए ग्राह्य है। उक्त सभी तरह के धोवन की काल मर्यादा हर ऋतु में 5 प्रहर की मानी गई है।

नोट - दाल, चावल पोहा व बर्तनों को धोने के लिए छना हुआ पानी काम में लेने से सहज ही पानी में रहे हुए त्रस जीवों की सुरक्षा हो जाती है।



गुरु की दिव्यवाणी ने राह दिखाई आस्था की अग्नि परीक्षा

- डॉ. नवल सिंह जैन, बिजयनगर

हमारी जीवन यात्रा में कई बार ऐसे क्षण आते हैं तब हम समाज, नौकरी या व्यापार में काम करते हुए असामान्य परिस्थितियों का सामना करते हैं। कुछ घटनाएँ हमारे विश्वासों को झकझोर देती हैं और कभी-कभी अज्ञात शक्तियों का भय हमें घेर लेता है। ऐसा ही एक अनुभव मेरे साथ घटित हुआ, जिसने मेरे सोचने-समझने की दिशा को ही बदल दिया।

अंधविश्वास का डर ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

एक एम.टी.एस. स्टाफ ने हलके-फुलके अंदाज में कहा, “आप बहुत उग्र रहते हैं, जमाना बहुत खराब चल रहा है। मुझे तो कुछ और ही लग रहा है।” यह सुनते ही मेरा दिल तेजी से धड़क उठा। कहीं सच में किसी ने मुझ पर तंत्र-मंत्र तो नहीं कर दिया। जैसे ही इस विचार ने दिमाग में घर किया, मेरी मानसिक स्थिति और खराब होती गई। मैंने हर छोटी-बड़ी चीज को इस घटना से जोड़ना शुरू कर दिया।

मेरी कार्यक्षमता पर इसका सीधा असर पड़ा। मैं बिना वजह चिंतित रहने लगा, काम में मन नहीं लगता था। हर समय किसी अनहोनी की आशंका बनी रहती थी। घर में भी मेरा व्यवहार बदलने लगा, जिससे परिवारजन भी चिंतित हो गए।

गुरुदेव के सान्निध्य में समाधान की तलाश

मैंने मेरी बड़ी बहन को फोन पर सारा वृत्तांत बताया।

उन्होंने सलाह दी कि मुझे गुरुदेव के पास जाकर अपनी समस्या रखनी चाहिए, जिससे सभी चिंताएँ समाप्त हो जाएँगी। गुरुदेव उदयपुर में विराजमान थे। दो दिन बाद ही दशहरे की छुट्टियाँ थीं तो मुझे यह सुझाव उचित लगा और मैंने उत्सुकता एवं जिज्ञासा के साथ गुरुदेव के दर्शन हेतु प्रस्थान किया। उदयपुर में दोपहर के प्रश्नोत्तर सत्र में मैं एक श्राविका को सुन रहा था, जिसने एक जिज्ञासा विस्तृत में रखी, जिसका तात्पर्य था— “क्या किसी पर तंत्र-मंत्र का प्रभाव हो सकता है?” यह सवाल मेरे मन की गहराइयों में गूँज उठा, क्योंकि यह ठीक वही प्रश्न था, जो मुझे परेशान कर रहा था। गुरुदेव ने संक्षिप्त उत्तर दिया— “**कर्म प्रबल हैं और धर्म पर श्रद्धा अडिग रखनी चाहिए।**” यह उत्तर सुनकर मेरे भीतर एक अनोखी शांति का संचार हुआ, लेकिन फिर भी मैं अपनी व्यक्तिगत समस्या को गुरुदेव से साझा करना चाहता था।

गुरुदेव की वाणी का प्रभाव ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

दिन का समय बीत गया, लेकिन मुझे व्यक्तिगत रूप से गुरुदेव से बात करने का अवसर नहीं मिल सका। संध्या समय प्रतिक्रमण के बाद गुरुदेव पाट पर विराजमान थे और निकट ही उपाध्याय प्रवर भी उपस्थित थे। संकोचवश मैंने उपाध्याय प्रवर से निवेदन किया कि मुझे गुरुदेव से एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात करनी है। उन्होंने सहमति जताई

और मैं हाथ जोड़कर गुरुदेव के चरणों में प्रस्तुत हुआ।

मैंने पूरी घटना विस्तार से बताने के लिए शुरुआत की। पहला वाक्य निकला ही था कि गुरुदेव के एक वाक्य में उत्तर दे दिया, जैसे कि उन्हें पहले से ही सारा वृत्तांत मालूम हो। **‘देव, गुरु और धर्म पर दृढ़ श्रद्धा रखो, कुछ नहीं होगा।’** उनका यह वाक्य मानो मेरे मन के सारे प्रश्नों का उत्तर था। मुझे लगा जैसे गुरुदेव बिना विस्तार में कहे ही मेरी सारी चिंता को समझ गए।

गुरुदेव के रात्रि विश्रांति का समय हो चुका था। मैं मांगलिक सुनकर स्थानक से नीचे उतरा। जैसे ही मैं बाहर आया, मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मेरे मस्तिष्क का सारा भार उतर गया हो। भीतर जो अज्ञात भय बना हुआ था, वह पूरी तरह समाप्त हो गया था। मेरी आत्मा को एक असीम शांति का अनुभव हुआ।

श्रद्धा का प्रकाश

यह घटना मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़

साबित हुई। मैं समझ गया कि मनुष्य के भीतर भय तब जन्म लेता है जब उसकी श्रद्धा डगमगाने लगती है। **यदि हम देव, गुरु और धर्म पर अटूट विश्वास रखते हैं तो कोई भी नकारात्मक शक्ति हमें प्रभावित नहीं कर सकती।** अंधविश्वास केवल मानसिक भ्रम का परिणाम होता है और जब श्रद्धा का प्रकाश भीतर जलता है तो अंधकार स्वयं ही दूर हो जाता है।

इस घटना के बाद मेरा मनोबल पहले से अधिक मजबूत हो गया। कार्यस्थल पर भी मैं आत्मविश्वास से भरपूर था। अब मुझे किसी भी अनहोनी या नकारात्मक विचारों का भय नहीं था, क्योंकि मेरे भीतर गुरुदेव के शब्दों की शक्ति काम कर रही थी -

‘देव, गुरु व धर्म पर दृढ़ श्रद्धा रखो, कुछ नहीं होगा।’

इस अनुभव ने मुझे सिखाया कि सच्ची आस्था और समर्पण से हर भय, भ्रम और बाधा को पार किया जा सकता है।

रचनाएँ आमंत्रित



आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक भिन्न-भिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी क्रम में आगामी धार्मिक अंक **सकारात्मक विचारों का प्रभाव** (• सकारात्मक विचार की आवश्यकता क्यों, • सकारात्मक विचार कैसे लाएँ, • सकारात्मक विचार का परिणाम), **जैन सिद्धांत और पर्यावरण संरक्षण** (• पर्यावरण का महत्व एवं उपयोगिता, • पर्यावरण और हमारा जीवन, • पर्यावरण और जैन धर्म का क्या संबंध, • पर्यावरण का संरक्षण कैसे किया जाए, • बिगड़ते पर्यावरण का जिम्मेदार कौन) विषयों पर आधारित रहेंगे। कृपया विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ यथाशीघ्र ही भिजवावें। उपरोक्त विषय के अतिरिक्त प्रेरणात्मक सारगर्भित विषयों पर भी लेख, रचनाएँ आदि स्पष्ट एवं सुंदर शब्दों में सादर आमंत्रित हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

- श्रमणोपासक टीम



9314055390



news@sadhumargi.com

चमड़े का व्यापार हत्या का कारोबार

- अभिषेक भंडारी, पारुल भंडारी, फतेहनगर

अहिंसा के पुजारी भगवान महावीर, बुद्ध एवं गांधी को जन्म देने वाला महान भारत देश आँकड़ों के अनुसार आज विश्व में चमड़ा निर्यात करने में तीसरे नंबर पर आ गया है। जिस देश में दूध-दही की नदियाँ बहती थीं, जो देश सोने की चिड़िया कहलाता था, उस देश की धरती मासूम जानवरों के रक्त से रंजित हो रही है।

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के मुताबिक पूरे देश में औसतन 77.01 फीसदी आबादी माँसाहारी है। किसी जानवर की निर्दयतापूर्वक खाल निकालकर, उसे शरीर पर पहनकर अपने आपको स्मार्ट समझने वाला मनुष्य न केवल मूर्खता का परिचय दे रहा है बल्कि भयानक क्रूरता को प्रोत्साहित कर अपने नारकीय कर्मों का बंधन भी कर रहा है। आज के युवा मैट्रो, वुडलैंड एवं रेड चीफ ब्रांड के जूते पहन एवं लड़कियाँ लुई वीटोन जैसे महंगे ब्रांड के पर्स खरीद अपने आपको बहुत उच्च स्तरीय समझने की भयानक भूल कर रहे हैं।

चमड़े के जूते, बेल्ट, पर्स, जैकेट आदि सामानों का उपयोग करना मतलब 'आ बैल मुझे मार' वाली कहावत को चरितार्थ कर अपने अच्छे पुण्य कर्मों को कम कर सांसारिक जीवन में दुःखों को आमंत्रित करने के समान है।

कुछ लोग यह सोचते हैं कि हमारे यहाँ मोची जो चमड़ा लाता है वह मृत जानवरों का लाता है, लेकिन

हमें व्यापार की इस गणित को समझना होगा कि बाजार में कोई भी वस्तु डिमांड एंड सप्लाई के सूत्र पर कार्य करती है। 77 प्रतिशत माँसाहारी जनसंख्या के लिए चमड़े के सामानों का उपयोग करना सामान्य बात है। इसके लिए जीवित जानवरों से भी चमड़ा प्राप्त किया जा रहा है। हकीकत तो यह है कि डिमांड बढ़ने पर गर्भवती, अपाहिज जानवरों एवं बछड़ों को भी बक्शा नहीं जाता और उनसे भी निर्दयतापूर्वक चमड़ा प्राप्त किया जाता है।

प्रसिद्ध पशु अधिकारवादी सात बार की सांसद मेनका जी गांधी कहती हैं कि चमड़े की वस्तुएँ न केवल हत्याओं, क्रूरताओं से भरी हुई हैं बल्कि पर्यावरण के लिए भी अनुकूल नहीं हैं क्योंकि चमड़ा उद्योग में बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। चमड़े को साफ करने, खून एवं जानवरों के अंगों को चमड़े से हटाने में बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। चमड़ा उद्योग में प्रयोग में लिए जाने वाले कैमिकल, कलर एवं पॉलिश से इंसानों के साथ-साथ जलीय जीवों में भी बहुत सारी बीमारियाँ हो जाती हैं एवं वे जीव मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

माँस खाना और चमड़ा पहनना दोनों बराबर के पाप हैं। माँस यानी मारकर खा लेना और दूसरे में जानवरों को मारकर पहन लेना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

भारत में ज्यादातर चमड़ा गोवंश (गाय-भैंस) का होता है क्योंकि एक तो इसे मारना आसान होता है, दूसरा इनका आकार बड़ा होता है, जिससे अधिक चमड़ा प्राप्त होता है। देश में जहाँ एक तरफ गाय को माता का दर्जा प्राप्त है वहीं दूसरी तरफ देश के कत्लखानों में प्रतिदिन हैवानियत का तांडव मचा रहता है।

करीब एक सामान्य गाय की खाल से बने बैग को बनाने में 17128 लीटर पानी का इस्तेमाल होता है जो लगभग 537 बार नहाने के बराबर होता है। व्यक्ति यदि चमड़े के जूते, बेल्ट, पर्स, जैकेट, बैग, सोफा कवर, कार कवर, मोबाइल कवर व अन्य सामान यदि इस्तेमाल कर रहा है और दूसरी तरफ प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, उपवास या अन्य तपस्या कर रहा है तो यह पूर्णतया विरोधाभासी जीवन बन जाएगा। ठीक उसी तरह जैसे किसी व्यक्ति का एक हाथ बाल्टी में पानी भरने का काम कर रहा है तो दूसरा हाथ बाल्टी में छेद कर रहा है।

डेयरी उद्योग में जब गोवंश बूढ़ा, बाँझ एवं अपाहिज हो जाता है तो चमड़े का मुख्य स्रोत बन जाता है। चूँकि डेयरी उद्योग में नर बछड़ों से कोई फायदा नहीं होता है, इसलिए उन्हें कत्लखानों में कटने के लिए बेच दिया जाता है। जबकि कुछ को जानबूझकर मौत के घाट उतारा जाता है ताकि उनकी खाल को जूता बनाने वाली कंपनियों को बेचा जा सके।

चमड़ा उद्योग में यह प्रचलित है कि जीवित जानवरों की खाल उधेड़ने से निर्मित चमड़ा अधिक कोमल होता है। इंसान भूल जाता है कि यह ब्रांडेड जैकेट, शूज, पर्स किसी निर्दोष मासूम की जान लेकर

बनाए गए होंगे।

वियतनाम जैसे देश में मगरमच्छ का पालन केवल चमड़ा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। 4×4 फीट के कमरे में 8 से 10 मगरमच्छों को बड़ा किया जाता है, जिसमें ना वे घूम सकते हैं और ना ही सही तरीके से खा-पी सकते हैं। पूरी तरह नारकीय जीवन जीने का बोध होता है और अंत में उन्हें भयानक क्रूरता से मारकर चमड़ा प्राप्त किया जाता है। चमड़े के कारखाने पर्यावरण पर भी कहर बरपाते हैं। चमड़े के कारखानों द्वारा नदी में क्रोमियम जैसी जहरीली धातुएँ गिरा दी जाती हैं। हर तरह के क्रोमियम वेस्ट को खतरनाक माना जाता है।

चमड़े के विकल्प

उच्च-

गुणवत्ता, क्रूरता-मुक्त जूते और सहायक सामान खोजना आसान है, जो स्टाइलिश और सस्ते भी हैं। आप बिना चमड़े के बनी जैकेट, जूते और सहायक सामानों की

विस्तृत रेंज पा सकते हैं, जो कपास, लिनन, रेमी, जूट, कैनवास और सिंथेटिक्स जैसे मटेरियल्स से बनी हैं। टाटा कंपनी एवं केरल की मलाई कम्पनी वर्तमान में कैक्टस, कोकोनट से निर्मित चमड़ा बना रही है, जो कि क्रूरता रहित भी है एवं पर्यावरण प्रदूषण भी नहीं करता है।

तो आइए संकल्प लें कि -

घर समाज को पूर्णतया

चमड़ा मुक्त बनाएं।

महावीर का अहिंसा संदेश

जन्म-जन्म तक पहुँचाएं।





संस्कार सौरभ

निर्दोष आहार-पानी

- डॉ. आभाकिरण गांधी, धागड़मऊ

- गो - गोपन करें इंद्रियों का
 च - चर्या में अनुरक्त रहें
 शी - रिक्त बनें कर्मों से
 वि - विश्वास रखें स्वयं पर
 वे - वैमनस्यता को छोड़ें
 क - कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ें

साधना की सफलता के लिए देह रूपी साधन के निर्वाह हेतु निर्दोष आहार-पानी की आवश्यकता होती है। उसी आवश्यकता की पूर्ति का ज्ञान गोचरी-विवेक है। साधक का हर कदम विवेक युक्त होता है। पंच महाव्रत रूप प्रतिज्ञाओं का जीवनपर्यंत प्राण-प्रण से पालन करने वाला श्रमण साधु होता है। साधु संयम जीवन के संविधान का पालन आत्मसाक्षी से करता है। श्रावक साध्वाचार के संरक्षण में अभिन्न भूमिका निभाता है। श्रमण और श्रावक दोनों ही मोक्ष मार्ग के पथिक हैं। चतुर्विध संघ- साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के दो पाये श्रमण-श्रावक के संबंध में आधारशिला विवेक पर आधारित है। अतएव श्रावक का साधु के प्रति व्यवहार विनय-विवेक युक्त होना चाहिए। श्रावक को भाई और मित्र के समान कहा है। जैसे भाई और मित्र कार्य की पूर्णता में सहायक की भूमिका निभाते हैं, उसी प्रकार श्रावक भी साधु-साध्वी के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होते हैं। जीवन नदी की वह धारा है, जो किनारों को छूकर बहा करती है। नदी किनारों को कुछ न कुछ दिया करती है तो कुछ न कुछ लिया भी करती है।

जीवन के जो भी निकटवर्ती हैं वे जीवन नदी के किनारों की भाँति हैं। साधु और श्रावक की कड़ी भी इस सेतु के बीच की है। साधु अपने जीवन निर्वाह की उपयोगी सामग्री श्रावक वर्ग से ग्रहण करता है और उसमें विवेक रखता हुआ अपनी संयम यात्रा का निर्वाह करता है।

जीवन निर्वाह के लिए यदि साधु कोई व्यवसाय करता है तो उसे रूपयों का लेन-देन करना आवश्यक हो जाएगा, जो उसके अपरिग्रह और अहिंसा व्रत में बाधा रूप है। ऐसी स्थिति में उसके सामने एक ही विकल्प रह जाता है कि वह भिक्षा द्वारा आहारादि आवश्यक सामग्री का उपार्जन करे। आगम में कहा गया है- 'सत्त्वं से जाइयं होइ, गत्थि किंचि अजाइयं' अर्थात् साधु के लिए जो कुछ सामग्री उपयोगी होती है, वह सब याचित ही होती है। अयाचित कोई वस्तु उसके पास नहीं होती। इसी दृष्टिकोण से उसे 'परदत्तभोई' भी कहा गया है। भिक्षा तीन प्रकार की बताई गई है - दीन वृत्ति, पौरुषघ्नी व सर्वसंपत्करी। अनाथ और अपंग व्यक्ति मांगकर खाते हैं, वह दीन वृत्ति भिक्षा है। श्रम करने में समर्थ व्यक्ति मांगकर खाता है, वह पौरुषघ्नी भिक्षा है। दीन वृत्ति का हेतु असमर्थता, पौरुषघ्नी का हेतु निष्कर्मण्यता और सर्वसम्पत्करी का हेतु अहिंसा है। निर्ग्रंथ अणगार अहिंसा और अपरिग्रह महाव्रत के पालन के लिए सर्वसम्पत्करी भिक्षा का अवलम्बन लेते हैं। उनकी भिक्षा में न दीन वृत्ति है और न पौरुष हीनता है।

वह नितांत अहिंसा की आराधना का हेतु है।

तीर्थकर देव ने साधु के निर्वाह हेतु असावद्य निर्दोष मधुकरी वृत्ति का निर्देश दिया है।

**जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमवो आवियई वसं।
न य पुप्फं क्लामेइ, सो य पीणेइ भव्वयं॥**

- दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन 1, गाथा 2

जिस प्रकार भ्रमर द्रुम-पुष्पों से थोड़ा-थोड़ा रस पीता है, किसी भी पुष्प को पीड़ित नहीं करता, हानि नहीं पहुँचाता, उसके वर्ण या गंध को विकृत नहीं करता और अपने को भी तृप्त कर लेता है उसी प्रकार लोक में जो मुक्त (अपरिग्रही) श्रमण हैं, वे दाता द्वारा दिये जाने वाले निर्दोष आहार की एषणा में रत रहते हैं। श्रमण, गृहस्थों द्वारा उनके स्वयं के लिए या परिवार के लिए सहज रूप से



बनाए हुए आहार को ग्रहण करते हैं, जैसे भ्रमर पुष्पों से रस लेता है। मधुर उतना ही रस ग्रहण करता है जितना उदर पूर्ति के लिए आवश्यक होता है। वह दूसरे दिन के लिए कुछ संग्रह करके नहीं रखता। वैसे ही श्रमण संयम निर्वाह के लिए आवश्यक हो उतना ही ग्रहण करता है। संचय या संग्रहण नहीं करता।

**आहार से शरीर का पोषण है,
संयम जीवन का विशेषण है।
कर्मनिर्जरा का उपवन है,
मोक्ष पथ का मधुवन है॥**

मधुकर पुष्पों से सहज सिद्ध रस ग्रहण करता है, वैसे ही श्रमण साधक गृहस्थों के घरों से स्वाभाविक रूप से बने आहारादि ग्रहण करता है। एषणा के तीन भेद हैं-

गवेषणा, ग्रहणैषणा और परिभोगैषणा। गो-चर्या के लिए निकलने पर आहार के कल्पाकल्प के निर्णय के लिए जिन नियमों का पालन करना और जिन दोषों से बचना साधु के लिए आवश्यक है, वह गवेषणा है। आहारादि को ग्रहण करते समय साधु जिन-जिन नियमों का पालन करता है और जिन दोषों से बचता है उसे ग्रहणैषणा कहते हैं। मिले हुए आहार का उपभोग करते हुए साधु को जिन-जिन नियमों को पालन चाहिए और जिन दोषों को टालना चाहिए उसे परिभोगैषणा कहते हैं।

साधु जी गोचरी के 42 दोषों (16 उद्गम के, 16 उत्पाद के एवं 10 एषणा के) रहित भिक्षा ग्रहण करते हैं। साध्वाचार के संरक्षण में श्रावक-श्राविकाओं की भूमिका साधु जीवन के पालन में दोषों को संपूर्णतः दूर करने का माध्यम है। यह आध्यात्मिक विकास करने का प्रशस्त मार्ग है।



भक्त के लिए कहा है कि उसे केवल भक्ति में रहना चाहिए, उसका ध्यान दूसरी तरफ जाना ही नहीं चाहिए। किसी ने मेरे से पूछा- “श्रद्धा कैसी होनी चाहिए?” मैंने कहा- “अंधी होनी चाहिए।” आप मानेंगे नहीं। आप कहेंगे कि अंधश्रद्धा ठीक नहीं। अंधश्रद्धा अलग है और अंधी श्रद्धा अलग। जान लिया, पहचान जिया फिर श्रद्धा की है, फिर इधर-उधर देखने-झांकने की बात नहीं। हृदय श्रद्धा का मुख्य केंद्र है। हृदय चारों तरफ से पैक है। बताइए, हृदय खुला है या बंद? उसमें खून की नलिकाएँ लगी हैं, जिनके द्वारा ब्लड सर्कुलेशन होता है। उसमें छेद नहीं है। यदि छेद हो जाए तो श्वास फूलने लगेगा। वैसे ही धर्मश्रद्धा में एक छिद्र हो जाए तो वह पार पहुँचाने वाली नहीं रहेगी। वही श्रद्धा श्रेष्ठ है, जिसमें छिद्र नहीं है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

गोचरी-विवेक के तथ्य

- अर्चना काँठेड़, जावरा



1. गोचरी में चारित्रात्माओं के साथ जाने के भाव रखें।
2. साधु के निमित्त गोचरी एवं पानी का प्रबंध नहीं करें।
3. सेल की घड़ी, मोबाइल आदि से स्पर्श होने की स्थिति में गोचरी नहीं बहरावें और ना ही किसी प्रकार की भावना भावें।
4. रसोईघर में सचित्त-अचित्त पदार्थ पास में नहीं रहे, ऐसा विवेक रखें।
5. साधु-साध्वी के निमित्त जल्दी एवं ज्यादा आहार नहीं बनावें।
6. आहार बहराने के बाद यदि आहार कम लगे तो ऊनोदरी कर लें, लेकिन पुनः आहार नहीं बनावें।
7. गोचरी में आए हुए साधु से मांगलिक फरमाने का आग्रह नहीं करें। (वृद्ध एवं बीमार व्यक्ति के लिए मांगलिक का आग्रह किया जाए तो अलग बात है)
8. गोचरी घुटने के ऊपर से नहीं बहरावें। गोचरी बैठकर बहरावें।
9. गोचरी में साथ जाते हुए मोबाइल साथ में नहीं रखें।
10. गोचरी के लिए जाते समय रास्ते में उठ-बैठकर वंदना नहीं करें।
11. गोचरी उपयोग में लेते समय वंदना नहीं करें।
12. महानगरों एवं बहुमंजिला इमारतों में रहने वाले सदस्यों की सूची संघ कार्यकर्ताओं के पास होनी चाहिए, जिससे गोचरी में अनावश्यक परिश्रम से बचा जा सकता है। महानगरों में रहने वाले गृहस्थों को गोचरी के समय दरवाजा प्रायः खुला रखना चाहिए।
13. गोचरी बहराने के बाद म.सा. से यह जरूर बोलें - **‘बड़ी कृपा करी’**।
14. मुँहपत्ती लगाकर आहार बहरावें, ताकि हमारे बोलने पर आहार में थूक न गिर जाए।
15. गोचरी बहराने के लिए लाईट आदि के स्विच के हाथ न लगावें।



‘आत्मा’ शब्द ‘अत्’ धातु से निष्पन्न है। अत् सातत्य गमन अर्थक धातु है। सातत्य गमन शब्द से तीन अर्थ द्योतित होते हैं, यथा- (1) गमनगति, (2) गमन-ज्ञान और (3) गमन-प्राप्ति। अतः आत्मा शब्द की व्युत्पत्ति होगी ‘अतति सततं गच्छति’ अथवा ‘सततं ज्ञानगुणोपलब्धिं करोति इति आत्मा’ अर्थात् जो सतत गमन करती है अथवा निरंतर स्वकीय ज्ञानगुणों की उपलब्धि करती है, वह आत्मा है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

Late one night at City Hospital, Dr. Meera was finishing her shift when an alert popped up on her screen. The AI system had flagged a patient's unusual heart rate. She rushed to the room and found an elderly man struggling to breathe. The AI had correctly identified a problem, but it couldn't comfort the patient, ask about his pain, or make a quick decision based on years of experience. Meera adjusted his medication, reassured him with a gentle voice, and stayed by his side until he stabilized.

This moment showed exactly why AI is a great assistant but not a replacement for human intelligence, experience, and empathy. AI had done its part by detecting the issue, but only Meera could truly care for the patient.

AI Lacks Human Understanding and Emotion

AI can analyze huge amounts of data and find patterns faster than any human, but it doesn't truly 'understand' anything. It follows rules and logic but doesn't feel emotions or build real connections.

For example, AI chatbots are used in customer service to answer common questions. They can provide quick responses, but they often struggle with complex or emotional situations. If a frustrated customer needs special help, only a human can understand their feelings, show patience, and find the best solution.

AI Can't Think Creatively

AI can generate images, music, and even stories, but it does this by copying patterns from existing data. It doesn't create something original in the way humans do.

Take movies, for example. AI can analyze thousands of scripts and suggest what makes a good story, but it can't write a movie like a human can. A filmmaker's personal experiences, emotions, and unique ideas bring stories to life—something AI simply can't do.

संस्कार औरम

THE HUMAN TOUCH : WHAT AI CAN'T DO

- Urja Mehta, Indore

AI Can't Make Ethical Decisions

In many fields, decisions are not just about logic but also ethics and fairness. AI can analyze facts, but it doesn't have moral judgment.

For example, in a courtroom, AI might suggest a punishment based on past cases. But a judge considers many factors beyond just the law—such as the person's background, intent, and potential for change. AI lacks the ability to see the human side of a case.

AI Works Best as an Assistant, Not a Replacement

The best way to use AI is as a tool that supports humans, not one that replaces them.

- ✦ In hospitals, AI helps doctors by analyzing scans and detecting diseases early, but only doctors can decide the best treatment.
- ✦ In offices, AI automates repetitive tasks, allowing humans to focus on problem-solving and creativity.
- ✦ In customer service, AI handles basic questions, but real people handle complex issues and emotional conversations.

AI is an incredible technology that makes life easier, but it cannot replace human intelligence, creativity, emotions, and ethical reasoning. The best future is one where AI and humans work together—where AI handles repetitive tasks, and humans focus on what truly matters : thinking, feeling, and making meaningful connections.



भक्ति रस युग-युग जीओ

- कमला बाई सांड, देशनोक

युग-युग जीओ गवरा नंदन,
श्रद्धा और भक्ति से करती मैं तुम्हें वंदन।
50वें सुवर्ण दीक्षा दिवस माघ सुदी बारस,
महत्तम महोत्सव के शुभ मंगल अवसर पर,
शत-शत वंदन, अभिनंदन।।

हे पूज्य गुरुदेव आप में, अरिहंतों का ज्ञान है।
सिद्धों का ध्यान है और आचार्यों का आचरण है।
उपाध्यायों की उपासना है और साधुओं की साधना है।।
रिशियों में जो पावन-प्यारा, भाई-बहन का प्यार है,
किरमत वालों को मिलता, ऐसा अनुपम उपहार है।
आई है 9 फरवरी 2025 माघ सुदी बारस,
लाई है हम सब के लिए अनुपम बहार।।

हम सब करें गुरु रामेश पर,
श्रद्धा और समर्पणा का सच्चा प्यार।
दिवस देखो आज का, दिवस देखो आज का,
कैसा पावन मन भावन आया।।

खुशियाँ बाँट रहे हम 50वें दीक्षा सुवर्ण
महत्तम महोत्सव दिवस पर आप सब के साथ में।
गुरुवर के दीर्घायु शतायु की,
करते हम सब मंगलकामना।
आप करना निरंतर हुक्मेश संघ,
शासन की प्रभावना।।



त्रिशला नंदन वीर की

- डॉ. दिलीप धींग, बंबोरा

त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की॥
सिद्धार्थ के घर-आंगन में, चैत सुदी तेरस को जन्मे।
कुंडग्राम का कण-कण हर्षित, खुशियाँ छाई जन-जन में॥
देव-देवियाँ जश्न मनाएँ, मेरु शिखर सुनीर की।
त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की॥1॥
धन-धान्य में अतिशय वृद्धि, वर्धमान है पहला नाम।
निर्भय, निडर, अभय के साधक, महावीर को कोटि प्रणाम॥
कर्म-युद्ध के अनुपम योद्धा, आत्म-विजेता वीर की।
त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की॥2॥
तीस बरस का स्वर्णिम यौवन, भिगसर बदी दसमी का मान।
वर्धमान ने दीक्षा ले ली, करके वर्षोदान महान।
बोले सुर-नर जय हो, जय हो, महात्यागी अतिवीर की॥
त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की॥3॥
साढ़े बारह वर्ष साधना, कष्ट अपार सहे समभाव।
ज्ञान-ध्यान का सूरज मानो, चला धरा पर पाँव-पाँव॥
पापों का तम हरने वाले, परम धीर, गंभीर की।
त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की॥4॥
ऋजुबालुका का तट आया, कलकल सरिता शाम सुहानी।
सुद बैसाख तिथि दसमी को, बने सन्मति केवलज्ञानी॥
देव-दुंदुभि बोली जय-जय, तीर्थकर महावीर की।
त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की॥5॥
प्रभु पधारे मध्यम पावा, इक उजला इतिहास बना।
सुद बैसाख तिथि ग्यारस को, चार तीर्थ की स्थापना॥
समवसरण में बहने वाले, शीतल मंद समीर की।
त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की॥6॥
तीस बरस तक अमृत बरसा, लाखों प्राणी हुए अमर।
कार्तिक बदी अमावस के दिन, मोक्ष पधारे वीर प्रभुवर॥
आत्मदीप की दीवाली के, सूत्रधार महावीर की।
त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की॥7॥



एक आह्वान, एक गूँज, एक समय

माननीय प्रधानमंत्री जी
की उपस्थिति में विज्ञान भवन सहित
लगभग 108 देशों में मनाया गया

विश्व नवकार मंत्र दिवस

9 अप्रैल 2025, विज्ञान भवन, नई दिल्ली।

आज के पावन दिवस पर देश के विभिन्न क्षेत्रों सहित लगभग 108 देशों में विश्वकल्याण की पावन भावना के साथ प्रातः 08.01 से 09.36 बजे तक भव्य रूप से विश्व नवकार मंत्र दिवस पर जाप का आयोजन अपूर्व आस्था एवं उल्लास के साथ किया गया।

देश के अलग-अलग स्थानों सहित यह कार्यक्रम लगभग 108 देशों में आयोजित हुआ, जिसके अंतर्गत 1 घण्टा 35 मिनट तक नवकार मंत्र जाप हुआ। इसी क्रम में देश की राजधानी दिल्ली के विज्ञान भवन में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदरदास जी मोदी की गौरवमयी उपस्थिति एवं हजारों गुरुभक्तों की साक्षी में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री जी को नवकार महामंत्र की पैरामिड प्रति एवं विश्व नवकार मंत्र फ्रेम भेंट कर किया गया। समारोह के प्रारंभ में जीतो के चेरमेन पृथ्वीराज जी कोठारी ने अपने स्वागत भाषण में विश्व नवकार मंत्र दिवस की महत्ता एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि आज के पावन दिवस पर एक दिन, एक पल, एक साथ सम्पूर्ण हिंदुस्तान सहित विश्वभर में लाखों लोग नवकार मंत्र जाप कर धन्य हुए हैं। विश्व कल्याण एवं विश्व शांति की भावना से आयोजित यह कार्यक्रम अपने आप में एक नये इतिहास



का निर्माण करने जा रहा है।

आपके अभिभाषण पश्चात् प्रसिद्ध गायिका, थव-थुई-मंगलं की अभिप्रेरणा श्रीमती अलका जी डागा, बीकानेर एवं उनकी टीम द्वारा नवकार मंत्र का जाप सम्पूर्ण सदन को करवाया गया। कार्यक्रम में देश के गौरवशाली प्रधानमंत्री जी सहित उपस्थित सभी गुरुभक्तों ने सामूहिक जाप कर अद्भुत आध्यात्मिक शक्ति का दिव्य प्रकाश अपने अंतरमन में आर्विभूत किया। यहाँ उपस्थित प्रत्येक जनमानस के चेहरे पर प्रस्फुटित दिव्य प्रकाश इस धर्मकीर्ति का प्रतीक बन रहा था।

सामूहिक नवकार मंत्र जाप के पश्चात् माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने उद्बोधन में नवकार महामंत्र के सामूहिक जाप का विवेचन प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह अद्भुत जाप मनो-मस्तिष्क में अनवरत गूँज रहा है। इस जाप से एक जैसी चेतना, एक जैसी लय, एक जैसा प्रकाश भीतर ही भीतर प्रस्फुटित हुआ है। मैं नवकार महामंत्र की इस आध्यात्मिक शक्ति को अब भी अपने भीतर अनुभूत कर रहा हूँ। इस नवकार मंत्र में एक साथ



बोले गए शब्दों से एक साथ जागी ऊर्जा अपने आप अभूतपूर्व है। मुझे बचपन से ही अनेक जैनाचार्यों का सान्निध्य मिला, जिससे मुझे ज्ञानालोक में दिव्य प्रकाश की अनुभूति होती है। नवकार महामंत्र केवल एक मंत्र नहीं है। ये हमारी आस्था का केन्द्र है। हमारे जीवन का मूल स्वर और इसका महत्व सिर्फ आध्यात्मिक नहीं है। ये स्वयं से लेकर समाज तक सबको राह दिखाता है। इस मंत्र का प्रत्येक पद ही नहीं प्रत्येक अक्षर भी अपने आप में एक मंत्र है। जैन धर्म हमें बाहरी दुनिया नहीं खुद को जीतने की प्रेरणा देता है। जैन धर्म जीतना साइंटिफिक है, उतना ही संवेदनशील है। विश्व आज जिन समस्याओं से जूझ रहा है उन समस्याओं का हल जैन धर्म में समाहित है। आज पूरे विश्व को अनेकांतवाद के दर्शन को समझने की सबसे ज्यादा जरूरत है। आपने नवकार मंत्र में उल्लेखित पंच परमेष्ठी की विशिष्टतम तलस्पर्शी व्याख्या प्रस्तुत कर सभी को आत्मविभोर कर दिया। आपके श्रेष्ठतम विचारों को सुनकर एवं जैन धर्म व नवकार मंत्र के बारे में गहनतम ज्ञान को जानकर हर कोई अपने आपको ऐसे राष्ट्रनायक के लिए गौरवान्वित महसूस कर रहा था। माननीय प्रधानमंत्री जी ने नवनिर्मित संसद भवन के विभिन्न भागों में स्थापित जैन धर्म के विभिन्न प्रतीक चिह्नों की जानकारी देकर सभी को आत्मगौरव से परिपूरित कर दिया। अपने अभिभाषण के मध्य में आपने अनेक प्राकृत सूत्रों एवं गाथाओं का उच्चारण कर अपने विस्तृत ज्ञान के साथ-साथ यह सिद्ध कर दिया कि आप वास्तव में विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। आपने देशभर में

हुए नवकार मंत्र जाप का जिक्र करते हुए कहा कि हम सभी नवसंकल्प लेकर आगे बढ़ें -

1. **पानी बचाओ :** जल ही जीवन है, हर बूंद का महत्व समझे।
2. **एक पेड़ माँ के नाम :** माँ के आशीर्वाद जैसे हर पेड़ को सींचे, माँ के नाम एक वृक्ष जरूर लगाएं।
3. **स्वच्छता का संकल्प :** अपने घर से लेकर देश में हर जगह सफाई को प्राथमिकता दें।
4. **वोकल फॉर लोकल :** स्थानीय उत्पाद को बढ़ावा दें, 'लोकल को ग्लोबल' बनाना है।
5. **देश दर्शन :** दुनिया घूमने से पहले अपने भारत को समझो, उसकी विरासत को देखो।
6. **प्राकृतिक खेती :** प्राकृतिक खेती को अपनाओ, धरती माँ को सुरक्षित रखो।
7. **स्वस्थ जीवनशैली :** स्वस्थ जीवन के लिए सही आहार और व्यायाम अपनाएं।
8. **योग और खेल :** योग और खेल को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं, शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखें।
9. **गरीब सहायता संकल्प :** जो कमजोर है, उनका सहारा बनें। कमजोर की सेवा ही सच्चा धर्म है।

इन नवसंकल्पों से नई ऊर्जा का संचार होगा। नई पीढ़ी को नई दिशा मिलेगी और हमारे समाज में शांति, सद्भाव और करुणा बढ़ेगी। ये नवसंकल्प समष्टि की भलाई के लिए हैं। इस नवकार मंत्र के आयोजन में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूपी चतुर्विध संघ का योगदान है। सम्पूर्ण सभा ने खड़े होकर प्रधानमंत्री महोदय की बात का समर्थन किया तो मोदी जी ने इसे गुरु-भगवंतों के चरणों में समर्पित कर जैन धर्म के प्रति अद्भुत समर्पणा का दर्शन कराया। ये आयोजन हमारी एकता, अखण्डता की पहचान बना है। हमें इसी तरह देश में एकता का संदेश लेकर जाना है।

- श्रमणोपासक टीम ❤️❤️❤️

गुरुदश विहार समाचार

संयम में है शुद्धाचार,
राम गुरु की जय-जयकार।
भव्यजनों के तारणहार,
राम गुरु की जय-जयकार।।

देशाणे के भाग्य खित्ते, राम गुरु के चरण पड़े



भगवान की आज्ञा में
चलने से मोक्ष होगा
- आचार्य भगवन्
दुनिया से नहीं,
अपने आपसे जुड़ें
- उपाध्याय प्रवर

नोरखागाँव, बुधरों की ढाणी, भामटसर, रासीसर, देशनोक (जिला बीकानेर)।

एक नजर पा जाए जो भी, हो जाए कल्याण।
जिन नहीं पर जिन सरीखे हैं, मेरे गुरुवर राम।।

जन-जन के जीवन को उत्तम बनाने हेतु चिंतनशील युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, मानवता के मसीहा, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रांति प्रदाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा मारवाड़ के गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी में प्रभावी विचरण कर अध्यात्म की अलख जगा रहे हैं। विचरण के दौरान सामूहिक संवर, दया, पौषध सहित विभिन्न तप करने पर जोर दिया जा रहा है। ग्रामीणजनों एवं स्कूलों आदि में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण का क्रम जारी है।

महापुरुषों के पावन दर्शन एवं आगमसम्मत अमृतवाणी का श्रवण कर धर्मप्रेमी जैन-जैनेतर जन अपना जीवन धन्य बना रहे हैं। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का आवागमन चल रहा है। आचार्य भगवन् आदि ठाणा का नोरखागाँव के पश्चात् रासीसर, बुधरों की ढाणी होते हुए गुरु राम जन्मभूमि देशनोक में गगनभेदी जयनादों के साथ मंगल प्रवेश हुआ है। आप महापुरुषों का आगे भगवान महावीर जन्मकल्याणक पर उदयरामसर, 20 अप्रैल एवं 30 अप्रैल को दीक्षा एवं अक्षय तृतीया प्रसंग पर गंगाशहर-भीनासर तथा अभिमोक्ष्म शिविर व दीक्षा प्रसंग पर बीकानेर पधारना संभावित है।

कठोर वचन सुनना व सहना सीखें

16 मार्च 2025, समता भवन, नोरखागाँव। प्रातः रविवारीय समता शाखा में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में समता आराधना करने हेतु बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति उनकी सजगता को परिलक्षित कर रही

थी। तत्पश्चात् प्रवचन पण्डाल में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए दृढसंयम के सजग प्रहरी परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने भगवान महावीर के दिव्य वचनों से उपस्थित गुरुभक्तों को पावन करते हुए अपनी आगमसम्मत देशना में फरमाया कि “दुःख और दुर्भाग्य मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ रहे हैं, लेकिन विमलनाथ भगवान के दर्शन हो गए तो अब मेरा दुःख दूर हो गया है। कोई हमें कटु वचन बोले और यदि उन वचनों को स्वीकार करते हैं तो हम दुःखी होते हैं। लेकिन यदि हम उन वचनों को स्वीकार नहीं करते तो हम दुःखी नहीं होते हैं। प्रतिकूल वेदन करते हैं तो दुःख और अनुकूल वेदन करते हैं तो सुख होगा। साधु को पीड़ाकासी, कठोर वचन नहीं बोलने चाहिए। जो शब्द कठोर होते हुए भी सुधार करने के भाव से हों तो वे शब्द अबमोल हैं, सुभाषित वचन हैं। सुख-सुविधा में जीने वाले गर्म हवा का झोंका सहन नहीं कर पाते हैं। वैसे ही आज का मानव कठोर बात सुनना पसंद नहीं कर पाता है। दुर्योधन ने पाण्डवों के साथ अनेक प्रपंच किये, मगर पाण्डव उनसे कभी दुःखी नहीं हुए। अगर कोई व्यक्ति दुःखी होना नहीं चाहे तो दुनिया की कोई भी ताकत उसे दुःखी नहीं कर सकती। सोच को सही रखें तो वातावरण सही होगा। आज हमने भौतिक सुख-साधनों को महत्व दिया। इसी से हम कमजोर होते चले गए। इसकी जगह यदि हम धर्म का सहारा लेते तो हम कभी दुःखी नहीं होते। देवता का उपसर्ग होने के बावजूद कामदेव श्रावक अपनी धर्मप्रज्ञप्ति से पीछे नहीं हटे। ‘धर्मो रक्षति रक्षितः’ जिसने धर्म की रक्षा की उसकी धर्म से रक्षा हुई। भगवान की भक्ति से हमें कुछ नहीं मिलता है, लेकिन हम में दुःख सहने की शक्ति प्रकट होती है, सहनशीलता बढ़ती है। पहले साधु अपनी साधना के लिए चातुर्मास करते थे। श्रावकों की तपस्या भले ही कम हो, लेकिन कषाय कम ही ऐसा सबका प्रयास हो।”

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके विभिन्न चातुर्मासों की घोषणा फरमाई। सम्पूर्ण सभा हर्ष-हर्ष, जय-जय के हर्षनाद से गूँज उठी।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी तेजस्वी वाणी में फरमाया कि “गुरु निर्माण करते हैं, लेकिन निर्माण किसका? जो निर्मित होना चाहता है उसका। निर्माण उसी का हो सकता है, जो निर्माण करने योग्य साधनों को साधता है। आगमकारों ने कहा है, ‘आयावयाही च सोगमल्लं’ सुकुमारता का त्याग करो। हमने सुकुमारता को ही पुण्यवान मान लिया। गजसुकुमाल अत्यंत सुकोमल थे। भगवन् ने उनकी मनोवृत्ति को ही बदल दिया। ‘कामे कमाही कमियं खु दुक्खमं’ कष्टों में जाओ और कम्फर्ट जोन से बाहर आओ। तुम्हारा आराम देह अवस्था में नहीं बल्कि कठोरता में तुम्हारा आराम है। खुशी वहाँ मिलेगी जहाँ मन की अनुकूलता है। हम नहीं चाहते कि हमारे जीवन में कठिनाई आए। हम तो बस सुखी रहना चाहते हैं। कामनाओं से दूर हट जाओ। इच्छाओं से दूर हो जाओ। कठिनाइयों की आग में कूद जाओ। तुम्हारा दुःख कपूर की तरह उड़ जाएगा। गजसुकुमाल जीवनभर सुकुमारता में रहे, लेकिन एक रात की कठिनाई उन्हें अनंत सुख देने वाली बन गई। सुखी बनने की लिए हम अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना चाहते हैं। सुखी बनना है तो दुःखों को देखना है। क्या यह समय हमारे मन में विचलित हो रहा है। हमारी सोच यह होनी चाहिए कि हमारे मन की कोई अनुकूलता-प्रतिकूलता नहीं है।”

2026 के चातुर्मास हेतु नोखा मंडी से 200 से अधिक लोग विनती करने हेतु गुरुचरणों में उपस्थित हुए। नोखागाँव ने भी पुरजोर विनती की। वर्षीतप साधकों एवं अन्य लोगों ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये। इनरी स्पैन, चैल. अर्जेटीना ने गुरुदर्शन कर जीवन धन्य बना व्यसनमुक्ति का संकल्प लिया।

आत्मा को समय दें

17 मार्च 2025, समता भवन, नोखागाँव) प्रातःकालीन मंगल प्रार्थना में 'मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिन्धर्म महाज' की मधुर स्वरलहरी प्रस्फुटित हुई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी देशना में फरमाया कि "गुरु का कार्य अपने आप से जोड़ना है। जो समीप है, उससे जुड़ाव कम है और जो दूर है उससे ज्यादा। मन की दशा है कि दूर के डूंगर सुहावने लगते हैं। दूसरे की थाली में घी ज्यादा ही लगता है। घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध चरितार्थ होता है। ऐसे व्यक्ति सही मूल्यांकन नहीं कर सकते। चंदन के पेड़ों के पास रहने वाले लोगों को चंदन की वैल्यू नहीं है। वे लोग चंदन की लकड़ियों से चुल्हा जलाते हैं। किसी से ज्यादा परिचय हो जाता है तो उसकी अवज्ञा होती है। स्वयं की अपेक्षा दूसरे से जुड़ाव सरल है। यही हमारी भूल है। हम दुनिया से जुड़ना चाहते हैं, लेकिन अपने आप से जुड़ना वास्तविक जुड़ना है। हम स्वयं वह तत्व हैं जो हमेशा रहने वाला है। क्या चीज है जो हमेशा साथ रहेगी। हमारा चैतन्य आत्मतत्त्व हमेशा रहने वाला है। संसार की कोई वस्तु लगातार हमारे साथ रहने वाली नहीं है, सिवाय हमारे आत्मतत्त्व के। दुनिया में सबसे कीमती वस्तु समय है, जो हमेशा अपने से दूर रहने वालों को मिलता है। आत्मा पास वाली वस्तु है, बाकी सब दूर वाली वस्तुएँ हैं। आत्मा को ज्यादा समय देना है। बाकी सब को ज्यादा समय देना स्वयं के साथ धोखा है। ये अध्यात्म का सार बिंदू है। हमारा सुख अपने अंदर प्रकट होना चाहिए। बाहर की कोई अपेक्षा नहीं है। हर चीज स्वदेशी होनी चाहिए। गुरु हमें अपनी आत्मा से जोड़ने वाले हैं। आत्मा का सुख, संसार का सर्वोत्तम सुख है।"

श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि दिन में कितनी बार मन में आता है कि मुझे मोक्ष जाना है। भगवान की वाणी रास्ता बताती है व शक्ति देती है। जो ज्ञान प्राप्त किया है वो आगे भी काम आएगा। ज्ञान से हमारी आत्मा स्थिर होगी और समाधि देने वाली बनेगी।

मोह से ही कर्मबंधन होता है

18 मार्च 2025, समता भवन, नोखागाँव) विशाल धर्मसभा को भगवान महावीर के अमृतवचनों से आत्म-आह्लादित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "परमात्मा का दर्शन कितना लाभकारी होता है। इसका कोई पार नहीं है। दर्शन के साथ श्रद्धा का भाव जुड़ा हुआ होगा तभी दर्शन होंगे। गोशालक और गौतम ने भगवान को देखा, लेकिन गौतम ने श्रद्धा से देखा। कर्मबंधन कौन करता है? जो मोह से जुड़ा है वह कर्मबंध करता है। जिसने मोह को छोड़ दिया वह कर्मबंध से दूर है। जिसे आत्मा का ज्ञान नहीं वह कभी सुखी नहीं बन सकता। जिस दिन मोह छूट जाएगा। जीवन परिवर्तित हो जाएगा। आत्मा जन्म नहीं लेती, शरीर बदलता रहता है। शरीर के हर भाग में आत्मा रहती है। कर्मों का खेल बिराला है। स्वयं को ही भोगना पड़ेगा। शरीर अलग है, आत्मा अलग है। जिस दिन इस भेद विज्ञान का बोध हो गया उस दिन सुखी बन जाएँगे।" 'केसरिया मुनिवर ज्योति जगाई केवलज्ञान की' का सुंदर वर्णन आचार्य भगवन् ने फरमाया।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने 'जिया कब तक उलझेगा संसार में' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संसार में सुविधाओं का अंबार लगा है, लेकिन इनमें से कोई काम आने वाला नहीं है। सच्चा सुख संयम साधना में रहा हुआ है। संयम में समाधि नहीं है तो संयमी जीवन भी काम का नहीं है।

पाँचू संघ ने आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में क्षेत्र स्पर्शने की विनती प्रस्तुत की। बच्चों के शिविर में श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने धर्मतत्व का ज्ञान दिया। प्रातःकालीन युवा शिविर में श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने युवाओं को धर्मतत्व का बोध कराते हुए लोक-अलोक की जानकारी दी। 100 वर्षीय सुश्राविका सुंदरबाई कटारिया, मैसूर के संधारापूर्वक महाप्रयाण पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। श्रीमती सुंदरबाई, संत श्री विदेह मुनि जी म.सा. एवं साध्वी श्री पल्लव श्री जी म.सा. की संसारपक्षीय दादीजी थीं।

समभाव की दृष्टि का गुण पैदा करें

19 मार्च 2025, समता भवन, नोखागाँव प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना में 'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महात्न' गीत के संगान के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। युवा शिविर में श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने धर्मतत्व का बोध दिया।

प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी-तेजस्वी वाणी में फरमाया कि "गुरु महानता का बोध कराते हैं। आगम में वर्णित दो दृष्टिकोण देखने योग्य हैं - एक संग्रहनय व दूसरा व्यवहारनय। संग्रहनय में जब मकानों को देखते हैं तो उनमें कोई भेद नहीं दिखता अर्थात् मकान, मकान हैं। व्यवहारनय में यह फलों का मकान है और यह उनका मकान है या यह मकान कच्चा है, वह मकान पक्का है। जब जो दृष्टि उपयोगी हो वैसी दृष्टि काम आती है। तुम जिसकी हिंसा करना चाहते हो, तुम समझो कि तुम वही हो। स्वयं को दूसरे के समान समझने की दृष्टि रखनी चाहिए। जैसा वह जैसा ही मैं। जैसा मैं वैसा ही वह। सच्चे सुख का सच्चा अभिलाषी कभी अपने आपको दूसरों से ऊँचा नहीं समझेगा। हम अपने आपको दूसरों से नीचा समझते हैं इसलिए हम दुःखी हैं। तुलनात्मक दृष्टि वाला दुःखी है। ये दृष्टिकोण हटाने के लिए समभाव की दृष्टि का गुण पैदा करना चाहिए। अगर आपको सुखी बनना है तो न कोई हीन है, न कोई ऊँचा है, ऐसी सोच रखनी होगी। ऐसी सोच रखने से समानता पैदा होती है। सबकी आत्मा में किसी प्रकार का कोई फर्क नहीं है। सबका प्रकाश बराबर है, लेकिन अपने-अपने कर्मों से ढका हुआ रहता है। बादल कम व ज्यादा होते हैं, लेकिन सूर्य का प्रकाश कम नहीं है। सबके लिए समान भाव रखना आवश्यक है। दूसरों की गलती निकालने से ज्यादा दुःख होता है। अनावश्यक रूप से दूसरों की गलती की चर्चा करना या ताना कसना दुःख का कारण है। अगर हमें सुखी बनना है तो दूसरों की गलतियों को दरकिनार करो। संग्रहनय सामुदायिक दृष्टिकोण का आध्यात्मिक रूप से अपने में अभ्यास करेंगे तो समानता की सोच पैदा होगी और इससे हमारा सच्चा विकास संभव है।"

प्रतिदिन धार्मिक पुस्तक का एक पेज पढ़ने व पकड़ी प्रतिक्रमण करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। कुछ भाइयों ने अपनी दुकान में तंबाकू, गुटखा, सिगरेट नहीं बेचने का नियम लिया। शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का उज्जैन से रतलाम क्षेत्र को पावन करते हुए गुरुचरणों में पधारना हुआ।

मानवता के बिना जीवन सूना

20 मार्च 2025, समता भवन, नोखागाँव सूर्योदय के पश्चात् प्रातः मंगल प्रार्थना के माध्यम से प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। युवा शिविर में श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने धर्मतत्व का बोध दिया। तत्पश्चात् चतुर्विध संघ की गरिमाय उपस्थिति से शोभित प्रवचन सभा में श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. ने 'अगर सत्य ज्ञान को पाना है तो

सद्गुरु के समीप चले आजा गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि विभिन्न योनियों में भटकने के बाद दुर्लभ मनुष्य जनम मिला है। यदि अब भी मानवता नहीं आई तो जीवन में कुछ भी गुणोत्पन्न नहीं होंगे। मानवता तो पशुपन दूर होने से आएगी। गलत प्रवृत्ति, गलत व्यवहार छोड़ेंगे तब मानवता आएगी। तब वह सबका प्रियपात्र बन जाएगा। मानवता की श्रेणी में जाने के लिए धर्म है, सच्चाई है, ईमानदारी है और नैतिकता है। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर निरंतर सर्व समाज को मानवता, सच्चाई और नैतिकता का पाठ पढ़ा रहे हैं। आचार्य भगवन् फरमाते हैं – **‘श्रावक ऐसा चाहिए जो हो क्रियावान, यतना और विवेक का रखे प्रतिपल ध्यान’**। यतना, विवेक जीवन को ऊँचा उठाने वाले हैं। गौतम स्वामी का भी उद्धार भगवान महावीर ने उनकी शंका का समाधान करके कर किया। कोई भी शंका हमारे मन में हो तो गुरुचरणों में उसका समाधान कर लेना चाहिए। मन में शंका रहेगी तो प्रगति नहीं हो पाएगी। श्रावक को नवतत्वों एवं 25 क्रियाओं का जानकार होना चाहिए। इसके लिए स्वाध्याय प्रवृत्ति को आगे बढ़ाना होगा।

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने **‘सोने की तिजोरी में कंकड़ नहीं भरना रे’** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि महापुरुषों के सान्निध्य में धर्म की आराधना में निरंतर आगे आना चाहिए। संपूर्ण सभा ने एक स्वर में **‘जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिन्दन है’** गीत प्रस्तुत किया। जितनी उम्र है उतने नवकार मंत्र गिनने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। व्यसनमुक्ति एवं अन्य कई प्रत्याख्यान हुए।

अपने कर्मों से सुख-दुःख मिलता है

21 मार्च 2025, समता भवन, नोखागाँव भोर के शुभारंभ पश्चात् मंगलमय प्रार्थना के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। धर्मसभा में उपस्थित धर्मानुरागी गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए श्री संजय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज व्यक्ति के साथ दुविधाएँ हैं। वह सोचता है कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है। इतना धर्मध्यान किया तो भी दुःख भोगने पड़ रहे हैं। अपने-अपने कर्मों का फल सबको मिलता है। इस जनम में न मिले तो परभव में मिलता है। कोई मुझे दुःख देने वाला नहीं है। अपने कर्मों से ही सुख-दुःख मिलता है। अंजना महासती, पवन कुमार से 12 वर्ष तक दूर रही। संसार में कब क्या हो जाए कुछ पता नहीं। अंजना में अपार सहनशीलता थी। उसने सोच लिया कि यह मेरे कर्मों का ही फल है, अन्य किसी का दोष नहीं। 12 वर्ष बाद पवन कुमार अंजना से मिले। जब भी दुःख आए अंजना को याद करना। मेरे कर्म ही मुझे दुःखी करेंगे, दूसरा कोई नहीं। आजकल व्यक्ति छोटी-छोटी बातों में उलझ जाता है। ऐसे अवसरों से बचना चाहिए।

श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि ये जो मैं और मेरा है, यही दुःख देने वाला है, डुबाने वाला है। श्रावक को किसी दूसरे से तुलना नहीं करनी चाहिए। दूसरों को नहीं अपने आपको देखना है। दूसरों को देखना अशांति का कारण है। मेरेपन को दूर करने की साधना हमें करनी है। मैं से हटना ही मुक्ति है।

परम गुरुभक्त श्री धरमचंद जी बैद, बीकानेर-मुम्बई के निधन पर उनके परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। आप साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) के संसारपक्षीय भ्राता हैं। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

सुख-समाधि हमारे अंदर है

22 मार्च 2025, समता भवन, नोखागाँव मंगलमय प्रार्थना पश्चात् प्रवचन सभा में सैंकड़ों गुरुभक्तों की उपस्थिति के मध्य धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि

“गुरु भगवन् शांति का मार्ग बताते हैं। सुख-शांति का मुख्य बिंदु ‘कामे कमाहि’ कामों को त्याग करने का उपदेश फरमाते हैं। समाधि की इच्छा रखने के साथ इस दिशा में पुरुषार्थ करना होता है। समाधि की तीव्र अभिलाषा होनी चाहिए। समाधि तुम्हारे अंदर है। सुख-शांति का कारण हम स्वयं हैं। सुख-समाधि हमारी सामान्य आवश्यकता है। समाधि की ओर बढ़ना है। जिन परिस्थितियों में हम हैं उन परिस्थितियों में हम समाधिस्थ होकर रह सकते हैं। सारी आपत्तियों को अपने पर आने देना क्योंकि ऐसी कोई चीज नहीं जिसे हम समाधि भाव में ग्रहण नहीं कर सकें। जिम्मेदारी का अहसास होना चाहिए। मालिक वो बनता है जो जिम्मेदारी का अनुभव करता है। कष्ट-आपत्ति के आने पर उनके सामने टिक जाना चाहिए। कुछ लोग समस्याओं से दूर भागते हैं और कुछ लोग मजबूत रहकर सामना करते हैं। हम भाग रहे हैं या सामना कर रहे हैं, चिंतन करें। जो सामना करने के लिए तैयार होता है, उसका विकास होता है। अस्थिरता सुख-समाधि व विकास करने वाली नहीं है। अपने भीतर विश्वास हो कि किसी भी परिस्थिति में सुखी रहने में समर्थ हूँ।”

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने ज्ञाताधर्मकथा की सुंदर व्याख्या फरमाई। संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. के पंडितमरण पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

नमन से निर्वाण होता है

23 मार्च 2025, समता भवन, नोखागाँव आज रविवारीय समता शाखा के पावन अवसर पर नोखागाँव सहित आस-पास के अनेक स्थानों के गुरुभक्तों ने आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त समता आराधना कर जीवन धन्य बनाया। सभी ने अपूर्व उत्साह के साथ भाग लिया। समता शाखा पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को भगवान महावीर की अमृतवाणी का सार बताते हुए तरुण तपस्वी, प्रशांतमना परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “**परम शांति से निर्वाण प्राप्त करेंगे। शांति को पाने के लिए सही दिशा में चलना होगा। वंदना करने से नीच गोत्र का क्षय व उच्च गोत्र का बंध होता है। अहंकार के कारण नीच गोत्र का बंध होता है। अपने ज्ञान का अहंकार करने से नीच गोत्र का बंध होता है। जिन्होंने राग-द्वेष को जीत लिया, उन्हें जिन कहते हैं। नमस्कार करने से मन सरल, क्रोध शांत होता है। नमस्कार से निर्वाण होता है। दूसरों को साता पहुँचाने से सौभाग्यशाली बनेंगे। सुख देने से सुख और दुःख देने से दुःख की प्राप्ति होती है। सारे जीवों को साता पहुँचाने से तीर्थंकर नाम गोत्र का बंध होता है। अहंकारी सोचता है कि सारा सुख मुझे मिले, लेकिन अहंकार से दुर्भाग्य प्राप्त होता है। साधु बनने मात्र से कल्याण नहीं होता है, साधुता जीवन में आनी भी चाहिए। सबसे बड़ी संस्था साधु संस्था है। साधु, वेश से नहीं अपितु आचरण से होता है। उपदेश देना आसान है, कषायों को छोड़ना कठिन है। सत्यशील, संयम से सुखी बनेंगे। भगवान की आज्ञा में चलने से मोक्ष होगा। श्रावक का भी जीवन शांत-शीतल होता है।”**

श्री उज्ज्वलप्रभा जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु ज्ञान का प्रकाश देते हैं। गुरु की महिमा अपरम्पार है। हमारी डोर गुरुदेव के हाथ में है। गुरुदेव के इशारे से जो भी मिलता है वह हमारे लिए वरदान है।

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार के सभी जीवों के प्रति दया, करुणा, मैत्री भाव होना चाहिए। दया में छहकाय जीवों की रक्षा होती है। दान में श्रेष्ठ दान अभय दान है। दया में साधु-संत जैसे रहना है। दया करने से अनंत जीवों को अभय दान होता है।

आचार्य भगवन् के मुखारविंद से विजयकुमार जी सांड, देशनोक ने ग्यारह उपवास के दिन 31 उपवास के

प्रत्याख्यान ग्रहण कर जिनशासन का गौरव बढ़ाया। जयवंता-जयवंता गीत से सभा गुंजायमान हो गई। सौ से अधिक भाई-बहनों ने दया करके छहकाय जीवों को अभय दान दिया।

कषायों पर विजय प्राप्त करना जरूरी

24 मार्च 2025, गिरधारी सिंह जी बालेचा की ढाणी, बुधरों की ढाणी प्रशांतमना आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का नोखागाँव के पावन प्रवास के पश्चात् गगनभेदी जयनादों के साथ विहार कर बुधरों की ढाणी में मंगलमय पदार्पण हुआ।

दिनभर दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। व्यसनमुक्ति के प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए, जिसमें चर्चा के दौरान महापुरुषों ने कषायों पर विजय प्राप्त कर क्रोध, मान, माया और लोभ को घटाने की अद्भुत प्रेरणा दी। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

समय रहते धर्म की आराधना अवश्य करें

25 मार्च 2025, भामटसर दया एवं करुणा की साक्षात् प्रतिमूर्ति परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का सान्निध्यवर्ती संतवृंद सहित बुधरों की ढाणी से विहार कर शंकर जी सारण के निवास भामटसर में मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर दिनभर दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। परम गुरुभक्त श्री प्रकाशचंद जी बेताला, नोखामंडी के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **“मृत्यु निश्चित है। इसलिए समय रहते व्यक्ति को धर्मासधना कर लेनी चाहिए। धर्म को कल पर कभी नहीं छोड़ना चाहिए। मृत्यु कब किसकी हो जाए, इसका कोई भरोसा नहीं है।”** 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। थांदला (म.प्र.) की **मुमुक्षु बहन नव्या जी शाह** ने गुरुदर्शन कर भावी संयमी जीवन के लिए मार्गदर्शन प्राप्त किया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

आत्मा की शांति ही सच्चा सुख

26 मार्च 2025, फूसराज जी लालाणी का निवास, रासीसर प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति से ओत-प्रोत भजन गान के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-10 का भामटसर से विहार कर फूसराज जी लालाणी के निवास, रासीसर में मंगल पदार्पण हुआ। जैन-जैनेतर सभी ने महापुरुषों की अगवानी की। मंगल प्रवेश पश्चात् विहार यात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **“गुरु का जीवन और गुरु का उपदेश अपनी आत्मा को सुख का रास्ता दिखाते हैं। धर्म साधना का सही ज्ञान पैदा करना जरूरी है। वह ज्ञान कहने में सरल है, लेकिन उस पर आस्था दुष्कर है। संसार के पदार्थ सुख देने वाले नहीं हैं। कोई भी संसारी अनुकूलता कम पड़ती है या प्रतिकूल हो जाती है तो हमारे मन की समझ बन जाती है कि मैं दुःखी हूँ। किसी लड़के की शादी नहीं हो रही हो तो वह सोचता है कि मैं दुःखी हूँ। किसी को परिवार में आदर-सम्मान नहीं मिलता है तो वह सोचता है मैं दुःखी हूँ। बीमार होने पर परिवार से तिरस्कार मिलता है तो हम दुःख को महसूस करते हैं। अगर ऐसा करते हैं तो समझें कि हम अभी तक सच्चे धर्म से दूर हैं। क्या हमने धर्म का संबंध आत्मा से जोड़ा है या संसार के**

सुख से जोड़ा है अथवा ये हमारे मन की समझ है। आत्मा का ज्ञान होना जरूरी है। आत्मा का ज्ञान मन की गहराई से है। आत्मा की शांति ही सच्चा सुख है। लाखों भोग भोगने के बाद भी आज शून्य पर खड़े हैं। जो सुख पाने के लिए आज हम भाग रहे हैं वो हम पूर्व में प्राप्त कर चुके हैं। उससे कई गुना हम पहले प्राप्त कर चुके हैं। यह जीवन आत्मा के सच्चे सुख को पाने के लिए है। यह जीवन पाँच इंद्रियों को भोगने के लिए नहीं है। यह जीवन उनसे अनासक्त बनने के लिए है।”

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धर्म करने से धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। ऐसी चाह नहीं करनी चाहिए। धर्म एकमात्र आत्मकल्याण के लिए होना चाहिए। आज व्यक्ति धन प्राप्ति करने के लिए कितना झूठ-सच करता है। ऐसा धन टिकने वाला नहीं है। अनीति की कमाई कभी भी बरकत करने वाली नहीं है। धर्म बढ़ेगा तो धन भी बढ़ेगा।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के रासीसर पदार्पण से यहाँ की धरती पावन-पवित्र हो गई। स्थानीय श्रावक जी ने महापुरुषों के आगमन पर खुशी व्यक्त की। विभिन्न स्थानों से आगत श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। पाली एवं देशनोक संघ ने अहोभाव व्यक्त किये। कई भाई-बहनों ने वर्ष में 12 एकासना, 2 आयंबिल, 12 उपवास, 12 संवर करने का नियम लिया। जैन-जैनेतर सभी ने धर्म लाभ लिया।

धर्म गंगा में डुबकी लगाएं

27 मार्च 2025, फूसराज जी लालाणी का निवास, रासीसर) 'हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला' एवं 'राम गुरु गुण गाना है' गीतों के साथ प्रातःकालीन प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित ज्ञानपिपासुओं को भगवान महावीर की अमृतवाणी से पावन करते हुए व्यसनमुक्ति प्रणेता परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “शरीर कमजोर हो जाए, लेकिन आत्मा कमजोर नहीं होनी चाहिए। आत्मा ही मब की ताकत है, ता कि शरीर। सच्चा साधक शरीर से मोह नहीं रखता, उसका ममत्व खत्म हो जाता है। मरना है तो डरना क्या? मृत्यु से भय नहीं होना चाहिए। मुनि लोग मृत्यु को गले लगावे के लिए तैयार रहते हैं बचे हुए समय का उपयोग आत्मा के सुख के लिए करना चाहिए। धर्म की गंगा में डुबकी लगावी चाहिए। 'उठो नर-नारियों जागो, जगावे संत आए हैं।' हमारा प्रत्येक क्षण किस ओर जा रहा है। आत्म-चिंतन करते हुए संयम की ओर बढ़ें।”

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने 'अहो अहो मेरे भगवन् सुहाने दर्शन हो' गीत के साथ फरमाया कि सभी को अपने किये हुए कर्मों का फल भोगना पड़ता है। कोई भी मेरे कर्मों से बचा नहीं पाएगा। व्यक्ति कर्मों का कर्ता और भोक्ता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा., साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अपनी एक प्यास कच्चे पानी से नहीं बुझाने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। जय हनुमान पब्लिक सैकण्डरी स्कूल में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण का कार्यक्रम हुआ।

स्वयं अच्छा बनने की कोशिश करें

28 मार्च 2025, फूसराज जी लालाणी का निवास, रासीसर) ग्रामीण क्षेत्र में पक्षियों की मधुर कलरव के बीच प्रातःकालीन प्रार्थना में मधुर भक्ति गीतों के स्वर प्रस्फुटित हुए। प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी तेजस्वी वाणी में आगम के अमृतकण बरसाते हुए फरमाया कि

‘गुरु के वचन, गुरु की वाणी आत्मबोध कराने वाली है। तात्पर्य है सत्य को जानना। स्वयं को जानकर कदम आगे बढ़ाना स्वयं के लिए जीना है यानी अन्यो से अप्रभावित होकर जीना है। दुःख का बहुत बड़ा कारण दूसरों की नजरों में अपने आपको देखने, दूसरों की नजरों में अच्छा बनने एवं अच्छा रहने की चेष्टा करना है। दूसरे के द्वारा जो शब्द हमारे लिए कहे जा रहे हैं उनसे सुखी या दुःखी नहीं होना। तीर्थकर देवों ने साधना के विकास के लिए एक छोटा-सा सूत्र बताया है- ‘एगओ वा परिसागओ’। अकेला या लोगों के बीच में हो या समुदाय में हो, एक समान है। अहिंसा की आराधना करें। हमारी प्रवृत्ति कैसी रहती है? हमारी विचारशैली, कार्यशैली इसमें फर्क है या नहीं? हमारे मन में आत्मविश्वास की बहुत कमी है। लोग मुझे अच्छा समझे तो मैं अच्छा, नहीं तो बुरा। हम और आप इसी जोड़-तोड़ में लगे रहते हैं कि लोगों के भीतर अच्छी छवि बनाऊँ। ये विचार-भावना 100 प्रतिशत रोग है। दूसरों की दृष्टि से कैसे अप्रभावित रहें इस पर चिंतन करें। छवि को अच्छा बनाने के बजाय स्वयं को अच्छा बनाने की कोशिश करें। अकेला ऐसा कोई काम नहीं करना जो किसी के सामने नहीं कर सको। ये मन को जोड़ने का तरीका है।”

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने ‘जीवन है पानी की बूंद, कब मिट जाए रे, होनी अनहोनी, कब क्या घट जाए रे’ गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि दया, करुणा, सुखों की खान है। आपश्री ने नेम-राजुल की जीवनी पर प्रकाश डाला।

शासन दीपिका साध्वी श्री ललिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रणतप्रज्ञा जी म.सा. आदि साध्वीवृंदों का गुरुचरणों में पधारना हुआ। सुश्राविका शांता देवी बैद के संधारपूर्वक महाप्रयाण एवं सुश्रावक राजेन्द्र जी सेठिया-नोखा के निधन पर उनके परिजनो ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। दिन में 5 सामायिक करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। श्री विलेश्वर आदर्श शिक्षण संस्थान, रासीसर में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

देशाणे की माटी हो गई चंदन,
पधार गए माँ गवरा के नंदन।

शरीर की नहीं कर्मों की बीमारी ठीक करें

29 मार्च 2025, जैन जवाहर मंडल, देशनोक। साधना के शिखर पुरुष परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का रासीसर से विहार कर राम जन्मभूमि देशनोक में अपार जनमेदिनी की उपस्थिति के मध्य हो रहे गगनभेदी जयकारों ‘भले पधारो आगमज्ञाता हम सब पूछे सुख और साता’, ‘नाना गुरु ने क्या दिया राम दिया भई राम दिया’, ‘देशाणे की माटी हो गई चंदन पधार गए माँ गवरा के नंदन’ आदि के साथ जैन-जैनेतर जनों की अगवानी में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। चहुँओर खुशियों का माहौल था। चातुर्मास से पूर्व ही आराध्यदेव का पावन सान्निध्य प्राप्त कर ग्रामीण श्रद्धालुओं सहित देशभर से आगत भक्तों की आत्मा तृप्त अनुभूत हो रही थी। हर किसी के चेहरे पर एक अलग ही मुस्कान परिलक्षित हो रही थी।

मंगल प्रवेश पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए महान अध्यात्म योगी परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “जिसका मन धर्म में लगा होता है उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। तपस्या करने वाले बहुत हो सकते हैं, लेकिन पारणे में घास की एक तोक पर आए उतना कण मात्र ग्रहण कर पुनः मासखमण करता सरल नहीं है। हमने मोक्ष की आराधना में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाया

हैं। संयमी क्रिया के साथ जीवों के प्रति अहोभाव रखते हुए अहिंसा को आत्मसात करना होगा। सिर्फ अहिंसा को धारण करने से काम नहीं चलेगा। अहिंसा, संयम, तप सब साथ में होंगे तभी धर्म का महत्व है। जीना और मरना आत्मा का नहीं, शरीर का है। आत्मा शाश्वत है। वह जन्म नहीं लेती, शरीर जन्म लेता है और वो ही मरता है। आत्मा भूत, भविष्य एवं वर्तमान तीनों कालों में है। आत्मा की संख्या में कमी नहीं होती। हमें मृत्यु का भय नहीं होना चाहिए। ज्ञानी कहते हैं शरीर की बीमारी की जगह कर्मों की बीमारी को ठीक कर लो। कर्म ठीक हो जाएगा तो बीमारी आएगी ही नहीं। कर्मों के कारण हमें पीड़ा भोगनी पड़ती है। कर्म कहाँ से आए, हमने पाप किए। हिंसा, असत्य आदि कारणों से हमारे कर्म बँधे। ऐसे ही जिसने संयम स्वीकार कर लिया, अहिंसा को अपना लिया, उसे अपने कर्मों की चिंता नहीं करनी चाहिए। आंघी से धूलकण शरीर पर लग जाते हैं और उमस के कारण पसीना आने से चिपचिपाहट हो जाती है तथा वे धूलकण हमारे शरीर को काटने लगते हैं। वैसे ही कर्मों का बंधन हो जाता है तो पीड़ा हमें भोगनी पड़ती है। अगर हम कर्मबंध नहीं करेंगे तो हमें बीमारी आएगी ही नहीं। कर्म रोग हटाओ, बीमारी आएगी ही नहीं। शरीर की बीमारी हटाने के लिए विचार किया, लेकिन कर्मों की बीमारी को हटाने के लिए क्या किया? आत्मचिंतन करें।”

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने ‘जिया कब तक उलझेगा संसार के विकल्पों में’ गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जीव सब जगह सुख-शांति के लिए भटकता है, लेकिन जहाँ सच्चा आत्मिक सुख है, वहाँ से अछूता रहता है। व्यक्ति जीता वर्तमान में है, लेकिन सोचता आगे का है। वर्तमान समय का हम सत्कार्यों में सदुपयोग करें।

साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि अपने आपको जानो, पहचानाओ और खुद में जीना सीखो। साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् से यही विनती है कि बचे हुए सभी चातुर्मास देशनोक में खोलने की कृपा करें। आपश्री ने श्रावक-श्राविका को धर्म से जुड़ने, संयम मार्ग में बढ़ने के लिए आह्वान किया।

वीर बहन व वीर माता कमला बाई सांड ने ‘आज तो गुरुवर सा पधारिया म्हारे देशाणे’ गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने महापुरुषों के दिव्यगुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। एक वर्ष में बारह उपवास, बारह आर्यांबिल, बारह एकासन करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। अनेक स्थानों के श्रद्धालु भाई-बहन उपस्थित थे।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) एवं साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने ‘धन्य है जिनवाणी गुरुवर’ गीत प्रस्तुत किया। दोपहर में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा व प्रश्नोत्तर आदि हुए।

श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 का सुरपुरा से गुरुचरणों में पधारना हुआ।

सत्य की पहचान करें

30 मार्च, 2025, जैन जवाहर मंडल, देशनोक। प्रातः समता शाखा में भाई-बहनों ने बद्ध-चढ़कर भाग लिया। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने समता आराधना करवाई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “अगवान कहते हैं कि ज्ञान को प्रकट करो। ज्ञान को प्रकाशित करो। ज्ञान हमारे भीतर भरा हुआ है। बहुत सारी शक्तियाँ हमारे भीतर भरी हुई हैं, लेकिन हम उन्हें प्रकट नहीं कर पा रहे हैं। हम उन्हें प्रकट करने का प्रयास नहीं करते

हैं। जल्म से हमें बारहखड़ी, अ-आ, ए बी सी डी नहीं आती थी, लेकिन पुरुषार्थ किया तो ज्ञान सीखा। पुरुषार्थ क्यों किया? क्योंकि पैसा-रुपया कमाता था। सत्य की पहचान कठिन है। सुनार के पास जाओ तो सोने की पहचान कर सकता है। सोने की पहचान करना कठिन नहीं है। अगर कठिन होता तो सुनार भी कैसे पहचान करता! उसने पुरुषार्थ किया और पहचान हो गई। वैसे ही सत्य की पहचान करना कठिन नहीं है। बस हमें पुरुषार्थ करना होगा।

एक छोटा-सा सूत्र है। सत्य में तप रहता है, संयम रहता है। बहुत सारे गुण आ जाते हैं। एक सत्य को पकड़ लिया तो सब कुछ उसमें आ जाता है। भगवान महावीर हमारे आदर्श पुरुष रहे हैं। उन्हींके बाहर के वस्त्रों के साथ भीतर के अवगुणों को भी हटाया। भीतर की गाँठें जब खुलती है तो बाहर की गाँठें अपने आप खुल जाएँगी। हम भीतर की गाँठों को ढीला करें। जो मिला है, जितना मिला है, उसमें संतुष्ट रहें। दुखी नहीं होना चाहिए।”

श्री किशोर मुनि जी म.सा. ने ‘दरबार हजारों हैं, ऐसा दरबार कहाँ है’ गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि परिग्रह ने हमें नहीं बाँधे रखा है, हमने परिग्रह को बाँधे रखा है। इसलिए हमें परिग्रहों को अलग करना है।

साध्वी श्री लघिमा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्यदेव गुणों के भंडार हैं। उनके जीवन से हमें गुण ग्रहण करना है। वे संयम रूपी धन दे रहे हैं। इसके लिए हमें संयम में जागरूकता लानी है।

शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि ठाणा का नोखागाँव से गुरुचरणों में पधारना हुआ। सौ से भी अधिक दया, दयाभाव हुए। गाड़ी चलाते समय और भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया।

आचार्य भगवन् के दर्शन, प्रवचन का लाभ करणी माता मंदिर के अध्यक्ष बादल सिंह जी, करणी गौशाला के मंत्री कैलाशराम जी, विश्व हिंदू परिषद् के अध्यक्ष भंवर जी गिरि, आर.एस.एस. प्रमुख सुमेर सिंह जी, मास्टर नारायण सिंह जी करणी सुबोध शिक्षालय एवं डॉ. शंकर जी चारण आदि ने लिया।

दोपहर में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए। **मुमुक्षु गौरव जी नाहटा** (रोड अतरिया, छत्तीसगढ़) एवं परिजनों ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया।

शिष्य वही है जो गुरु को अपने दिल में बिठा ले

31 मार्च, 2025, शंकरलाल जी सुथार का निवास, पलाना। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-6 का राम जन्मभूमि देशनोक से शंकरलाल जी उमाराम जी सुथार (पलाना) के निवास पर जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। ग्रामीणों एवं अन्य गुरुभक्तों ने महापुरुषों की अगवानी की। दोपहर में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए महापुरुषों के संदर्भ में प्रश्नोत्तरी में सुंदर समाधान दिए।

‘संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे’ गीत प्रस्तुति ने सबको आत्मविभोर कर दिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। एक घंटा मौन रहने का प्रत्याख्यान कई लोगों ने लिया। ग्रामीण भाई-बहनों के अलावा इंदौर, देशनोक, उदयरामसर, नोखा, नोखागाँव, बीकानेर सहित पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों आदि अनेक जनों ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया।

देशनोक में श्री संजय मुनि जी म.सा. ने जैन जवाहर मंडल में ‘अहो-अहो मेरे भगवन् सुहाने दर्शन हो’

भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि शिष्य वही होता है, जो गुरु को अपने दिल में बिठा लेता है। आचार्य नानेश जब 13 माह के लिए देशनोक विराज रहे थे, तब कुछ संतों के माध्यम से श्रावकों में चर्चा का विषय बन गया कि युवाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. ने नाना गुरु को अपने वश में कर लिया है। तब युवाचार्य प्रवर जी ने अपने प्रवचन में फरमाया कि बिल्कुल सत्य है। मैंने अपने दिल में आचार्य श्री नानेश को बसाकर रखा है। वह शिष्य ही क्या, जो अपने गुरु को दिल में बसा करके नहीं रख सके।

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जन्म, जिनवाणी श्रवण, जिनवाणी पर श्रद्धा, संयम में पुरुषार्थ अत्यंत दुर्लभ है। धर्म आराधना करके जीवन को सफल बनाना है। आपश्री जी आदि ठाणा-9 का उदयरामसर की दिशा में (एफ.सी.आई. गोदाम) विहार हुआ। साध्वीवृंदों के भी विहार का क्रम जारी है। मारवाड़ रामराज के रंग में रंगा हुआ है।

-महेश नाहटा ❤️❤️❤️

तपस्या सूची

साधु-साध्वी वर्ग

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. तेले की तपस्या

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	सुनील जी विनिता जी बोथरा-दुर्गा, जतनलाल जी बोथरा-कोलकाता, विजयचंद जी मालू-दिल्ली, ईश्वरचंद जी मुणोत-जामनेर, झंवरलाल जी मंजू देवी बैद-नोखा/गुवाहाटी, ओमप्रकाश जी शर्मा, गोरधन सिंह जी राजपुरोहित, पांचीलाल जी भूरा, मदनलाल जी भूरा
उपवास	36 - प्रेरणा देवी संचेती-नोखामंडी, 20 - विजय कुमार जी सांड-देशनोक (गतिमान)
पक्की नवकारसी	आजीवन - मुन्नी बाई सांड-देशनोक
पक्की पोरसी	150 - इंद्रा देवी आंचलिया-देशनोक

श्रमणोपासक का विवरण फॉर्म नं. 4 (नियम संख्या 8)

1. प्रकाशक का स्थान : बीकानेर (राज.)
2. प्रकाशन अवधि : पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम : जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए मनोज खंडेलवाल,
नागरिकता एवं पता : भारतीय, साक्षी प्रिंटर्स, डी-24, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर-302006 (राज.)
4. प्रधान संपादक का नाम : नरेन्द्र गांधी, भारतीय,
नागरिकता एवं पता : श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर (राज.)
5. प्रकाशक का नाम : नरेन्द्र गांधी, भारतीय,
नागरिकता एवं पता : श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर (राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते : श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर (राज.)
जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड,
अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों पो. गंगाशहर, जिला बीकानेर (राज.)
मैं नरेन्द्र गांधी एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार
रूपर दिया गया विवरण सत्य है।

दिनांक 15 अप्रैल, 2025

(हस्ता.) नरेन्द्र गांधी

संक्षिप्त परिचय

- निवासी** : सोहाना, भादला, नोखा (राज.)
प्रवासी : धमतरी (छ.ग.)
जन्म तिथि : 15 जनवरी 1967
वैराग्यकाल : 2016 से
व्यावहारिक शिक्षा : डिप्लोमा इन सिविल इंजीनियरिंग
धार्मिक अध्ययन : दशवैकालिक सूत्र 1-4 व 9वाँ अध्ययन, उत्तराध्ययन सूत्र 1, 2, 9, 10 एवं 29वाँ अध्ययन, गति-आगति, लघुदंडक, जीवधडा, जैन सिद्धांत बत्तीसी तथा अन्य थोकड़े
धार्मिक शिक्षा : श्रुत आराधक का पाँच वर्षीय पाठ्यक्रम
तपाराधना : अठाई 5, नौ 2, ग्यारह 2, मासखमण व अन्य तपस्याएँ
पदयात्रा : लगभग 200 कि.मी.
संभावित दीक्षा प्रसंग : 30 अप्रैल 2025, गंगाशहर-भीनासर (राज.)

मुमुक्षु श्री लीलमचंद जी सुराना

(अध्यक्ष, श्री साधुमार्गी जैन संघ, धमतरी)



पारिवारिक परिचय

- दादाजी-दादीजी** : स्व. श्री अमरचंद जी-स्व. श्रीमती तिजिया बाई सुराना
पिताजी-माताजी : नेमीचंद जी-जनक बाई सुराना
भाई-भाभी : मनोहरलाल जी-चाँद बाई सुराना
धर्मसहायिका : रचना जी सुराना
बहन-बहनोई : पुष्पा जी-गौतम जी देशलहरा, लक्ष्मी जी-केवल जी संचेती, सरोज जी-अशोक जी कोठारी
पुत्र-पुत्रवधू : हर्षित जी-प्रगति जी, संभव जी सुराना
पुत्री-दामाद : डॉ. तृप्ति-डॉ. सुरिंदर जी (चंडीगढ़)
पौत्र : रौनक, रचित
नानाजी-नानीजी : स्व. श्री सूरजमल जी-स्व. श्रीमती चंपा देवी बेगानी (गुजरा, पाटन, छ.ग.)
ससुरजी-सासुजी : स्व. श्री लालचंद जी-स्व. श्रीमती लक्ष्मी देवी चोपड़ा (कांकेर)
सालाजी-सहलज : भवेश जी-वैशाली जी चोपड़ा, रायपुर, राकेश जी-मोनिका जी चोपड़ा (कांकेर)
परिवार से दीक्षित : संत श्री राजन मुनि जी म.सा., साध्वी श्री हेमप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा.

संक्षिप्त परिचय

निवासी	: भूंगरा (जोधपुर, राज.)
प्रवासी	: रोड अतरिया (छ.ग.)
जन्म तिथि	: 12 अक्टूबर 2008
वैराग्यकाल	: लगभग 10 माह
व्यावहारिक शिक्षा	: दसवीं
धार्मिक अध्ययन	: प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बत्तीसी, श्री दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, लघुदंडक, समिति गुप्ति, भगवती सूत्र के थोकड़े, 25 बोल
धार्मिक परीक्षाएँ	: जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-1 व 2
पदयात्रा	: लगभग 200 कि.मी.
संभावित दीक्षा प्रसंग	: 30 अप्रैल 2025, गंगाशहर-भीनासर (राज.)

पारिवारिक परिचय

परदादाजी-परदादीजी	: स्व. श्री धूरचंद जी-स्व. श्रीमती धापू देवी नाहटा
दादाजी-दादीजी	: स्व. श्री बिसनलाल जी-पोनी बाई नाहटा
पिताजी-माताजी	: स्व. श्री दिलीप जी-प्रमिला बाई नाहटा
बड़ेपिताजी-बड़ीमाताजी	: भंवरलाल जी-राधा बाई, घेवरचंद जी-स्व. श्रीमती कमला बाई, केवलचंद जी-स्व. श्रीमती गंगा बाई, कंवरलाल जी-पुष्पा बाई, स्व. श्री माणक जी-पेपी बाई, झुमरलाल जी-शोभा बाई, हमीरमल जी-नगीना बाई, रामलाल जी-उर्मिला बाई, राजेंद्र जी-भनुपा बाई, पारसमल जी-ममता बाई, गौतमचंद जी-निर्मला बाई नाहटा
चाचाजी-चाचीजी	: नारायणमल जी-सुवा बाई, हेमराज जी-हीरो बाई, रमेशचंद जी-चंद्रिका बाई, प्रकाशचंद जी-राजो बाई, रावलचंद जी-करिश्मा बाई नाहटा
भाई-भाभी	: नवीन जी-पूजा बाई, ललित जी-संजू बाई, संतोष कुमार जी-प्रीति बाई, नितेश जी-पायल बाई, मिथलेश जी-पूर्वी बाई, यतीश, विजय, महेश, महावीर, रोहित, श्रेयांश, मनीष, रेबचंद नाहटा
बहन-बहनोई	: ऊषा जी-संतोष जी चौरड़िया, कविता जी-रावल जी पारख, लक्ष्मी जी-राहुल जी कंवाड़
भुआजी-फूफाजी	: सुशीला बाई-इंदरचंद जी कोचर, चमेली बाई-स्व. श्री संतोषचंद जी बैद
भतीजा-भतीजी	: रौनक, हर्षिता, रिद्धि, भव्य, तक्ष, भवय
भांजा-भांजी	: अभिषेक, आस्था, यश, भुन्नू, भैविक
नानाजी-नानीजी	: स्व. श्री मनोहरणलाल जी-रामबती बाई
मामाजी-मामीजी	: प्रकाशचंद जी-सुनीता बाई
मौसीजी-मौसाजी	: स्व. श्रीमती निर्मला बाई-द्वारकाचंद जी, ममता बाई-कृष्णलाल जी, दीपिका जी-स्व. श्री संजय जी
परिवार से दीक्षित	: साध्वी श्री रामकेतु श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बहन)

मुमुक्षु श्री गौरव जी नाहटा



संक्षिप्त परिचय

- निवासी** : गंगाशहर (बीकानेर, राज.)
- जन्म तिथि** : 24 जनवरी 1998
- व्यावहारिक शिक्षा** : बी.कॉम.
- धार्मिक अध्ययन** : श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र, श्री सुखविपाक सूत्र, श्री नंदी सूत्र - मनःपर्यवज्ञान तक, तत्त्व का ताला भाग-1 के थोकड़े, श्रीमद् भगवती सूत्र एवं प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े, कर्म प्रज्ञप्ति प्रवेश ग्रंथ (1-10 अध्ययन), संस्कृत प्रथम दीक्षा
- धार्मिक शिक्षा** : आरुग्गबोहिलाभं
- धार्मिक परीक्षाएँ** : जैन सिद्धांत भूषण कोविद, विभाकर, मनीषी भाग-1, 2, वैकल्पिक आगम कंठस्थ- भूषण, कोविद, कर्म प्रज्ञप्ति (न्यू)
- संभावित दीक्षा प्रसंग** : 30 अप्रैल 2025, गंगाशहर-भीनासर (राज.)

मुमुक्षु सुश्री प्रियंका जी सेठिया



पारिवारिक परिचय

- पड़दादाजी-पड़दादीजी** : स्व. श्री रूपचंद जी-स्व. श्रीमती राजा देवी सेठिया
- दादाजी-दादीजी** : स्व. श्री मोतीलाल जी-श्रीमती किरण देवी सेठिया
- पिताजी-माताजी** : दीपचंद जी-बसंती देवी सेठिया
- बड़े पिताजी-बड़ी माताजी** : संपतलाल जी-मंजू देवी सेठिया
- भाई-भाभी** : विनोद जी-कविता जी, जितेंद्र जी-स्व. श्रीमती विनिता जी, गौतम जी-भारती जी, गणधर जी-अंजलि जी, राजेंद्र जी-आँचल जी, ललित जी-करिश्मा जी, महेश जी-दीक्षा जी सेठिया
- बहन-बहनोई** : जया जी-अमित जी गोलछा, राधा जी-राकेश जी राखेचा, कनक जी-दिनेश जी दफ्तरी, साधना जी-राहुल जी बोथरा
- भुआजी-फूफाजी** : सुंदर देवी-विजयचंद जी बोथरा, इंद्रा देवी-तिलोकचंद जी महनोत
- नानाजी-नानीजी** : स्व. श्री अनोपचंद जी-श्रीमती कमला देवी कातेला
- मामाजी-मामीजी** : माणकचंद जी-सुनीता देवी, मोतीलाल जी-सुमन देवी कातेला
- मौसीजी-मौसाजी** : चंदा देवी-स्व. श्री रतनलाल जी सिपाणी, लीला देवी-अशोक कुमार जी सिपाणी, वीणा देवी-शुभकरण जी हीरावत, अनिता जी-अमित कुमार जी सेठिया
- परिवार से दीक्षित** : श्री मयंक मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय भाई - साधुमार्गी संप्रदाय), साध्वी श्री जड़ाव कँवर जी म.सा. (अन्य संप्रदाय), साध्वी श्री अस्मिता श्री जी म.सा. (अन्य संप्रदाय), साध्वी श्री जयामि श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बहन - साधुमार्गी संप्रदाय)

संक्षिप्त परिचय

निवासी	: गंगाशहर (बीकानेर, राज.)
प्रवासी	: हावड़ा (प.बं.)
जन्म तिथि	: 17 दिसंबर 2000
वैराग्यकाल	: लगभग 2 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	: बी.बी.ए.
धार्मिक अध्ययन	: पुच्छिसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, भक्तामर स्तोत्रम्, जैन सिद्धांत बत्तीसी, अष्ट प्रवचन माता, 67 बोल, लघुदंडक, गति-आगति, जीवधड़ा, 102 बोल का बासठिया, कर्म प्रज्ञप्ति प्रवेश ग्रंथ एवं अन्य थोकड़े
धार्मिक शिक्षा	: आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षाएँ	: जैन सिद्धांत भूषण
तपाराधना	: तेला, अठार्ई
संभावित दीक्षा प्रसंग	: 30 अप्रैल 2025, गंगाशहर-भीनासर (राज.)

मुमुक्षु सुश्री मुस्कान जी सेठिया



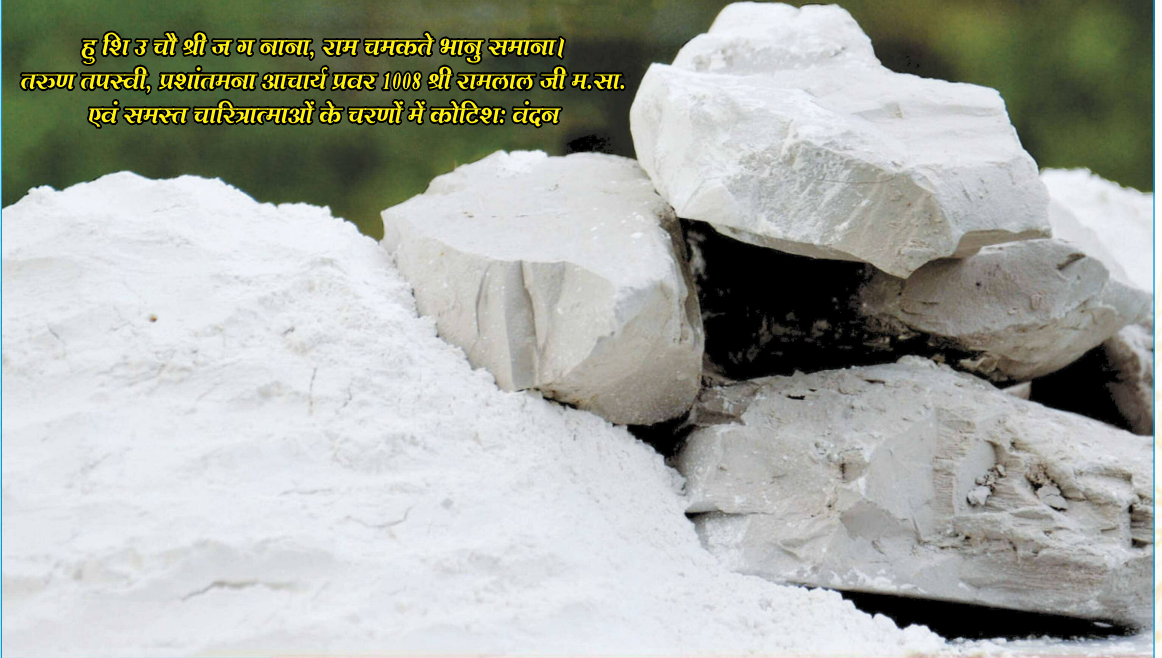
पारिवारिक परिचय

पड़दादाजी-पड़दादीजी	: स्व. श्री हुलासचंद जी-स्व. श्रीमती बरजी देवी सेठिया
दादाजी-दादीजी	: रूपचंद जी-इंद्रमणि जी सेठिया
पिताजी-माताजी	: विजयचंद जी-नीता जी सेठिया
बड़े पिताजी-बड़ी माताजी	: जसकरण जी-सरिता जी सेठिया
चाचाजी-चाचीजी	: स्व. श्री नवरतन जी, निर्मल जी-जयंती जी, अरिहंत जी-दिव्या जी सेठिया
भाई-भाभी	: शुभम् जी-प्रेक्षा जी छल्लाणी, मुदित, रोमित, गौरव, निशांत, गर्वित, सम्यक्, रौनक, गौरव, वंश, हर्ष
बहनें	: प्रिया, नेहा, चेतना, मानसी (जिया), सिद्धि, दिव्यांशी, कृतिका
भुआजी-फूफाजी	: ज्ञाना देवी-सज्जन जी छल्लाणी, जयश्री जी-राकेश जी बरडिया
नानाजी-नानीजी	: निर्मल कुमार जी-मंजू देवी संचेती (देशनोक)
मामाजी-मामीजी	: पंकज जी-सपना जी, पवन जी-प्रमिला जी (परी) संचेती
मौसीजी-मौसाजी	: निशा जी-राकेश जी गोलछा
परिवार से दीक्षित	: स्मृतिशेष श्री हुलास मुनि जी म.सा. (बापूजी म.सा.), स्मृतिशेष श्री राजेंद्र मुनि जी म.सा., श्री हृषिकेश मुनि जी म.सा., श्री संजय मुनि जी म.सा., साध्वी श्री सुविधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुचारू श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुविराज श्री जी म.सा., साध्वी श्री भवपार श्री जी म.सा.



Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग बाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कौटिशः वंदन



A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

PRESENTING
SIPANI CITY

A 70 ACRE TOWNSHIP -
MADAPPANAHALLI VILLAGE,
ANEKAL TALUK, BENGALURU.

**YOUR DREAM HOME,
A NEW LIFE FOR MANY.**

90% OF PROFIT GOES TO CHARITY.



दुःखि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकवते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी स. सा.
एवं समस्त चारित्र्यात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदना!

70 ACRES OF EVERYTHING YOU NEED - HOMES, HEALTHCARE, EDUCATION & MORE!

- 1** CLUSTER - 1
HIGH RISE APARTMENT
Land area -10 acres 31 guntas
- 2** CLUSTER - 2
HIGH RISE APARTMENT
Land area 14 acres 30 guntas
- 3** CLUSTER - 3
HIGH RISE APARTMENT
Land area 5 acres 10 guntas
- 4** CLUSTER - 4
HIGH RISE APARTMENT
Land area 10 acres 12.2 guntas
- 5** CLUSTER - 5
HIGH RISE APARTMENT
Land area 16 acres 14.37 guntas
- 6** 06 - EWS HOUSING
Land area 2 acres 4.77 guntas
- 7** COMMERCIAL / OFFICE
Land area 6 acres 47.63 guntas
- 8** SCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 4, 5 & 6
Land area 1 acres 21.20 guntas
- 9** PLAY SCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 1
Land area 0.54 acres 21.55 guntas
- 10** HOSPITAL - IN CA SITE OF LAND CLUSTERS 2 & 3
Land area 1 acres

"An Ode of Humanity..."

Sipani City - A Township Promoted by Sipani Properties

15-16 अप्रैल 2025



SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS



WWW.SIPANIMARBLES.COM

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में 1,000/- (15 वर्ष के लिए)

विदेश हेतु 15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक 50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता 500/-

आजीवन सदस्यता 5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से

कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : accounts@sadhumargi.com



व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	} news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	} examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: pathshala@sadhumargi.com
शिबिर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	: 9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	: 7231933008	
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)	: 8535858853	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर
YOUR TRUST

जय गुरु राम



RAKSHA

PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND



FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED
CO-MOULDED DURO RING SEAL

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



RAKSHA FLO

P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond
Dureflex

Diamond
DUROLON



Now with new
M.R.O.
Technology
Resists high impact



IS 15778 : 2007

CM/L NO: 2526149



LUCALOR
FRANCE

www.shandgroup.com

रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24,650

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

सगता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

@absjainsangh



www.facebook.com/HOSadhumargi

